

NOT FOR SALE
दिसम्बर 2006

लूर्य विज्ञान सिद्धि विशेषांक

मूल्य : 18/-

सत्र-तंत्र-संक

विज्ञान



बनाहये बुद्धिमान् अपने बालक को
विशेष तंत्र साधना: गुप्त नवरात्रि में

उर्वशीं सिद्ध होती है वंशत मैं
सिद्ध कीजिए क्रम-अनंग-रति

बड़ी बाधाओं का निवारण: लघु साकर प्रयोग।

A Monthly Journal





COLLECTION OF VARIOUS

- HINDUISM SCRIPTURES
- HINDU COMICS
- AYURVEDA
- MAGZINES

FIND ALL AT [HTTPS://DSC.GG/DHARMA](https://dsc.gg/dharma)

Made with



By

Avinash/Shashi

[creator of
hinduism
server]

साधकों के विशेष आग्रह पर नववर्ष उपहार



शिव-गुरु मंत्रों की प्राणदृचेता से युक्त

विजयप्रलाशी वशीकरण संयुक्ता

मणिमाला

जिसे पूजन कर धारण करने मात्र से ही जीवन में अनुकूलता प्राप्त हो जाती है

माला का महत्व प्रत्येक प्रकार के मंत्र जप में विशेष है, साधक के लिए यह प्राणों के समान प्रिय वस्तु है। माला जप के समय मन को नियंत्रण में रखते हुए शक्ति को एक ही दिशा में प्रवाहित करती रहती है और एक ही दिशा में प्रवाह होने से जप अनुष्ठान के कार्य में सफलता मिलती है। बिना माला मंत्रानुष्ठान करना उसी प्रकार है जैसे आत्मा के बिना देह, माला के अभाव में जप प्राणहीन है, इसीलिए हर अनुष्ठान में अलग-अलग प्रकार की माला का विधान आवश्यक रहता है।

मणिमाला का तात्पर्य है, जो मणि स्वरूप में पिरोई गई हो, जिसमें सभी स्वर-वर्ण स्वरूप में गुणे हुए हों, मणिमाला में मूलाधार से आज्ञा चक्र पर्यन्त सूत्र स्वरूप में विद्यमान हैं, इसीलिए मणि माला द्वारा किया गया किसी भी मंत्र का जप निष्फल नहीं जा सकता।

विजयप्रद वशीकरण माला

माला के 108 मनके केवल मनके नहीं हैं, इसमें स्वर क्रम के सभी वर्ण विद्यमान हैं और विजयप्रद वशीकरण माला घोड़श संस्कार युक्त हिरण्यगर्भ मंत्रों से सिद्ध होने के कारण अपने नाम के अनुरूप ही साधक को फल प्रदान करती है। इस विशिष्ट माला के पूजन का, धारण करने का विशेष विधान है जिसे भली-भाँति समझ कर करना चाहिए।

पूजा-विधान

रविवार के दिन प्रातः शुभ मुहूर्त में मणिमाला को अपने पूजा स्थान में पीपल के नौ पत्ते ला कर, अष्टदल कमल की भाँति आठ पत्तों को रखें, नौवां पत्ता बीच में रखें तथा उस पर माला स्थापित करें। स्थापित करने से पहले माला का “सद्योजात” मंत्र का उच्चारण कर शुद्ध जल से धो दें-

ॐ सद्योजातं प्रपद्यामि सद्योजाताय वै नमो नमः। भवे भवे नाति भवे भवस्य मां भवोद्भवाय नमः॥

इसके पश्चात् “वामदेव मंत्र” का उच्चारण कर मणिमाला पर चन्दन, अगर, गन्ध, पुष्प, इत्यादि चढ़ायें -

ॐ वामदेवाय नमो ज्येष्ठाय नमः। श्रेष्ठाय नमो लदाय नमः। कात्याय नमः। कलविकरणाय नमो बलविकरणाय नमः। बलाय नमो बलप्रमथनाय नमः। सर्वभूतदमन्त्राय नमो मनोन्मन्त्राय नमः॥

इस समय जिस कार्य की विशेष इच्छा हो, उसका स्मरण करना चाहिए। अब अधोर मंत्र का उच्चारण करते हुए एक ओर धी का दीपक तथा दूसरी ओर अगरबत्तियां जलायें।

आनो भ्रदा: क्रतवो यन्तु विश्वतः
मानव जीवन की सर्वतोन्मुखी उत्तमि, प्रगति और भारतीय गूढ़ विद्याओं से समन्वित मासिक पत्रिका

श्रीकृष्णकाश

॥ॐ पवम तत्वाय नावायणाय गुकभ्यो नमः ॥



मेरे शिष्य



क्षम तुम्हें लक्ष्या दहीं हैं

सदगुरुसदेव

सदगुरु प्रवचन	5
लागा मन मोरा	
सदगुरु में	17
स्तम्भ	
शिष्य धर्म	43
गुरुवाणी	44
नक्षत्रों की वाणी	56
मैं समय हूँ	58
वाराहमिहिर	59
इस मास दिल्ली में	80
एक दृष्टि में	84

वर्ष 26 अंक 12
दिसम्बर 2006 पृष्ठ 88



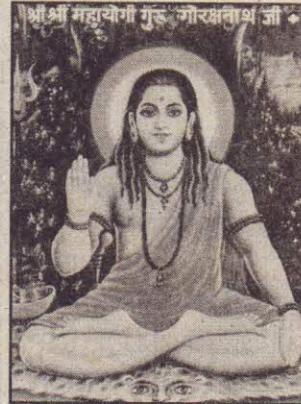
साधना

तांत्रोक्त प्राणतोषिणी	
अनुष्ठान साधना	31
सूर्य साधना	40
चाक्षुष्मती साधना	41
कामदेव रति तंत्र प्रयोग	62
उर्वशी साधना	64
सिद्ध कीजीए सरस्वती	70
सरस्वती साधना	
बालकों के लिये	72
विशिष्ट तांत्रिक साबर	
साधनाएं	73
Paarad Laxmi	
Sadhana	82
Indra Veibhav	
Sadhana	83



दीक्षा

नवसिद्धि आत्म जागरण	
महाभिषेक दीक्षा	23



विशेष

सूर्य हमारे प्रत्यक्ष देव	37
त्राटक	46
महाशिवरात्रि पूजन	49
आला रे आला रे	
बंसत मास	51
काम-रति-संवेग	60
ज्ञान ही सरस्वती है	67



प्रेरक संस्थापक

डॉ. नारायणदत्त श्रीमाली
(परमहंस स्वामी निखिलेश्वरानंद जी)

प्रधान सम्पादक

श्री नन्द किशोर श्रीमाली

कार्यवाहक सम्पादक

श्री कैलाशनन्द श्रीमाली

संयोजक व्यवस्थापक

श्री अरविन्द श्रीमाली



प्रकाशक एवं स्वामित्व
मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान

द्वारा

सुदर्शन प्रिन्टर्स

487/505, पीरागढ़ी,
रोहतक रोड़, नई दिल्ली-87

से मुक्ति तथा
मंत्र तंत्र यंत्र विज्ञान हाईकोर्ट
कॉलोनी जोधपुर से प्रकाशित

मूल्य (भारत में)

एक प्रति: 18/-
वार्षिक: 195/-

सिद्धाश्रम, 306 कोहाट एन्डलेव, पीतमपुरा, दिल्ली-110034, फोन: 011-27352248, टेली फैक्स: 011-27356700
मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान, डॉ. श्रीमाली मार्ग, हाईकोर्ट कॉलोनी, जोधपुर - 342001 (राज.) फोन: 0291-2432209, टेली फैक्स: 0291-2432010
WWW address - <http://www.siddhashram.org> E-mail add. - mtyv@siddhashram.org

नियम

पत्रिका में प्रकाशित सभी रचनाओं का अधिकार पत्रिका का है। इस 'मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान' पत्रिका में प्रकाशित लेखों से सम्पादक का सहमत होना अनिवार्य नहीं है। तर्क-कुतर्क करने वाले पाठक पत्रिका में प्रकाशित पूरी सामग्री को गल्प समझें। किसी नाम, स्थान या घटना का किसी से कोई सम्बन्ध नहीं है, यदि कोई घटना, नाम या तथ्य मिल जाय, तो उसे संयोग समझें। पत्रिका के लेखक धुमकेड़ साधु-संत होते हैं, अतः उनके पते के बारे में कुछ भी अन्य जानकारी देना सम्भव नहीं होगा। पत्रिका में प्रकाशित किसी भी लेख या सामग्री के बारे में वाद-विवाद या तर्क मान्य नहीं होगा और न ही इसके लिए लेखक, प्रकाशक, मुद्रक या सम्पादक जिम्मेवार होंगे। किसी भी सम्पादक को किसी भी प्रकार का परिश्रमिक नहीं दिया जाता। किसी भी प्रकार के वाद-विवाद में जोधपुर न्यायालय ही मान्य होगा। पत्रिका में प्रकाशित किसी भी सामग्री को साधक या पाठक कहीं से भी प्राप्त कर सकते हैं। पत्रिका कार्यालय से मंगवाने पर हम अपनी तरफ से प्रामाणिक और सही सामग्री अथवा यंत्र भेजते हैं, पर फिर भी उसके बाद मैं असली या नकली के बारे में अथवा प्रभाव होने या न होने के बारे में हमारी जिम्मेवारी नहीं होगी। पाठक अपने विश्वास पर ही ऐसी सामग्री पत्रिका कार्यालय से मंगवायें। सामग्री के मूल्य पर तर्क या वाद-विवाद मान्य नहीं होगा। पत्रिका का वार्षिक शुल्क वर्तमान में 195/- है, पर यदि किसी विशेष एवं अपरिहार्य कारणों से पत्रिका को ट्रैमासिक या बंद करना पड़े, तो जितने भी अंक आपको प्राप्त हो चुके हैं, उसी में वार्षिक सदस्यता अथवा दो वर्ष, तीन वर्ष या फंचर्वर्षीय सदस्यता को पूर्ण समझें, इसमें किसी भी प्रकार की आपत्ति या आलोचना किसी भी रूप में स्वीकार नहीं होगी। पत्रिका में प्रकाशित किसी भी साधना में सफलता-असफलता, हानि-लाभ की जिम्मेवारी साधक की स्वयं की होगी तथा साधक कोई भी ऐसी उपासना, जप या मंत्र प्रयोग न करें, जो नैतिक, सामाजिक एवं कानूनी नियमों के विपरीत हो। पत्रिका में प्रकाशित लेखों के लेखक योगी या संन्यासी लेखकों के विचार मात्र होते हैं उन पर भाषा का आवरण पत्रिका के कर्मचारियों की तरफ से होता है। पाठकों की मांग पर इस अंक में पत्रिका के पिछले लेखों का भी ज्यों का त्यों समावेश किया गया है, जिससे कि नवीन पाठक लाभ उठा सकें। साधक या लेखक अपने प्रामाणिक अनुभवों के आधार पर जो मंत्र, तंत्र या यंत्र (भले ही वे शास्त्रीय व्याख्या के इतर हों) बताते हैं, वे ही दे देते हैं, अतः इस सम्बन्ध में आलोचना करना व्यर्थ है। आवरण पृष्ठ पर या अन्दर जो भी फोटो प्रकाशित होते हैं, इस सम्बन्ध में सारी जिम्मेवारी फोटो भेजने वाले फोटोग्राफर अथवा आर्टिस्ट की होगी। दीक्षा प्राप्त करने का तात्पर्य यह नहीं है, कि साधक उससे सम्बन्धित लाभ तुरन्त प्राप्त कर सकें, यह तो धीमी और सतत प्रक्रिया है, अतः पूर्ण श्रद्धा और विश्वास के साथ ही दीक्षा प्राप्त करें। इस सम्बन्ध में किसी प्रकार की कोई भी आपत्ति या आलोचना स्वीकार्य नहीं होगी। गुरुदेव या पत्रिका परिवार इस सम्बन्ध में किसी भी प्रकार की जिम्मेवारी वहन नहीं करेंगे।

★ प्रार्थना ★

उँ स्वस्ति उत पित्रे नो अस्तु स्वस्ति गोभ्यो जगते पुरुषेभ्यः।
विश्वं सुभूतं सुविद्रं नो अस्तु ज्योगेव दशेम सूर्यम्॥

उँ अस्तरो मा सद गमय।
तमसो मा ज्योतिर्गमय। मृत्योर्मार्त्तमृतंगमय॥

हमारे माता, पिता, गौओं, जगत् के अन्य सब प्राणी और पुरुषों का कल्याण हो। हमारे लिये सब वस्तुएं और सुगमता से प्राप्त होने योग्य हों। हम दीर्घकाल तक सर्वप्रकाश सूर्य भगवान् का दर्शन करते रहें। हे भगवन्! आप असत् से सत् की ओर और तम से ज्योति की ओर तथा मृत्यु से अमरता की ओर ल चलें।

★ कीर्ति यस्य स जीवतिः ★

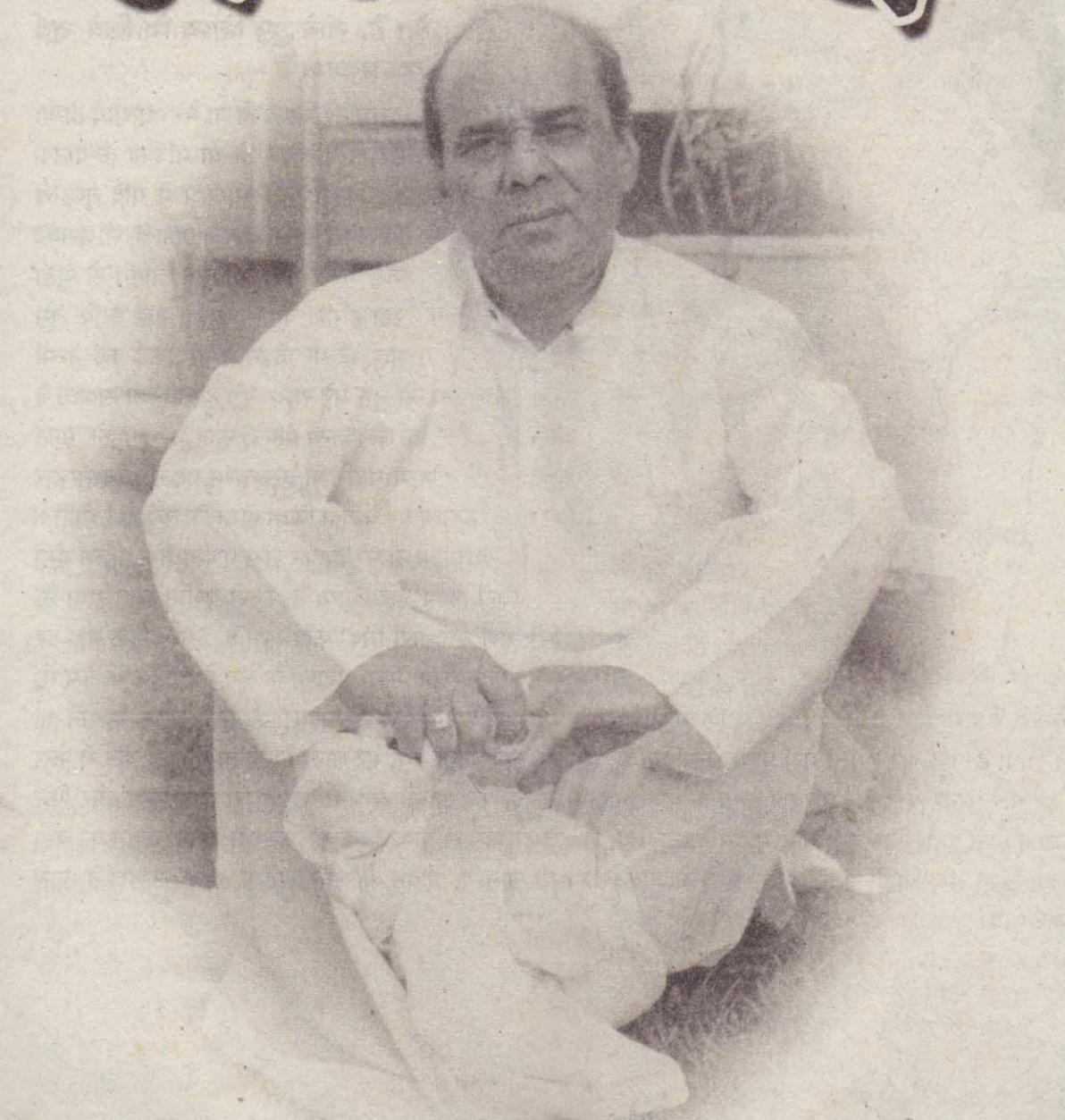
फारस के एक बादशाह ने अपने देश के एक विद्रान से निवेदन किया कि मनुष्य जाति का इतिहास लिखकर लाये। विद्रान ने कई वर्षों के परिश्रम से इतिहास के हजारों पृष्ठ लिखे और उनकी जिल्दें बंधवा कर ऊंट गाड़ी में लादकर बादशाह के पास ले गया। बादशाह ने जब यह अङ्गार देखा तो बोला: इतना बड़ा ग्रंथ पढ़ने की फुरसत नहीं मिलेगी, इसे छोटा करके लाओ। विद्रान ने बहुत-सा मसाला काट दिया और बाकी जिल्दें ऊंट पर लाद कर ले गया। बादशाह ने कहा: मुझे इसे भी पढ़ने की फुरसत नहीं। तब विद्रान ने और काट-छांट की और जिल्दें गधे पर लादकर ले गया। बादशाह ने कहा: अब मेरी जिन्दगी के थोड़े ही दिन रह गये हैं, सो इन्हें भी नहीं पढ़ सकूँगा। और कम करके लाओ। विद्रान ने तब सारा इतिहास एक जिल्द में भर दिया और बादशाह के पास ले गया। उस समय बादशाह मृत्युशय्या पर पड़ा था। उसने कहा: मैं तो कुछ ही दिनों का मेहमान हूँ। तुम तो मुझे बहुत संक्षेप में मनुष्य जाति का इतिहास बता दो, ताकि मेरी साध पूरी हो जाये। यह सुनकर विद्रान ने कहा: मैं एक वाक्य में मनुष्य जाति का सारा इतिहास बयान कर देता हूँ। उन्होंने जन्म लिया, जीवन बिताया, आनंद भोगे, मुसीबतें झेली और दुनिया से कूच किया।

वास्तव में संसार में अधिकतर साधारण लोगों के जीवन की यही कहानी है। जन्म से मृत्यु तक आमतौर पर सबका जीवन एक ही ढरें पर चलता है, उसमें कोई विशेषता नहीं होती।

ऐसे बहुत कम लोग होते हैं जो साधारण चर्चा से उपर उठकर महान कर्य करते हैं और अपना नाम छोड़ जाते हैं। **कीर्ति: यस्य स जीवतिः।** जीने को तो पशु-पक्षी तथा अन्य सारे प्राणी भी जीते हैं। यदि मनुष्य भी उसी तरह व्यवहार करे तो उसमें और अन्य प्राणियों में कोई भेद नहीं रहता।

मनुष्य को केवल जिन्दा रहने के लिए नहीं जीना चाहिए, बल्कि अपने जीवन को किसी न किसी रूप में सार्थक बनाना चाहिए। इस लोक में समानता का प्रयास करना चाहिए और साथ में आध्यात्मिक उन्नति भी करनी चाहिए।

ਮੈਂ ਸਿੰਘ



ਅਥ ਤੁਸੇਂ ਲੁਕਾ ਕਹੀਂ ਹੋ



सद्गुरु अपने आत्माशं शिष्य को ज्ञान प्रदान करते हैं,
वे उसे ललकारते हैं, समाज की सड़ी गली मान्याताओं
को तोड़ने हेतु शक्ति प्रदान करते हैं, इस ललकार
में शिष्य को अपने समान बना लेने की इच्छा
ही निहित होती है, सद्गुरुदेव का यह
महान् प्रवचन बार-बार विचार मंथन
हेतु है, सोये हुए शिष्य के लिये सूर्य
का प्रकाश है -

तुम मेरे शिष्य हो या मेरे आत्मीय हो या
मेरे से परिचित हो या पत्रिका के पाठक
हो, किसी न किसी रूप में यदि तुम्हारा
और मेरा सम्बन्ध बना हुआ है, तो इसकी
जड़ें जरूर पिछले किसी जीवन से जुड़ी
रही होंगी। यह संभव ही नहीं है कि तुम
मुझसे इसी जीवन में जुड़े, कई-कई जन्मों
से तुम मेरे साथ जुड़े हुए हो, हो सकता है
कि तीन जन्म पहले, पांच जन्म पहले, आठ
जन्म पहले या दस जन्म पहले। मैंने तुम्हारे
साथ यह वायदा किया होगा कि तुम्हें इन भौतिक
बाधाओं से परे हटकर उस पूर्णता तक पहुंचा दूंगा

जिसे 'ब्रह्म' कहा गया है, जिसे पूर्णता कहा गया है,
जिसे 'पूर्ण मदः पूर्ण मिदं' कहा गया है, और इसके बाद हर

तुम मुझसे कहीं न कहीं मिले - शिष्य के रूप में, पाठक के रूप में,
किसी भी अन्य रूप में। हर बार मैंने तुम्हें समझाया है, पूर्णता तक पहुंचाने का
प्रयत्न किया है। हर बार तुम ने मेरा हाथ छोड़ दिया है, हर बार तुम भटक गये, हर बार भौतिकता के दल-दल में फंस
गये। हर बार पर्ना, पुत्र और परिवार-जनों के वाक् जाल में उलझ कर अपनी साधना को अधूरा छोड़ दिया और फिर
तुम्हें जन्म लेना पड़ा, फिर तुम्हें मल-मूत्र में पड़ना पड़ा, फिर तुम उसमें से बाहर निकले, फिर तुम अपने जीवन को बड़ा
करते हुए। उन्हीं समस्याओं से घिर गये, और जो जीवन का हंसी आनन्द, जीवन का जो सही प्रेम, स्नेह, ऊँचाई है, प्राप्त
नहीं कर पाये।

इसका कारण है हर बार तुम्हारा इस प्रकार की भौतिक समस्याओं से उलझा हुआ रहना, पर इससे तुम्हें मिला क्या? इस जीवन में ही तुम देख लो कि तुम्हें क्या मिल गया है?

थोड़े से कागजी नोट, थोड़े से परिवार के बंधन और इसके साथ ही साथ मिली तुम्हें तनाव, परेशानियां, बाधाएं, अड़चनें, कठिनाईयां, असंतोष, जीवन की अपूर्णता। क्या यह सब कुछ सही है? क्या जीवन इतना घटिया तथा मामूली सा है कि इन छोटी चीजों के बदले जीवन को बरबाद कर दिया जाय? तुम एक प्रकार से इन तुच्छ कागजी नोटों के बदले अपने जीवन को बरबाद ही कर रहे हो, सही अर्थों में कहना चाहूं तो तुम्हारा जीवन खरे सोने के सिक्के की तरह है और तुम इसे रांगे के भाव, लोहे के भाव बेच रहे हो, बरबाद कर रहे हो। ऐसा कब तक चलेगा? ऐसा तुम्हारे जीवन का अधूरापन कब समाप्त होगा? कब तक तुम मन में पीड़ा और दर्द लिए धूमते रहोगे? कब तक तुम्हारे मन में छटपटाहट बनी रहेगी, कब तक तुम्हारे जीवन में असंतोष उभर रहा होगा? कौन सा ऐसा क्षण आएगा जब तुम्हें समझ आएगी, कौन सा ऐसा क्षण आयेगा जब तुम अहसास कर सकोगे कि मुझे जीवन में पूर्णता प्राप्त कर लेनी है।

यह पूर्णता गुरु ही दे सकते हैं -

तुम्हारा यह अधूरापन, तुम्हारी यह कमी, तुम्हारी यह न्यूनता संसार का कोई वैज्ञानिक, कोई साइंस, कोई टेक्नोलॉजी दूर नहीं कर सकती। तुम्हारे मन का जो अंधियारा है वह बाहर से दूर हो ही नहीं सकता। कोई ऐसी मशीन बनी ही नहीं जो तुम्हारे असंतोष को दूर कर सके। तुम जिस पैसे पर गर्व कर रहे हो उन चांदी के टुकड़ों से तुम मन का संतोष प्राप्त नहीं कर सकते। उन कागजी नोटों से मन का आनन्द मोल नहीं ले सकते, प्रसन्नता नहीं प्राप्त कर सकते, जीवन की उमंग नहीं खरीद सकते, जीवन का वास्तविक सुख इन रूपयों के बदले नहीं प्राप्त हो सकता। जीवन की श्रेष्ठता केवल पैसों से प्राप्त नहीं हो सकती। यह तुम्हारे मन का आनन्द, यह तुम्हारे मन का संतोष, यह मन की पूर्णता न तुम्हारे पैसे दे सकते हैं, न तुम्हारी पत्नी दे सकती है, न तुम्हारा पुत्र दे सकता है और न तुम्हारा समाज दे सकता है।

इस समाज में जिसको तुमने पत्नी कहा है, चाचा, काका ताऊ, जो कुछ कहा है, उन्होंने तुम्हें केवल बंधन दिया है, बांध दिया है छोटे से कटघरे में, एक छोटे से मकान में, एक पत्नी के साथ, दो चार बच्चों के साथ, पांच हजार रुपयों के साथ। वे बंधन दे सकते हैं, मुक्ति नहीं दे सकते, वे तुम्हें परेशानियां दे सकते हैं, उलझने दे सकते हैं। वे तुम्हें गृहस्थ की कठिनाइयां दे सकते हैं, तुम्हें आकाश में उड़ने की क्षमता नहीं दे सकते। आकाश में उड़ने का आनन्द हंस ही प्राप्त कर सकता है। वह तो मानसरोवर का हंस ही अनुभव कर सकता है कि मानसरोवर झील में डुबकी लगाने का आनन्द क्या होता है, और यह आनन्द गुरु के अलावा और कोई दे ही नहीं सकता, न देवता, न मनुष्य, न मित्र, न परिवार, न पत्नी, न

त क



पति, न पुत्र, न बन्धु, न बान्धव, और जब तक ज्ञान प्राप्त नहीं होगा तब तुम्हारे जीवन में पूर्णता नहीं आ सकती और जब तक पूर्णता प्राप्त नहीं होती तब तक तुम्हारा यह जीवन बार-बार घिसा-पिटा ही चलता रहेगा। एक ऐसा जीवन जो घिसे हुए रिकार्ड की तरह है, जिसकी सुई बार-बार एक ही बात पर घिसटती रहती है। आखिर तुम कब सावधान होगे? कब चैतन्य होओगे? कब एहसास करोगे कि हमें ये सब बन्धन तोड़ कर जीवन का आनन्द प्राप्त करना है, जीवन की उमंग लेनी है, जीवन का ऐश्वर्य प्राप्त करना है। इन रुपयों-पैसों, घर मकान और चांदी के चंद टुकड़ों के बदले उस खरे सोने को लेना है, उस हीरे को प्राप्त करना है जो जीवन में पूर्ण चैतन्य दे सकता है, जीवन की पूर्णता दे सकता है।

मैं तुम्हें चौरासी लाख योनियों से इस एक योनि में खड़ा कर सकता हूँ -

हमारे शास्त्रों में कहा है कि चौरासी लाख योनियां होती हैं। व्यक्ति इन योनियों में भटकता हुआ इस मनुष्य जीवन को प्राप्त करता है। अब तुमने मुनुष्य जीवन प्राप्त किया है, वह तुम्हारे साठ साल का, सत्तर साल का जीवन है। वैसे भी तुमने तीस-पैंतीस साल समाप्त कर दिए हैं, कुल बीस-पचास साल बचे हैं इस जीवन के, और यह जीवन भी समाप्त हो गया, तो पुनः चौरासी लाख योनियां भटकने के बाद ही मानव जीवन प्राप्त हो सकेगा, कब प्राप्त हो सकेगा, कुछ कहा नहीं जा सकता। यदि ऐसा जीवन प्राप्त हो भी गया और यदि सद्गुरु प्राप्त नहीं हुए तो वह जीवन व्यर्थ चला जायेगा, उस जीवन का कोई अर्थ, कोई मकसद नहीं रह पायेगा। अब जबकि तुम्हारे हाथ में यह जीवन है तो इस जीवन का मूल्यांकन करना तुम्हारा फर्ज है। इस जीवन में तुम्हें सब कुछ कर देना है, इसी जीवन में पूर्णता प्राप्त कर लेनी है, जिससे कि भविष्य में बार-बार जन्म नहीं लेना पड़े, बार-बार भौतिकता से बंधकर जीवन को एक कटघरे में कैदी की तरह व्यतीत नहीं करना पड़े। मैं तुम्हें इन चौरासी लाख योनियों के आवागमन से मुक्ति दिलाकर इसी

जीवन में मुक्त कर देना चाहता हूं, इसीलिए तो मैं आया हूं।

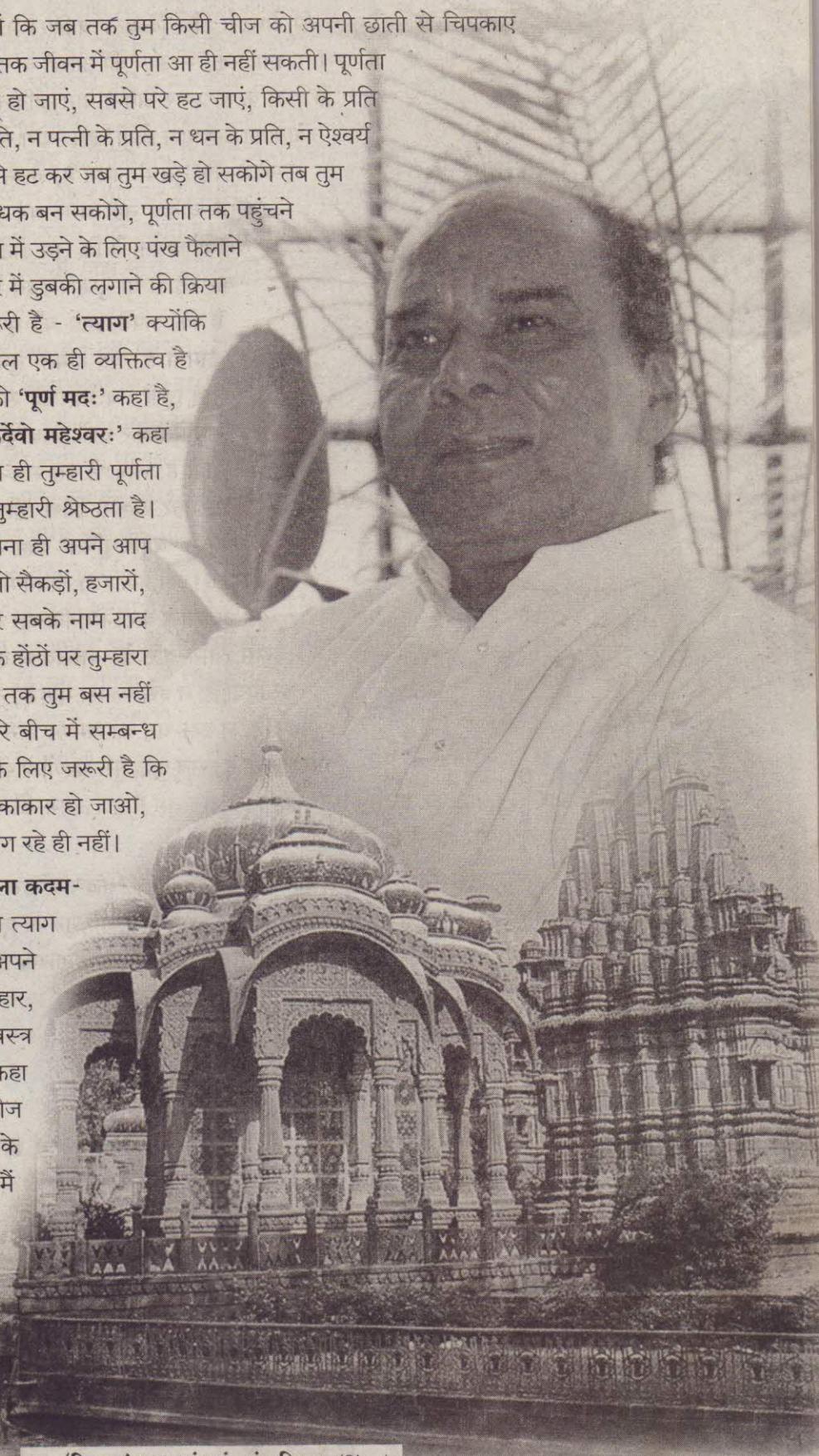
बिना त्याग के जीवन में पूर्णता आ ही नहीं सकती।

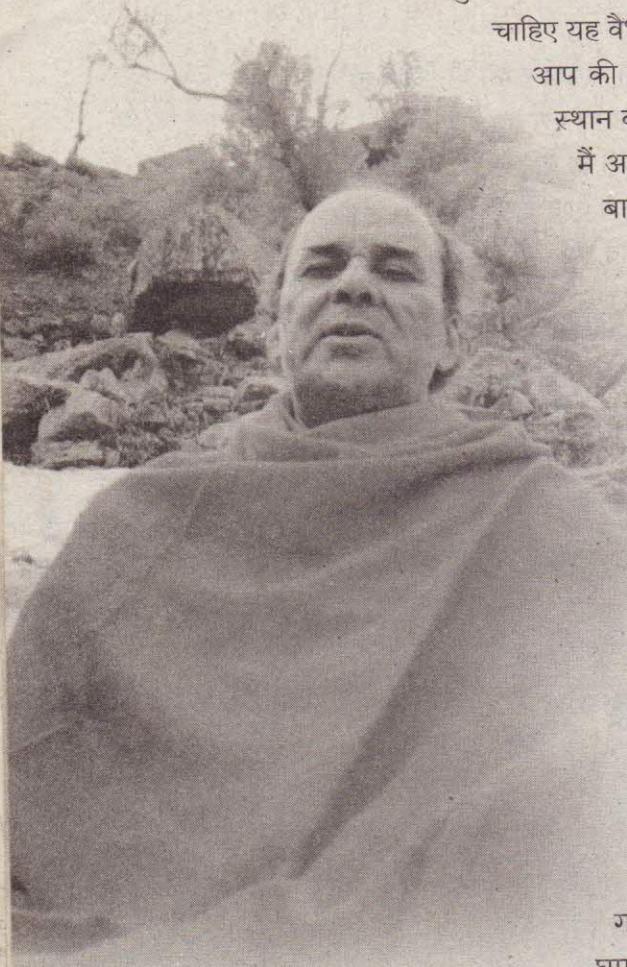
यह भी अच्छी तरह से समझ लें कि जब तक तुम किसी चीज को अपनी छाती से चिपकाए रखोगे, उससे आसक्ति रखोगे, तब तक जीवन में पूर्णता आ ही नहीं सकती। पूर्णता तभी आ सकती है जब आप विलुप्त हो जाएं, सबसे परे हट जाएं, किसी के प्रति तुम्हें आसक्ति नहीं रहे, न पति के प्रति, न पत्नी के प्रति, न धन के प्रति, न ऐश्वर्य के प्रति, न समाज के प्रति, इन सबसे हट कर जब तुम खड़े हो सकोगे तब तुम सही अर्थों में शिष्य बन सकोगे, साधक बन सकोगे, पूर्णता तक पहुंचने का रास्ता प्राप्त कर सकोगे। आकाश में उड़ने के लिए पंख फैलाने की क्षमता मिल सकेगी, मानसरोवर में डुबकी लगाने की क्रिया आ सकेगी। इसके लिए बहुत जरूरी है - 'त्याग' क्योंकि तुम्हें पूर्णता तक पहुंचाने वाला केवल एक ही व्यक्तित्व है जिसको हमने 'गुरु' कहा है, जिसको 'पूर्ण मदः' कहा है, जिसको 'गुरुब्रह्मा, गुरुर्विष्णु, गुरुदेवो महेश्वरः' कहा गया है। उस तक पहुंचने की क्रिया ही तुम्हारी पूर्णता है। उन्हें प्राप्त करने की क्रिया ही तुम्हारी श्रेष्ठता है। उनके हौंठों पर तुम्हारा नाम आ जाना ही अपने आप में महानता है क्योंकि उनके सामने तो सैकड़ों, हजारों, लाखों व्यक्ति हैं और शिष्य हैं और सबके नाम याद रखना संभव नहीं है। जब तक उनके हौंठों पर तुम्हारा नाम नहीं होगा, उनके हृदय में जब तक तुम बस नहीं जाओगे तब तक उनके और तुम्हारे बीच में सम्बन्ध कैसे बन पायेंगे? सम्बन्ध बनाने के लिए जरूरी है कि तुम बिल्कुल अपने गुरु के साथ एकाकार हो जाओ, तुम्हारा और गुरु का अस्तित्व अलग रहे ही नहीं।

त्याग:- गुरु तक पहुंचने का पहला कदम-

और यह तभी संभव है जब तुम त्याग कर सको 'बुद्ध' की तरह जिसने अपने गुरु के सामने जाकर अपने गले का हार, अपने आभूषण, अपने राजसी वस्त्र चरणों में समर्पित कर दिये और कहा - 'अब मैं मुक्त हूं'। कोई राजसी चीज मेरे पास नहीं है। मैं केवल आप के दिए वस्त्र धारण करना चाहता हूं। मैं इसी जीवन में आपके चरणों में पूर्णता प्राप्त कर लेना चाहता हूं।

तुम्हें मुक्त होना है 'बुद्ध' की तरह, एक राजा का पुत्र होने के बाद भी अपने पूरे ऐश्वर्य के साथ





गुरु - चरणों में समर्पित हो गया, सौंप दिया - नहीं चाहिए ये चांदी के टुकड़े, नहीं चाहिए यह वैभव, नहीं चाहिए यह ऐश्वर्य, नहीं चाहिए यह सम्पन्नता। मुझे केवल आप की श्रेष्ठता और दिव्यता चाहिए। मुझे चाहिए कि मैं आप के हृदय में स्थान बना सकूँ। मैं आप की आंखों के रास्ते आप के हृदय में पहुंच सकूँ। मैं आप के होठों पर अपना नाम अंकित कर सकूँ और यह त्याग ही इस बात का अहसास होगा, इस त्याग से ही गुरु इस बात को अनुभव कर सकेंगे, कि तुम मैं लगन है, चेतना है। गुरु को तुम्हारा धन, वैभव, ऐश्वर्य चाहिए नहीं मगर वह तुम्हारा त्याग देखना चाहता है। देखना चाहता है कि तुम होठों से ही 'गुरु' शब्द का उच्चारण कर रहे हो या तुम्हारे हृदय में भाव हैं, चिन्तन है, एक विचार है कि अपने आप को पूर्णता के साथ समर्पित करने की क्षमता है। यह क्षमता तुम्हारे त्याग से स्पष्ट हो सकेगी। यह तुम्हें तब प्राप्त हो सकेगी, जब तुम अपना सब कुछ समर्पित कर दोगे, सब कुछ सौंप दोगे। जो कुछ रांगा है, लोहा है, तांबा है वह सब कुछ सौंप कर ही उस पूर्णता को प्राप्त कर सकोगे जिसे 'हीरा' कहा गया है, जिसको अपने आप में 'बहुविभूषित' कहा गया है, जिसको 'पूर्णमदः' कहा गया है। इस प्रकार ही जीवन में पूर्णता प्राप्त कर सकोगे और गुरु यह अहसास कर लेगा कि यह वास्तव में समर्पित है, वास्तव में इसमें त्याग-वृत्ति है, वास्तव में इसने त्याग से सब कुछ विस्मृत कर दिया है। न इसे पद का मोह है, न यह ऑफिसर है न इस बात का गर्लर है, न इसे धन का घमण्ड है न व्यापार का और न परिवार का घमण्ड रहा है। सब कुछ गुरु चरणों में सौंप दिया है विमुक्त भाव से, बिना लाग लपेट के। तब गुरु इस बात का अनुभव कर सकेगा कि अब तुम मैं पूर्ण त्याग की भावना है और यह सब कुछ सौंप देना ही पूर्णता है। यह सब कुछ विसर्जित कर देना ही श्रेष्ठता है।

अपना जो कुछ है वह सब कुछ उनके चरणों में समर्पित कर देना पहला कदम है, उस रास्ते पर जो कि पूर्णता की ओर जाता है, अमरत्व की ओर जाता है, जो रास्ता श्रेष्ठता की ओर जाता है, जो गुरु से एकाकार होने का रास्ता है। आज तक जितने भी उच्च कोटि के योगी, संन्यासी बने चाहे वे शंकराचार्य हों, चाहे गोरखनाथ हों, चाहे सूर, मीरा, तुलसी,



४५ 'विसम्बर' 2006 मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान '10' *

कबीर हों, चाहे विश्वामित्र, वशिष्ठ, कणाद, अत्रि, पुलस्त्य हों, चाहे बुद्ध हों, चाहे महावीर हों, सभी अपने वैभव के साथ, धन और ऐवश्य के साथ गुरु-चरणों में समर्पित हुए हैं अहसास कराने के लिए कि मुझे अब त्याग ही करना है, अब मुझे अपने पास कुछ रखना ही नहीं है ये चांदी के टुकड़े आप रखिये मुझे तो आप वह दीजिए जो वास्तव में हीरे हैं, बहुमूल्य जीवन है, जो अपने आप में श्रेष्ठ है। यही स्थिति गुरु को अहसास दिला सकती है कि वास्तव में लगन है इसके मन में, धोखा नहीं है, धूर्ता नहीं है, चालाकी नहीं है, मक्कारी नहीं है, सही अर्थों में समर्पण है, सही अर्थों में भव्यता के साथ अपने को समर्पित कर देने की क्रिया है और जब ऐसा होगा तब गुरु अपने सीने से लगा लेगा। अहसास कर लेगा कि यह व्यक्ति वास्तव में हीरक खंड है इसके मन में कोई लाग-लपेट नहीं है न पत्नी के प्रति, न पुत्रों के प्रति, न समाज के प्रति, न धन-सम्पत्ति के प्रति। ठोकर मार कर खड़ा हो गया है उस जगह जाने के लिए जहां जाने के लिए योगी-यति भी तरसते हैं, उस जगह जाने के लिए, जहां अमृत का झरना निरन्तर प्रवाहित रहता है, उस जगह जाने के लिए जिसको सिद्धाश्रम कहा गया है, उस जगह जहां मृत्यु होती ही नहीं अमरत्व प्राप्त हो जाता है।

यह अवसर कब आएगा -

मैं पूछ रहा हूं कि निर्णय लेने के लिए कब तक सोचते रहेंगे? कब तक किनारे पर बैठे हुए कंकड़, पत्थरों से अपनी झोलियां भरते रहेंगे? कितना समय बिता दोगे? आठ-दस जन्म तो बिता चुके हो, दो-चार साल नहीं। जानते हो आठ-दस जन्म किसे कहते हैं? पन्द्रह-बीस वर्ष जो तुमने बिता दिये किसे कहते हैं? ऐसे तो सोचते-सोचते पूरा जीवन बीत जायेगा और गुरु तुम्हारे हाथ से छूट जायेगा। तुम्हारे हाथ में रह जायेगा केवल समाज का जहर, समाज की पीड़ाएं, तनाव, दुःख, चिन्ताएं, कष्ट और आत्म-ग्लानि। इनके अलावा तुम्हारे पास कुछ रहेगा ही नहीं। गुरु तुम्हारे पास नहीं रह पायेगा, गुरु तो आगे निकल गया होगा और हाथ मलने, पश्चाताप करने के अलावा तुम्हारे पास कुछ रहेगा ही नहीं। हो सकता है अगला जीवन लो और गुरु तुम्हें नहीं मिलें, इसीलिए जो कुछ करना है इसी जीवन में करना है, जो कुछ निर्णय करना है अभी करना है और आज ही करना है। आज ही अपने आप को समर्पित कर देना है। इसी क्षण दोनों हाथ फैला कर कह देना है, “मैं आपका हूं, आपके चरणों में विसर्जित हूं आप मुझे

उ स

स्थान का रास्ता बताइए जहां मैं पहुंचना चाहता हूं। जिसको

अमरत्व कहा है, जिसको पूर्णता कहा गया है, जिसको
सिद्धाश्रम कहा गया है।” और ऐसी स्थिति
ही तुम्हें पूर्णता तक पहुंचाने का रास्ता
दिखाएगी।

तुम्हें समाधान चाहिए -

समाधान भी तुम्हारे
पास है, यदि तुम
थोड़ा-सा श्रम करो,
तो स्वयं समाधान
पा लोगे, क्योंकि
तुमने स्वयं
अपने चारों
तरफ एक ऐसी
चारदीवारी
खड़ी कर रखी
है, जिसके
भीतर फंस गये
हो तुम।
- किससे भय

लगता है, जो तुमने दीवार खड़ी कर ली है?

- तुम्हें भय बाहरी कारणों से नहीं लगता, तुम तो अपने अंदर बैठे ब्रह्म को पुकार से भयभीत हो, क्योंकि वह तुम्हें बार-बार पुकारता है - “आओ मेरे पास आओ...” लेकिन तुम उसकी पुकार सुन कर भी अनसुनी कर जाते हो, क्योंकि तुम उस पुकार को, उस आवाज को पहचानने से कतराते हो क्योंकि तुम्हें लगता है कि अगर मैंने इसकी आवाज सुनी, इसकी बात मान ली, तो मेरे पास जो कुछ भी धन-दौलत, माता-पिता, पत्नी और बच्चे हैं - सब कुछ खो जायेगा, तुमने स्वयं को सांसारिकता से बांध लिया है और आत्मा की आवाज सुनते ही घबरा उठते हो।

आत्मा हमेशा परमात्मा से मिलन के लिए तड़पती रहती है। इस मिलन की यात्रा पर वही निकलेगा, जिसे यह बात स्पष्ट हो गई हो, कि इस संसार में आनन्द मिलना असंभव है - और यह तभी स्पष्ट होगा, जब उसका मन इन सब चीजों से भर जायेगा, और भर जायेगा, तो ब्रह्म से एकाकार करने का मार्ग प्राप्त कर लेगा। लेकिन तुम्हारा मन जरा सा भी भरा नहीं है, कल भी अतृप्त था, आज भी अतृप्त है और कल भी अतृप्त रहेगा। उलझा दिया है तुमने अपने आप को, झूटा आश्वासन, झूठी आशायें देकर। इस संसार में कभी कोई तृप्त नहीं हुआ, क्योंकि उसके पास जो है, वह उससे परेशान नहीं है, उसके प्रति आसक्ति नहीं है; लेकिन जो नहीं है, उसके लिए जरुर परेशान है।

आज तक तुम एक कमरे के मकान में रहते आ रहे हो, लेकिन दूसरों को दो कमरे के मकान में रहता देख कर तुमने दो कमरों का मकान बनाने की इच्छा प्रकट की और उसे पूरा करने के चक्कर में उलझ गए। उस मकान के लिए पैसों की आवश्यकता तो होगी ही, और तुम्हारे पास पचास हजार हैं, लेकिन आवश्यकता एक लाख रुपये की है, जिसको पाने के लिए तुमने अपना चैन, अपना सुख सब कुछ खो दिया है उस एक लाख को पाने के लिए अपने परिवार से भी दूर हो गए हो, अपने-आप से भी दूर हो गए हो, एक मशीन, एक रोबोट की तरह कार्यरत हो गए हो।

इसीलिए तो मैं कह रहा हूं कि तुम्हारे पास जो कुछ है, तुम उसमें उलझे नहीं हो; जो कुछ नहीं है उसमें उलझे हो। यदि तुम यह कहो कि - लो, मैंने पचास हजार का मोह छोड़ दिया, तो भी कुछ नहीं होने वाला है, क्योंकि तुम एक लाख में उलझे हुए हो - छोड़ना है, तो एक लाख की चाहत छोड़ो... और जिस दिन तुम उसे छोड़ दोगे, उसी दिन तुम अखण्ड बन जाने की क्रिया प्राप्त कर लोगे। तब तुम स्पष्ट हो जाओगे, कि सांसारिक चीजों से मुझे सुख नहीं मिल सकता, मुझे अपने मूल उस से मिलन का सुख चाहिए, जिसके लिए मैं बराबर छटपटाता रहता हूं... और जब ऐसा सोच लोगे, तो तुम्हारी आन्तरिक यात्रा प्रारम्भ हो जायेगी, क्योंकि इसके पूर्व तुम बहिर्यात्रा पर थे, दिन-प्रतिदिन, पल-प्रतिपल अपने-आप से दूर चलते चले जा रहे थे, जितना ही तुम अपने से दूर हटोगे, उतना ही तड़ोगे, अशांत बने रहोगे, क्योंकि तुम अपने स्वभाव के प्रतिकूल चल रहे हो।

अपने से प्रतिकूल चलते हुए तुम धन, पद, प्रतिष्ठा और पुत्र में अपने सुख को ढूँढते रहते हो, लेकिन सुख तो मिला नहीं, हां, दुःख के बादल जरूर दिन-प्रतिदिन गहराते जाते हैं। बहुत ही उलझन है इस संसार में - भाव में अभाव है, सुख में दुःख है, तुमि में अतृप्ति है।

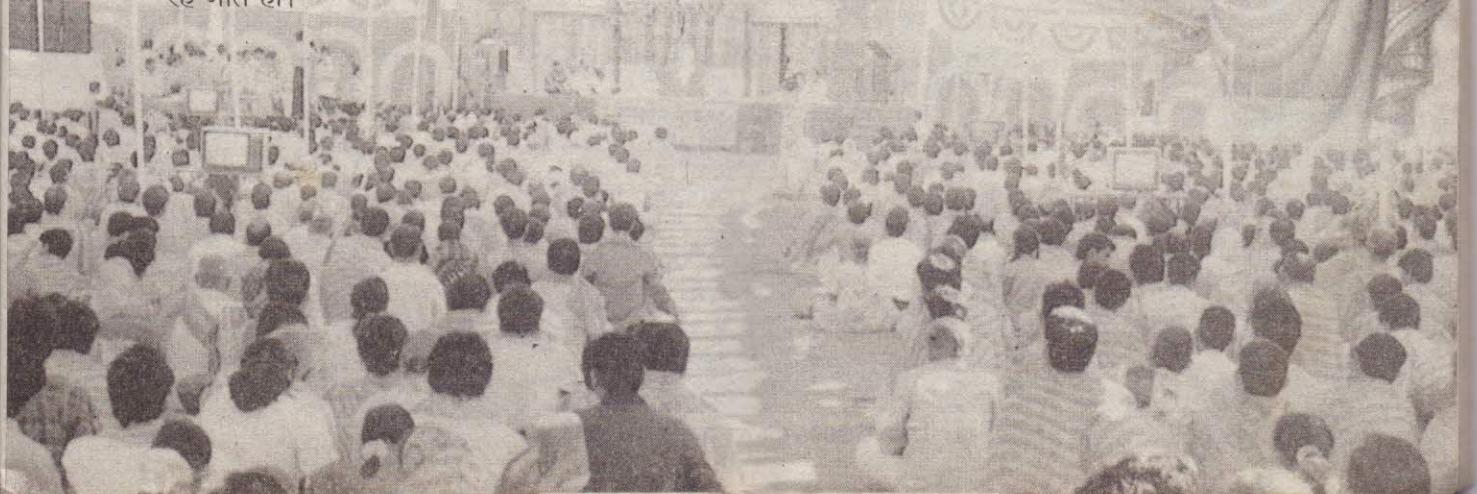
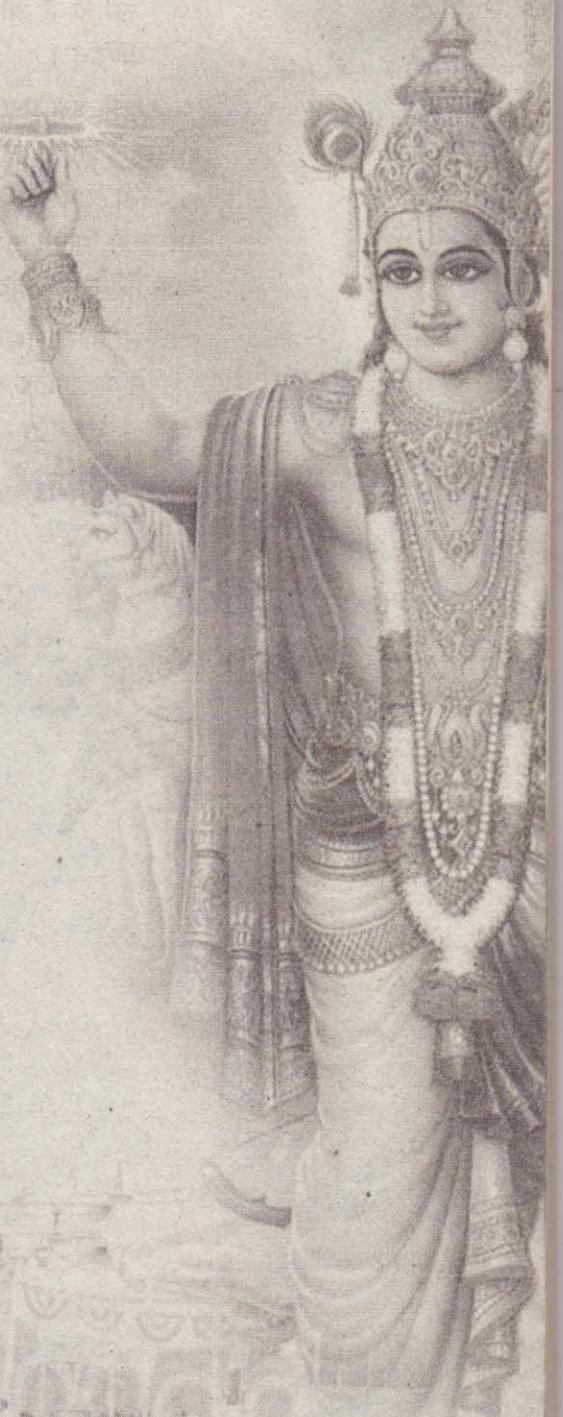
तुम्हारी अतृपि, तुम्हारा दुःख इन सबने तुम्हें इतनी बुरी तरह से उलझा दिया है - इतनी बुरी तरह से, कि तुम कितना भी प्रयास कर लो, यह उलझन सुलझने की जगह और उलझती चली जाती है... ऐसे समय में आवश्यकता पड़ती है, एक ऐसे सशक्त व्यक्ति की, जो तुमको इस उलझन से बाहर निकाल ले, और वह व्यक्ति एकमात्र 'सद्गुरु' ही होते हैं।

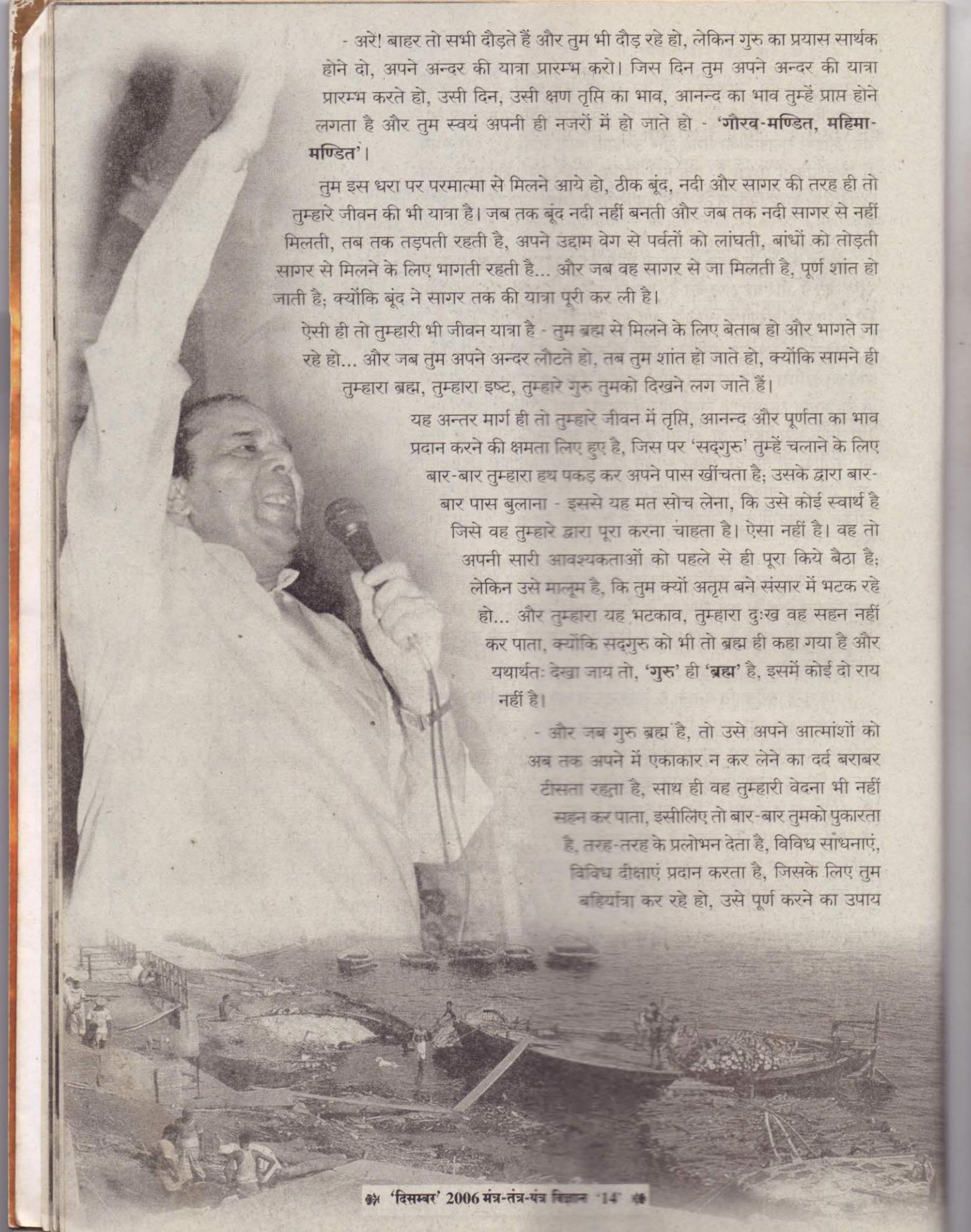
सद्गुरु की क्रिया बहुत ही रहस्य होती है। वे तुम से तुम्हारा अज्ञान छीन लेते हैं और वह ज्ञान देते हैं जिसकी तुम्हें आवश्यकता है, इसीलिए तो सद्गुरु के चरणों में आने के बाद तुम तृप्त हो जाते हो।

लेकिन जब तक तुम उनसे दूर रहते हो तब तक तो यही सोचते हो कि सद्गुरु के पास आज जाऊंगा और उससे कोई मंत्र प्राप्त कर एक-दो दिन में ही अथाह सम्पति पा लूंगा और करोड़पति बन जाऊंगा... और जब तुम उनके पास पहुंचते हो, तो तुम कभी-कभी अज्ञानवश निराश हो जाते हो, क्योंकि जो तुम दूर रहकर सोचते हो, वह वहां प्रत्यक्षतः प्राप्त होता नहीं दिखता। आकाश को धरा पर से निहारने से वह नीला दिखता है, लेकिन वास्तव में क्या उसका कोई रंग है? कभी सोचा है - ऐसा क्यों है?

- ऐसा इसलिए है, क्योंकि आकाश का अपना कोई रंग होता नहीं है, बस दिखाई देता है। इस आकाश के नीले रंग की तरह ही तुमने सद्गुरु ही कल्पना कर रखी है, और एक-दो दिन में करोड़पति बनने का सपना संजो बैठते हो।

- वह तुम्हें करोड़पति बनाता है, लेकिन उस रूप में नहीं, जिस रूप में तुम चाहते हो। तुम रूपये-पैसे से करोड़पति बनना चाहते हो, बहुत अधिक धनराशि प्राप्त करना चाहते हो... और सद्गुरु तुम्हें तुम्हारे अन्दर निहित धनराशि को प्रदान कर करोड़पति बनाने का प्रयास करते हैं, क्योंकि उन्हें मालूम है, कि तुम वास्तव में किस धन के लिए तड़प रहे हो। वह तुम्हारे भ्रम को तोड़ता है, और तुम्हें वास्तविकता के धरातल पर लाकर खड़ा कर देता है, लेकिन तुम अपनी वास्तविकता को देखते हुए भी उसे पहचानने से इकार कर देते हो, इसीलिए तो तृप्त होकर भी अतृप्त रह जाते हो।





- अरे! बाहर तो सभी दौड़ते हैं और तुम भी दौड़ रहे हो, लेकिन गुरु का प्रयास सार्थक होने दो, अपने अन्दर की यात्रा प्रारम्भ करो। जिस दिन तुम अपने अन्दर की यात्रा प्रारम्भ करते हो, उसी दिन, उसी क्षण तृष्णि का भाव, आनन्द का भाव तुम्हें प्राप्त होने लगता है और तुम स्वयं अपनी ही नजरों में हो जाते हो - 'गौरव-मण्डित, महिमा-मण्डित'

तुम इस धरा पर परमात्मा से मिलने आये हो, ठीक बूँद, नदी और सागर की तरह ही तो तुम्हारे जीवन की भी यात्रा है। जब तक बूँद नदी नहीं बनती और जब तक नदी सागर से नहीं मिलती, तब तक तड़पती रहती है, अपने उद्घाम वेग से पर्वतों को लांघती, बांधों को तोड़ती सागर से मिलने के लिए भागती रहती है... और जब वह सागर से जा मिलती है, पूर्ण शांत हो जाती है; क्योंकि बूँद ने सागर तक की यात्रा पूरी कर ली है।

ऐसी ही तो तुम्हारी भी जीवन यात्रा है - तुम ब्रह्म से मिलने के लिए बेताब हो और भागते जा रहे हो... और जब तुम अपने अन्दर लौटते हो, तब तुम शांत हो जाते हो, क्योंकि सामने ही तुम्हारा ब्रह्म, तुम्हारा इष्ट, तुम्हारे गुरु तुमको दिखने लग जाते हैं।

यह अन्तर मार्ग ही तो तुम्हारे जीवन में तृष्णि, आनन्द और पूर्णता का भाव प्रदान करने की क्षमता लिए हुए है, जिस पर 'सदगुरु' तुम्हें चलाने के लिए बार-बार तुम्हारा हथ पकड़ कर अपने पास रखी चता है; उसके द्वारा बार-बार पास बुलाना - इससे यह मत सोच लेना, कि उसे कोई स्वार्थ है जिसे वह तुम्हारे द्वारा पूरा करना चाहता है। ऐसा नहीं है। वह तो अपनी सारी आवश्यकताओं को पहले से ही पूरा किये बैठा है; लेकिन उसे मालूम है, कि तुम क्यों अतृप्त बने संसार में भटक रहे हो... और तुम्हारा यह भटकाव, तुम्हारा दुःख वह सहन नहीं कर पाता, क्योंकि सदगुरु को भी तो ब्रह्म ही कहा गया है और यथार्थतः देखा जाय तो, 'गुरु' ही 'ब्रह्म' है, इसमें कोई दो राय नहीं है।

- और जब गुरु ब्रह्म है, तो उसे अपने आत्मांशों को अब तक अपने में एकाकार न कर लेने का दर्द बराबर टीसता रहता है, साथ ही वह तुम्हारी वेदना भी नहीं सहन कर पाता, इसीलिए तो बार-बार तुमको पुकारता है, तरह-तरह के प्रलोभन देता है, विविध साधनाएं, विविध दीक्षाएं प्रदान करता है, जिसके लिए तुम बहिर्यात्रा कर रहे हो, उसे पूर्ण करने का उपाय

बताता है।

- ऐसा इसलिए कि तुम बार-बार उसके निकट आओ... और एक स्मय तो ऐसा आयेगा ही, जब तुम उस ब्रह्म को पहचान लोगे, उसी दिन तुम तृप्त हो जाओगे।

और यह सब दीक्षा के माध्यम से ही संभव है -

इसके लिए साधना करने की आवश्यकता नहीं है, महाविद्याएं सिद्ध करने की भी जरूरत नहीं है, माला जपने की भी जरूरत नहीं है, दीपक जलाने, अगरबत्ती करने की भी जरूरत नहीं है इसके लिए तो एक ही जरूरत है 'मर्मण'। इसके लिए जरूरी है पूर्णता की दीक्षा प्राप्त करना, पूर्णत्व दीक्षा प्राप्त करना, पूर्णत्व दीक्षा प्राप्त करना और गुरुदेव तुम्हें इसके लिए तैयार करेंगे।

दीक्षा का तात्पर्य -

जो तुम नहीं प्राप्त कर सको गुरु तुम्हें दे, तुम साधनाओं के माध्यम से पूर्णता नहीं प्राप्त कर सकोगे। कितने साल तक मंत्र जप करते रहोगे? मैंने देख लिया है कि इस जन्म में, दस-पांच साल हो गये और तुम कुछ कर नहीं पार हो हो, तब मुझे यह बात लिखनी पड़ रही है। तब मुझे तुमसे यह बात कहनी पड़ रही है, तब चैलेंज के साथ यह बात तुम्हें समझानी पड़ रही है कि तुम्हारा यह जीवन कहीं बरबाद न हो जाए, तुम कुछ कर नहीं सकते तो मैं करूंगा। कई बार तो तुम हाथ छुड़ाकर भाग गए पिछले जीवन में, उससे पिछले जीवन में, इस बार मैं तुम्हारा हाथ पकड़ रहा हूं, जिससे तुम भाग नहीं सको। इस बार मैं तुम्हें सीने से लगा लूंगा कि तुम अलग नहीं हो सको, इस बार मैं तुम्हें वह सब कुछ दे देना चाहता हूं जिसके लिए आया हूं। अभी मैं तुम्हारा रखवाला हूं - तुम्हारे जीवन का भी, तुम्हारी साधनाओं का भी। मैं रखवाला कब तक रहूंगा? कब तक? मैं तुम्हें खुद उस लायक बना नहीं दूंगा कि तुम दूसरे का रखवाला बन सकोगे, दूसरों का मार्गदर्शन कर सकोगे, दूसरों को अमरत्व दे सकोगे, दूसरों को पूर्णता दे सकोगे, और यह सब पूर्णत्व दीक्षा के माध्यम से संभव है। मैं तुम्हें यह पूर्णत्व दीक्षा देने के लिए तैयार हूं। यह तभी संभव होगा जब तुम मुक्त होकर आ सको, जब तुम्हारे मन में शंका नहीं होगी, जब तुम्हारे मन में न्यूनता नहीं होगी सब कुछ छोड़कर आना ही पूर्णता और पूर्णत्व दीक्षा का भाग है।

पूर्णत्व दीक्षा - गुरु चरणों में विसर्जन ही पूर्णता

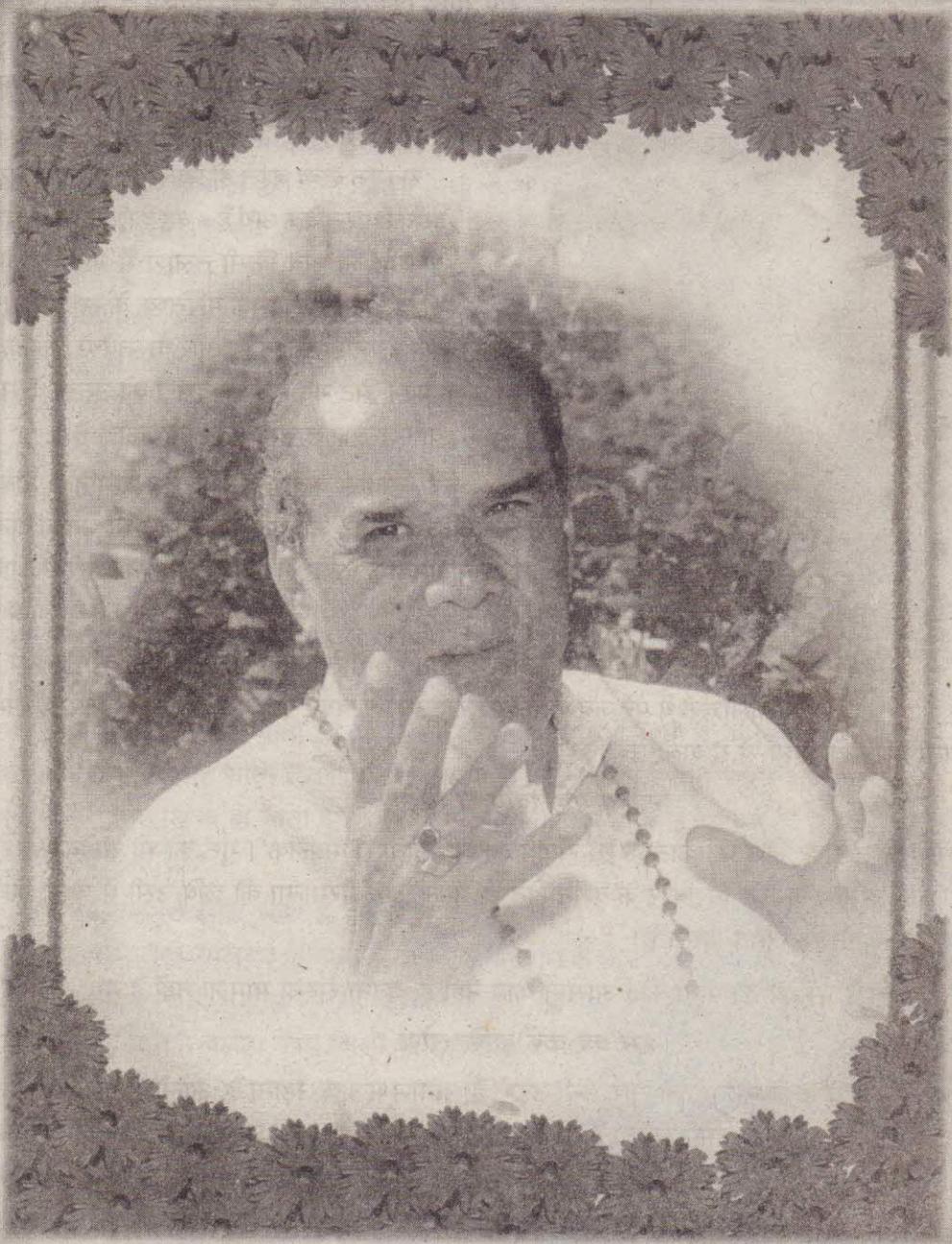
मैं तुम्हें इस जीवन में ही उस जगह पहुंचा देना चाहता हूं जहां वापस जन्म नहीं होता जहां तनाव नहीं होता, जहां किसी प्रकार की परेशानियां नहीं आती, जहां किसी प्रकार का कष्ट-अभाव नहीं होता, जहां एक आनन्द है, एक उमंग है, एक पूर्णता है, एक मस्ती है, एक चैतन्य है, एक सम्पूर्णता है, ऐसा आनन्द है जिसको अखण्ड आनन्द कहा गया है। अपनी मस्ती में झूमते हुए उस ईश्वर का, उस ईश्वरत्व का दर्शन करना है, जो अपने



आप में अद्भुत है, अनिवार्यीय है, अद्वितीय है। करोड़ों में कोई एक बिरला ही प्राप्त कर सकता है। तुम वहां खड़े होकर देख सकोगे कि तुम्हारे परिवार वाले, तुम्हारे परिचित कितना खोखला और घटिया जीवन व्यतीत कर रहे हैं, तुम्हारे परिचित किस प्रकार से दुःखी, परेशान और व्यथित हैं, तब तुम अहसास कर सकोगे कि तुम कितनी ऊँचाई पर पहुंचे हुए हो और जब वे आंख उठाकर तुम्हें देखेंगे तो उनके मन में ज्लानि और पछतावे के अलावा कुछ होगा ही नहीं। वे सोचेंगे कि काश, वहां तक हम पहुंच पाते, मगर वहां पहुंचने के लिए आवश्यक है पूर्ण रूप से गुरु चरणों में विसर्जन। उस जगह पहुंचने के लिए जरूरी है गुरु सेवा। सेवा के माध्यम से ही, गुरु कार्यों को निरंतर करते हुए ही गुरु के चरणों में समर्पित होते हुए ही वह सब कुछ प्राप्त किया जा सकता है जो ऋषि-मुनियों का लक्ष्य रहा है जो देवताओं का लक्ष्य रहा है, जो समाज का लक्ष्य रहा है। यही तुम्हारा लक्ष्य है। मैं तुम्हें इन शब्दों के साथ आवाज दे रहा हूं अपने सीने से लगाने के लिए, आवाज दे रहा हूं इस जीवन से छुटकारा दिलाने के लिए, आवाज दे रहा हूं जीवन की पूर्णता के लिए। अगर तुम्हारे पांव ठिक गए, अगर तुम रुक गये तो तुम्हारा जीवन बर्बाद हो जाएगा, गुरु तुम्हें नहीं प्राप्त हो सकेंगे। फिर तुम्हारा यह जीवन बर्बाद हो जाएगा। मैं नहीं कह सकता कि अगली योनि तुम्हें कैसे मिले? मैं तो इस बार सब कुछ देना चाहता हूं अपने पूर्णगुरुत्व के साथ।

मैं एक बार फिर तुम्हें आवाज देता हुआ, चेतावनी देता हुआ प्रेम से, स्नेह से, भाव-विहवलता से, अपने सीने से लगाने के लिए, दोनों हाथ फैलाए आतुर खड़ा हूं। तुम्हें अपनी भुजाओं में भरने के लिए, अपने-आप में समाने के लिए, अपने आप में समर्पित करने के लिए, अपने-आप में विसर्जित करने के लिए अपने-आप में समायोजित करने के लिए, पूर्णता देने के लिए। मैं तुम्हें हृदय से आशीर्वाद देता हूं।

-सद्गुरुदेव स्वामी निखिलेश्वरानन्द परमहंस।



ਭਾਗ ਚੱਕ ਰੋਸ਼ਾ ਥਾਵੁ ਗੁਰੂ ਮੈਂ ਛਾਣੇ ਸੁਣੁ ਸੀਲ ਪ੍ਰੀਤ ਹਾਂਕੀ



फिर एक बार गुरु शब्द के विशाल सागर में डुबकी लगा
ली जाय, फिर एक बार इसके आनन्द में डूब लिया जाए,
प्रेम मग्न हो जाया जाए और साथ ही साथ गुरु शब्द
और इस शब्द के पीछे विराट व्यक्तित्व को समझने
की, पहचानने की चेष्टा कर ली जाए...

सदगुरु शब्द बहुत ही प्यारा है, बहुत ही गूढ़ है।
इसका वास्तविक अर्थ है - वह व्यक्ति जिसने मंजिल
पा ली, जो अब किसी तलाश में नहीं है, जो घर
पहुंचा हुआ है, जिसके मस्तिष्क के सभी प्रश्न मिट
चुके हैं, जो निष्प्रश्न हैं, और वास्तव में जिसके खुद
के प्रश्न मिट गए हैं, वही दूसरों को उत्तर दे सकता
है, वही उन्हें कुछ बताने का अधिकारी है।

धनी धर्मदास कबीर के शिष्य थे। भौतिक जीवन में
तो धनी रहे ही पर आध्यात्मिक जीवन भी उनका धनी ही
रहा। इतने धनी कि कबीर ने उनको धनी धर्मदास के नाम से
पुकारा...

और शुरू में धर्मदास बहुत ही भौतिकवादी और तर्कयुक्त व्यक्तित्व थे, कड़े
आलोचक थे पर जब कबीर का रंग उन पर चढ़ा, जब एक बार उन्होंने समग्र समर्पण
कर दिया, तो स्वतः ही उनके हृदय से ये शब्द उच्चरित हुए -

‘साहेब एहि विधि न मिलै’

यह ‘साहेब’ शब्द बहुत सुंदर और प्रतीकात्मक है। साहेब का अर्थ होता है ‘मालिक’। गुरु को भी साहेब कह सकते
हैं, क्योंकि पहली बार उसी में ही उस निराकार के दर्शन होते हैं, पहली बार परमात्मा की छवि उसी में प्रकट होती है,
इसलिए यह शब्द गुरु की तरफ इंगित करता है।

लेकिन धर्मदास कहते हैं, साहेब को पाना कोई आसान काम नहीं है, इतना सस्ता मामला नहीं है यह, क्योंकि -

हम का करें हाँसि लोग

जब एक बार गुरु की तरफ कदम उठते हैं तो लोग हंसी उड़ाते हैं, समाज मजाक उड़ाता है, आलोचनाएं होती हैं, बहुत
पीड़ा सहन करनी होती है। समाज समझाने लगता है, कि क्या हो गया है तुम्हें? क्यों नहीं हमारी ही तरह धन कमाते,
घर बसाकर क्यों नहीं सुख चैन से रहते? क्या मिल जाएगा तुम्हें वहां? वह सब धोखाधड़ी है, जालसाजी है।

पर जो मजबूत होता है वह इन सभी तूफानों को भी झेल जाता है और शेर की तरह एलान कर ही देता है -

मरोरा मन लागा सत्गुरु में भत्ता होय के खोर
जब से सत्गुरु-ज्ञान भयो हैं, चले न केहु के जोर

मेरा मन अब सत्गुरु में लग गया है, अब मेरा मन उसके रंग में रंग गया है, इसमें हँसने की क्या बात, आलोचना की क्या बात; क्योंकि जब मैं लोभियों की तरह धन कमाता था, जब मैं कामिनियों के पीछे डोलता था, सैकड़ों गलत काम करता था, तब तो तुझमें से कोई नहीं हँसा, किसी ने भी आलोचना नहीं की... शायद इसलिए कि तुममें और मुझमें एक समानता थी, तुम भी तो वही सब कर रहे थे...

पर अब जब मैं अलग पगड़ंडी पर बढ़ रहा हूँ, एक शुद्ध पवित्र जीवन की ओर अग्रसर हो रहा हूँ, तो तुम सब मुझ पर हँस रहे हो, आलोचनाएं कर रहे हो। शायद तुम्हारा अस्तित्व तुम्हें खतरे में मालूम पड़ रहा है, लेकिन मैं अब तुम्हारी एक नहीं सुनूंगा, क्योंकि मुझे अब परम सुख प्राप्त हो रहा है। फिर मेरे गुरु ठाक हैं, कि गलत-भला होय के खोर... इससे मुझे कोई प्रयोजन नहीं। मुझे तो परम सुख की प्राप्ति हो रही है। जब मैंने धन में, काम में, क्रोध में मन लगाया था, तब तुम लोग मुझ पर क्यों नहीं हँसे, क्यों नहीं मुझे नसीहतें दी कि तुम बबादी की ओर बढ़ रहे हो।

मरोरा मन लागा सद्गुरु में, भत्ता होय के खोर

और वे क्षण बहुत ही अमूल्य होते हैं जब शिष्य अपने मन को सद्गुरु में लगा लेता है। मन का वास्तविक स्वभाव है भटकना। कभी धन में भटकता है, कभी पद में, कभी काम में तो कभी भविष्य के सुनहरे सपनों में। मन हमेशा ही या तो भूतकाल में विचरण करता है या भविष्य में। वर्तमान में वह कभी ठहरता नहीं, क्योंकि वर्तमान में होते ही उसकी मृत्यु हो जाती है, मन-विचार शून्यता में कन्वर्ट हो जाता है।

और जैसे ही मन गुरु में लग जाता है, तो उसकी भटकन समाप्त हो जाती है, भूतकाल एवं भविष्य समाप्त होकर केवल वर्तमान शेष रह जाता है और इन्हीं वर्तमान के क्षणों में वह स्थिति आती है जब व्यक्ति को परम सुख उपलब्ध हो जाता है... अतः वे सौभाग्य के क्षण होते हैं, जब मन सद्गुरु में लगता है और...

जब से सत्गुरु ज्ञान भयो है, चलो न केहु के जोर।

जब एक बार परम सुख उपलब्ध हो जाता है, जब एक बार गुरु के ज्ञान में मन ओत-प्रोत हो जाता है, जब वह गुरु को पहचान लेता है, तो फिर उस पर किसी का जोर नहीं चलता, फिर किसी का वश उस पर नहीं चलता... चाहे फिर ईसा की तरह उसे सूली पर चढ़ाओ या मंसूर की तरह तलवार से काट डालो। फिर कोई उसे दबा नहीं सकता, बहका नहीं सकता। तब तो स्वयं परमात्मा भी अगर एक बार गुरु को छोड़ने की बात कहे तो वह परमात्मा को भी छोड़ने को तैयार हो जाता है, क्योंकि उसका उसे पता ही कहां था, गुरु ने ही तो उसे बताया था, दिखाया था... कृपा तो केवल गुरु की ही थी।



और गुरु के साथ रहने में और भी बहुत तकलीफ हैं, और भी बहुत वेदनाएं हैं, यह मार्ग पूर्ण रूप से कांटों से आच्छादित है, इस पर चलना सहज नहीं, सदगुर से प्रेम करना आसान नहीं, क्योंकि...

मातृ रिसाई, पिता रिसाई, रिसाए बटोंहिया लोंग
ध्यान-खड़ग तिरगुन को मारूं, पांच पचीसो चोर
गुरु से प्रेम करने का अर्थ है - माता-पिता को नाराज करना, क्योंकि उनकी नजर में गुरु उनसे प्रतिस्पर्धा में उत्तर गया है। व्यक्ति को पहला जन्म देते हैं माता-पिता और उसका द्वितीय जन्म होता है गुरु के द्वारा। अतः गुरु से माता-पिता की प्रतिस्पर्धा हो जाती है, और गुरु असल में माता-पिता से भी बड़ा माता-पिता है, क्योंकि उनसे तो केवल देह ही प्राप्त होती है, किन्तु गुरु से तो आत्मा मिलती है और माता-पिता को जलन होनी स्वभाविक है, क्योंकि उनकी स्थिति गौण हो गई, क्योंकि उनके अंह को ठेस-लग गई...

और जीसस ने एक जगह स्पष्ट कहा है - जब तक तुम अपने माता-पिता को इंकार न कर दोगे तुम मेरे पीछे नहीं चल सकते।

अतः माता-पिता का नाराज होना स्वभाविक ही है और उनके साथ सभी सगे-सम्बन्धी, बंधु-बांधव भी कुछ हो जाते हैं, पर वह इन सबकी भी परवाह नहीं करता क्योंकि...

ध्यान खड़ग तिरगुन को मारूं पांच पचीसो चोर

वह कहता है, कि गुरु द्वारा मेरे हाथ में वह ज्ञान की तलवार आ गई है, जिससे मैं सत् रज् तम् इन तीन गुणों को मारकर सीधा इस माया के जाल से निकल सकता हूं। जब जीवन में इस मूल आधार शिला को ही गिरा दूंगा, तो फिर कौन पिता, कौन माता और जो इन पांच इन्द्रियों ने पच्चीसों चोरों को खड़ा कर रखा है, उन सबको भी काट डालूंगा, अब ऐसी तलवार मुझे मिल गई है।

पर सबसे बड़ी मूढ़ता जो प्रायः प्रचलन में है, वह यह कि कर्म-काण्ड द्वारा, पूजा द्वारा, माला फेरने के द्वारा साहेब को, उस गुरु को, उस परमात्मा को प्राप्त किया जा सकता है। यह सब बकवास है, क्योंकि यह तो विशुद्ध प्रेम का मामला है, समर्पण का मामला है, पाखण्ड की इसमें कोई जरूरत नहीं। शास्त्रों की इसमें कोई जरूरत नहीं।

मात्रा तिलक उस्माइके नाचै अरु गावै
अपना मरम जाने नहीं औरन को समझावै

दुनियां में यही सब हो रहा है, मस्तक पर तिलक लगा कर, माला पकड़कर झूमने लग जाते हैं विक्षिप्तों की भाँति... और जिनको खुद कुछ ज्ञान नहीं, जो खुद अपना मर्म नहीं जानते, वे दूसरों को समझाने निकल पड़ते हैं और दूसरों को समझाते-समझाते उन्हें स्वयं यह भ्रांति हो जाती है, कि वे जानते हैं, यह एक अत्यधिक खतरनाक स्थिति है, क्योंकि ऐसे लोग कभी भी साहेब को, गुरु को प्राप्त नहीं कर पाते। इसलिए जहां पंडितों से बचना, वहीं खुद भी पंडित होने से बचना, क्योंकि -

साहेब एहि विधि ना मिलै

गुरु इन कर्मकांडों, इन पूजा, इन मंत्र जापों, इन पाखण्डों से प्राप्त नहीं होते। वे तो केवल प्रेम द्वारा ही मिल सकते हैं, समर्पण से ही मिल सकते हैं।

इसी विषय में गोरखनाथ ने भी बहुत सुंदर वचन कहे हैं -

महमां	धरि	महमां	कूं	मर्टै,
सति	का।	सबद		विचारी
नान्हां	होय	जिनि	सतगुरु	खोज्या
तिन्	सिर	की	पोट	उतारी

गोरखनाथ कह रहे हैं कि पाखण्ड, ज्ञान एवं पंडिताई से गुरु को नहीं प्राप्त किया जा सकता। तुम्हारी महिमा इसमें नहीं। तुम्हारी असली महिमा तो इसमें है कि जब तुम अपनी 'महिमा' यानि अपने अहंकार को बिल्कुल ही पोछ डालो, बिल्कुल ही मिटा डालो, अपने 'मैं' भाव को बिल्कुल ही तिरोहित कर दो, जो अपने इस 'मैं' के भाव को मिटा देता है, इस महिमा के भाव को समाप्त कर देता है, वह स्वतः ही अद्वितीय हो जाता है।

सति	का।	सबद	विचारी
इस सत्य बात करे जरा	विचार कर देखो		
नान्हां	होय	जिनि	सतगुरु
			खोज्या

और जब 'मैं' भाव पूर्ण रूप से तिरोहित हो जाता है, तो व्यक्ति नन्हे बच्चे की भाँति हो जाता है - सरल, स्वाभाविक और तब सदगुरु स्वयं उसे खोजते हुए आ जाते हैं...

तिन् सिर की पोट उतारी

और नन्हे बच्चे के सिर पर भारी पोटली हो, तो किस का मन नहीं कर जाएगा कि उसे उतारे, क्योंकि जब तुम नन्हे बालक की भाँति, 'मैं' भाव से रहित एवं प्रेम से आपूरित होकर गुरु के सामने प्रस्तुत हाओगे, तो करुणा के वशीभूत होकर गुरु स्वयं तुम्हारी कर्मों की पोटली, तुम्हारे विषय वासनाओं, विचारों एवं संस्कारों की पोटली को उतार देते हैं और तुम्हें मुक्त कर देते हैं...

और यही एक मात्र विधि है 'साहेब' को प्राप्त करने की, 'सदगुरु' को प्राप्त करने की, उनसे एकाकार होने की। अगर तुम अपने ही गीत गाते रहोगे, अपने ही अहंकार का ढोल पीटते रहोगे तो तुम गुरु को खो दोगे। परं जैसे ही तुम्हारा अहंकार समाप्त हो जाएगा, जैसे ही तुम नन्हे हो जाओगे 'साहेब' तुम्हारे दिल में ही मुस्कराते हुए मिल जायेंगे -

अब गुरु दिल में देखिया,
मानव करे कुछ नाहि,
कविरा जब हम जावते,
तब जाना गुरु नाहि।

वार्षिक सदस्यता

महामृत्युंजय माला

कई बार ऐसी स्थितियां जीवन में आ जाती हैं, जब प्राणों पर संकट बन आता है - इसका कारण कोई भी हो सकता है, किसी घड़ियन्त्र अथवा साजिश का शिकार होना, किसी भयकर रोग से ग्रसित होना आदि। भगवान शिव को संहारक देवता माना गया है और मृत्यु पर भी विजय प्राप्त करने के कारण मृत्युंजय कहा गया है। अपने साधक के प्राणों पर आए संकट से भगवान महामृत्युंजय अवश्य ही रक्षा करते हैं यदि प्रामाणिक रूप से उनकी साधना सम्पन्न कर ली जाती है तो इस यंत्र के प्रयोग द्वारा समस्त प्रकार के भय - राज्य भय, शत्रु भय, रोग भय आदि सभी शून्य हो जाते हैं।

इस यंत्र को किसी सोमवार के दिन पीले कागज अथवा कपड़े पर लाल स्थाही से अंकित करें। यंत्र में जिस स्थान पर अमुक शब्द आया है, वहां अपना नाम लिखें। यदि यह प्रयोग आप किसी अन्य के लिए कर रहे हों, तो उसका नाम लिखें। यत्र के चारों कोनों पर त्रिशूल अंकित है, वह प्रतीक है इस बात का कि चारों दिशाओं से भगवान शिव साधक की रक्षा कर रहे हैं। यंत्र के चारों कोनों पर काले तिल की एक-एक ढेरी बनाएं। प्रत्येक ढेरी पर एक-एक 'पंचमुखी रुद्राक्ष' स्थापित करें। ये चार रुद्राक्ष भगवान शिव की चार प्रमुख शक्तियां हैं। इसके पश्चात् 'महामृत्युंजय माला' से निम्न महामृत्युंजय मंत्र की 5 मालाएं सम्पन्न करें -

// ॐ ऋष्मबकं यजामहे सुग्रन्थिं पुष्टिवर्धनं उर्वाकरुकमिव बन्धनान् मृत्योमुक्षीय मामृतात् //

इस मंत्र का 11 दिन तक जप करें, फिर माला तथा चारों रुद्राक्षों को एक काले धागे में पिरोकर धारण कर लें। एक माह धारण करने के बाद महामृत्युंजय माला तथा रुद्राक्ष को जल में विसर्जित कर दें।

यह दुर्लभ उपहार तो आप पत्रिका का वार्षिक सदस्य अपने किसी मित्र, रिश्तेदार या स्वजन को बनाकर ही प्राप्त कर सकते हैं। यदि आप पत्रिका सदस्य नहीं हैं, तो आप स्वयं भी सदस्य बनकर यह उपहार प्राप्त कर सकते हैं। आप पत्रिका में प्रकाशित पोस्टकार्ड नं. 4 स्पष्ट अक्षरों में भरकर हमारे पास भेज दें, शेष कार्य हम स्वयं करेंगे।

वार्षिक सदस्यता शुल्क - 195/- डाक खर्च अतिरिक्त - 45/- Annual Subscription 195/- + 45/- postage

Fill up and send post card no. 4 to us at :

संस्कृत

मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान, डॉ. श्रीमाली मार्ग, हाईकोर्ट कॉलोनी, जोधपुर 342001, (राजस्थान)

Mantra-Tantra-Yantra Vigyan, Dr. Shrimali Marg. High Court Colony, Jodhpur-342001, (Raj.), India

फोन (Phone) -0291-2432209, 2433623 टेलीफॉक्स (Telefax) - 0291-2432010

नववर्ष के शुभ अवसर पद

गुरु गणेश आला जागरण महाभिषेक दीक्षा

एवं साधना शिविर

पत्रिका के पिछले अंक में आपने पढ़ा कि गुरु द्वारा शिष्य को नववर्ष के शुभारम्भ पर कौन-कौन सी दीक्षाएं प्रदान की गई और प्रत्येक दीक्षा का अपना एक अलग महत्व है। इसी दीक्षा क्रम में विशिष्ट है नवसिद्धि आत्म जागरण महाभिषेक दीक्षा जो इस बार 6-7 जनवरी 2007 को प्रदान की जायेगी। इस सम्बन्ध में यह विवेचनात्मक लेख आपको ज्ञान की उस भावभूमि पर ले जायेगा जहां आप शिष्य बन कर गुरु से शक्तिपात का सहज प्रवाह प्राप्त कर सकते हैं।

सिद्धि शब्द का नाम आते ही प्रत्येक व्यक्ति आश्चर्यचकित काम, अर्थ, अर्थ और अर्थ ने ले लिया है। पारिवारिक हो जाता है और यह विचार करने लगता है कि जीवन में सम्बन्ध दूटते जा रहे हैं। लज्जा शील का स्थान प्रदर्शन ने सिद्धि कैसे प्राप्त हो? वह पुस्तकों में संत, महात्माओं, ऋषियों, ले लिया है। ऐसे युग में प्रदूषित वातावरण में जो कि तन को भी दूषित करता है, मन को भी दूषित करता है और व्यक्ति किस मार्ग पर जाएं जहां उसे अपने जीवन का सही भी अपने जीवन में सिद्धि प्राप्त कर सकता हूँ?

यह तो सत्य है कि हमारे वेद, पुराण, उपनिषद्, संहिता, मीमांसा, श्रीमद्भगवत् गीता इत्यादि में जो वर्णन आया है वह पूर्णतः सत्य है। युग के अनुसार व्यक्ति की मानसिकता बदलती गई। वह मनुष्य से पुनः पशुत्व भाव की ओर जा रहा है जिसमें अनाचार का प्रधान स्थान है। मन की अपेक्षा तन की ओर ज्यादा ध्यान है अर्थात् भीतर की अपेक्षा, बाहर की ओर ज्यादा विचार है। धर्म का स्थान धन ने ले लिया है, कर्तव्य का स्थान अधिकार ने ले लिया है, संतोष का स्थान योग ने ले लिया है, शांति का स्थान बाद्य दिखावे ने ले लिया है, तपस्या का स्थान येन-केन-प्रकारेण अपने वर्चस्व को स्थापित करने की क्रिया ने ले लिया है और सत्य का स्थान असत्य ने ले लिया है, गुरु का स्थान श्रेष्ठ वक्ताओं ने ले लिया है, चमत्कार का स्थान जादूगरों ने ले लिया है, तंत्र का स्थान टोना-टौटकों और मैली विद्या ने ले लिया है, शक्ति का स्थान किसी दूसरे के अधिकार की बलात् प्राप्ति ने ले लिया है। यह वह युग है जहां धर्म, अर्थ काम और मोक्ष की बजाय काम, काम और स्वरूप में, विचार में अथवा एक क्रिया में नहीं बांधी जा

सिद्धि शब्द की व्याख्या कुछ शब्दों में संभव नहीं है। सिद्धि का तात्पर्य है कि अपने मन, तन, प्राण, आत्मा की शक्ति का वह विस्तार कर लेना जिसके द्वारा कार्य सहज रूप से सम्पन्न हो सकें।

सिद्धि का आधार है व्यक्ति की चेतना। शक्ति तत्व जाग्रत करने की क्रिया, पूर्ण योग और श्रेष्ठ गुरु का प्राप्त होना। जब इन सब का समन्वय होता है तो व्यक्ति को नवसिद्धि प्राप्त होती है। उसकी आत्मा में जाग्रत अवस्था आती है। वह योग को समझ लेता है। वह गुरु के सामने नतमस्तक होकर खड़ा हो जाता है तब सिद्धियों के द्वारा खुलते हैं।

इसके पहले यह समझ लेना आवश्यक है कि इन चारों तत्वों का समन्वय कैसे हो और इनका तात्पर्य क्या है?

शक्ति का तात्पर्य

दिव्य शक्ति ऊर्जा तांत्रिक सिद्धान्त के अनुसार किसी एक



सकती। शक्ति तो पृथ्वी की तरह ठोस है, पानी की तरह गतिमान हैं अग्नि की तरह प्रकाशमान हैं, वायु की तरह स्वतंत्र है। शून्य अर्थात् आकाश की तरह अनन्त है। यह तो उन सभी प्राणियों में विचरण करती है। जो इस संसार से सम्बन्ध रखते हैं और उनकी पहचान पर कोई प्रभाव नहीं डालती। शक्ति उसी की हो सकती है जो शक्ति को जानना चाहता है, पहचानना चाहता है उसे अपनी तरफ जाग्रत करना चाहता है। इस संसार में व्यक्तियों के भी भेद हैं। अर्मारी, गरीबी, बीमारी, स्वस्थता, सौन्दर्य, कुरुपता, निर्भयता-भीरुता ये सब प्रवृत्तियां मनुष्य के भीतर की शक्ति स्तर को स्पष्ट करती हैं।

अपने आप को प्रगति के पथ पर ले जाने के लिए तथा पूर्णता प्राप्त करने के लिए व्यक्ति को अपने भीतर एक सकारात्मक विचार को अपनाना चाहिए। अर्थात् जीवन में सदैव सकारात्मक मानसिकता होनी चाहिए। इसी से जीवन को एक विशेष गति प्राप्त होती है और इसी विश्वास के कारण जीवन का एक उद्देश्य और आदर्श प्राप्त होता है।

मनुष्य के जीवन का उद्देश्य है विद्या-शक्ति के गुणों का आश्रय लेकर अविद्यारूपी अंधकार का नाश करना, और अपने भीतर के रजोगुण और तमोगुण पर नियंत्रण रख कर पुनः दिव्यभाव को प्राप्त करना।

यथार्थ में शक्ति-उपासना का तात्पर्य है, प्रकृति के स्वभाव अर्थात् निद्रा, आलस्य, तृष्णा, कामवासना, भ्रान्ति, अज्ञान, मोह, क्रोध पर विजय कैसे प्राप्त की जाय? महिषासुर रूपी राक्षस क्रोध का प्रतीक है, रक्त-बीज रूपी राक्षस काम का प्रतीक है, जितना इसको मिटाने का प्रयास करते हैं, वह पुनः जाग्रत हो जाता है। उपरोक्त सारे दुर्गुणों को अर्थात् अविद्या को नाश करने के लिए शक्ति के गुण सदबुद्धि, बोध, लज्जा, पुष्टि, तुष्टि, शांति, श्रद्धा, कान्ति, सदवृत्ति, धृति, उत्तमम स्फूर्ति, दया, परोपकार आदि गुणों का विकास आवश्यक है।

इस प्रकार मनुष्य जीवन दोनों प्रकार के गुणों का संयोग है। अब जीवन में कौन से गुण उसके उपर हावी होते हैं, और वह विद्या रूपी अवगुणों को शक्ति साधना के द्वारा किस प्रकार से उन्हें मिटा सकता है। यह पुरुष रूपी ब्रह्म और पुरुष रूपी परमात्मा और गुरु के आशीर्वाद से ही संभव है।

शक्ति तत्व का विकास करने के लिए जीवन में योग आवश्यक है। सामान्यतः योग को शारीरिक क्रिया मान लिया गया है। इसमें मनुष्य का दोष नहीं है। वह टी.वी. चैनलों की भरमार में जो योग किया जाता है उसे ही पूर्ण योग मान लेता है। जबकि यह सुविदित तथ्य है कि केवल शारीरिक योग द्वारा पूर्णतया व्याधि, पीड़ा पर काबू नहीं पाया जा सकता और केवल शारीरिक योग द्वारा मन पर नियन्त्रण, आत्मउत्त्वति,

आत्म साक्षात्कार तो संभव ही नहीं है। योग क्या है इस सम्बन्ध में महान् ऋषि पातंजलि ने अष्टांग योग सूत्र संसार के सामने स्पष्ट किया।

महर्षि पातंजलि के अनुसार योग आठ क्रम की प्रक्रिया है। उनका विवेचन निम्न प्रकार से है।

महार्षि पातंजलि का अष्टांग योग

योग के मतानुसार तत्व ज्ञान एवं सिद्धि की प्राप्ति तब तक यहाँ हो सकती है जब तक मनुष्य का चित्त विकारों से परिपूर्ण है। अतः योग-दर्शन में चित्त की स्थिरता को प्राप्त करने के लिए तथा चित्तवृत्ति का निरोध करने के लिए योग मार्ग की व्याख्या हुई है। योगमार्ग की आठ सीढ़ियां हैं -

यमश्च नियमश्चैव आसनश्च तथैव च,
प्राणायामस्तथा गार्जि प्रत्याहारश्च धारणा।
ध्यानं समाधिरेतानि योगज्ञानि वरानन्ते॥
-योगी याज्ञवल्क्य, १/४५

अर्थात् पूर्ण मनुष्य बनकर ज्ञान लाभ करने के लिए अष्टांग योग की साधना आवश्यक है जिसके अंग हैं - यम, नियम, आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार, धारणा, ध्यान, समाधि।

1. यम - बाह्य और आभ्यन्तर इन्द्रियों के संयम की क्रिया को 'यम' कहा गया है। यम पांच प्रकार के होते हैं - अहिंसा, सत्य, अस्तेय (अर्थात् चोरी न करना), ब्रह्मचर्य, अपरिग्रह।

2. नियम - नियम का अर्थ है सदाचार को प्रश्रय देना। नियम के भी पांच अंग हैं - शौच (शुद्धता), संतोष, तपस्, स्वाध्याय, ईश्वर प्रणिधान (अर्थात् ईश्वर के प्रति हृदय से अनुरक्त)।

3. आसन - आसन का अर्थ है शरीर को विशेष मुद्रा में रखना। पातंजलि योग सूत्र में आता है - 'स्थिर सुखासनम्' अर्थात् स्थिर भाव में सुख पूर्वक बैठने का नाम आसन है। योगासन द्वारा शरीर स्वस्थ भी रहता है, जो कि योगाभ्यास के लिए आवश्यक है।

4. प्राणायाम - पातंजलि योग सूत्र के अनुसार 'श्वास प्रश्वास योगतिर्विच्छेदः प्राणायाम' अर्थात् श्वास प्रश्वास दोनों की गति को संयंत करना प्राणायाम कहलाता है। प्राणायाम शरीर और मन को दृढ़ता प्रदान करता है। कुंभक, रेचक, पूरक आदि इसके अंग हैं।

5. प्रत्याहार - प्रत्याहार का अर्थ है - अपनी पांचों ज्ञानेन्द्रियों को वश में रखना; उन्हें रूप, रस, गंध, स्पर्श और शब्द के लोभ मोह में न फँसने देना।

6. धारणा - धारणा का अर्थ है - चित्त को अभीष्ट विषय पर जमाना। धारणा आंतरिक अनुशासन की पहली सीढ़ी है।

7. ध्यान - ध्यान का अर्थ है - अभीष्ट विषय पर निरन्तर अनुशीलन।

8. समाधि - इस अवस्था में ध्यान की वस्तु अभीष्ट आराध्य अथवा व्यक्ति अर्थात् ध्येय की ही चेतना रहती है। यह एक उन्मनी अवस्था होती है, जिसमें मन अपने ध्येय विषय में पूर्णतः लीन हो जाता है।

इस अवस्था की प्राप्ति हो जाने पर 'चित्त वृत्ति का निरोध' हो जाता है, जो कि पातंजलि योग दर्शन का उद्देश्य है।

सामान्य मनुष्य अपने जीवन में सिद्धियां प्राप्त करने के लिये साधनाएं करता है और साधनाओं में सफलता भी प्राप्त होती है। योग मार्ग के अनुसार साधनाओं से जो सिद्धियां प्राप्त होती हैं उन्हें गौण सिद्धियां अथवा सांसारिक सिद्धियां कहा गया है।

सिद्धियां - गौण सिद्धियां

शास्त्रीय ग्रंथों में जिन 15 गौण सिद्धियों का वर्ण किया गया है, वे इस प्रकार हैं -

अनुर्मिमत्वं देहेऽस्मिन्दूर श्रवण दर्शनम्।
मनोजवः कामरूपं परकाय प्रवेशनम्॥
स्वच्छन्दमृत्युर्देवानां सहजक्रीडानुदर्शनम्।
वथा संकल्प संसिद्धिराजा प्रतिहतागतिः॥
त्रिकालज्ञत्वमद्रुन्द्रु परिचितादभिज्ञया
अग्रयकाम्बुविषादीनां प्रतिष्ठेभ्योऽपराजयः॥
एताश्चोदेशत प्रोक्ता योगधारण सिद्धयः।
वथा धारणया या स्याद्यथा वास्याद्विरोध मे॥
अर्थात् 1. क्षुध-पिपासा आदि शारीरिक वेगों पर विजय,
2. दूर श्रवण, 3. दूर दर्शन, 4. मन की गति से गमन, 5. इच्छानुरूप रूप धारण की क्षमता, 6. परकाया प्रवेश, 7. स्वेच्छा मृत्यु, 8. देवताओं की क्रीड़ा के दर्शन, 9. संकल्प सिद्धि, 10. लोकान्तरों में भ्रमण की शक्ति, 11. त्रिकालज्ञता, 12. निर्दन्धता, 13. दूसरों के चित्त की बात जान लेना, 14. अग्नि, सूर्य, जल, विष, आदि की शक्ति को बांध देना तथा 15. अजेय हो जाना - ये 15 गौण सिद्धियां हैं, जो सत्त्व गुण के उत्कर्ष से प्राप्त होती हैं।

'दूर श्रवण' और 'दूर दर्शन' की सिद्धियां प्रायः चमत्कृत कर देने वाली होती हैं। 'दूर श्रवण' की सिद्धि द्वारा ब्रह्माण्ड के किसी भी कोने में गुञ्जरित ध्वनि को योगी सुन सकता है

तथा दूर दर्शन की सिद्धि में ब्रह्माण्ड में कहीं भी घटित हो रही घटना का योगी साक्षात्कार कर सकता है।

‘नाद चिन्तन’ तथा ज्योति त्राटक से दूर श्रवण और दूर दर्शन की सहज ही सिद्धि हो जाती है। कुछ तांत्रिक ‘कर्ण पिशाचिनी सिद्धि’ अथवा ‘यक्षिणी सिद्धि’ के द्वारा भविष्य कथन करते हैं।

‘मन की गति से गमन’ हिन्दू धर्म शास्त्रों का एक सिद्धान्त है, जैसे विज्ञान के क्षेत्र में ‘प्रकाश की गति से गमन’ एक सिद्धान्त है।

प्रकाश से भी अधिक तीव्र गति मन की होती है। इस गति से गमन करने से शरीर गायब हो जाता है। योगी इस गति से गमन कर सकते हैं और अदृश्य हो सकते हैं।

‘प्रकाश प्रवेश’ को शास्त्रों में अधिक महत्व नहीं दिया गया है, किन्तु तांत्रिक इसे महायोग की संज्ञा देते हैं। योगी जब किसी दूसरे शरीर में प्रविष्ट होना चाहता है, तो अपने मन-प्राण को भूमध्यस्थ आज्ञा चक्र में स्थित कर देता है, फिर दूसरे शरीर में अपनी आत्मा की भावना करते हुए अपनी देह से प्राण वायु और सूक्ष्म शरीर का विसर्जन कर अन्य शरीर में प्रविष्ट हो जाता है।

सिद्धियों के साम्राज्य का प्रवेश द्वार है - संकल्प। संकल्प स्थिर होता है श्रद्धा की धरती पर। बिना श्रद्धा के संकल्प नहीं हो सकता और बिना संकल्प के सिद्धि नहीं हो सकती।

ध्यान की अवस्था में विचारों को केन्द्रित कर संकल्प सिद्धि की चेष्टा की जाती है। इससे स्वेच्छा मृत्यु भी सिद्ध हो जाती है, योगी अपने शरीर का त्याग अपनी इच्छा से ही करता है, यदि वह चाहे तो अमर जीवन भी प्राप्त कर सकता है।

सिद्धियों के संसार में ‘त्रिकालदर्शी होना’, ‘प्रत्येक परिस्थिति में समान रहना’, ‘दूसरों के मन की बात जान लेना’ और ‘किसी से पराजित न होना’ जैसी सिद्धियों को भगवद्भक्ति से प्राप्त किया जा सकता है, क्योंकि भक्ति में सत्त्व गुण की प्रधानता होती है। किसी भी माध्यम से हो, मन जब लयावस्था को प्राप्त होता है, तो इस प्रकार की सिद्धियां प्रकट होने लगती हैं।

सिद्धियों का सम्बन्ध सीधे ईश्वरत्व से जोड़ा जाता है, क्योंकि सामान्य मनुष्यों में ऐसी क्षमता नहीं होती कि वे सिद्धियों को प्राप्त कर सकें। निश्चित रूप से संतों, महात्माओं, कृषि मुनियों के जीवन में ईश्वरत्व अवतरित हो

जाता है, तभी तो उनके माध्यम से भी सिद्धियों का परिचय मिल जाता है। सामान्यतः छोटी-मोटी सिद्धियों को तो मनुष्य साधनाएं सम्पन्न कर प्राप्त कर भी सकता है, किन्तु पुराण-ग्रंथों में जिन अष्ट महासिद्धियों का वर्णन किया जाता है, वे सामान्य कल्पना से परे हैं।

सिद्धियों के सम्बन्ध में कहा गया है -

जन्मौषधितयो भूत्रैर्यावतीरिह स्त्रियः ।
योजेन्नाम्नोति ताः सर्वन्नाम्न्यैर्योजगति ब्रजेत् ॥

सिद्धियों जन्मजात भी होती हैं और तपश्चर्या, मंत्र साधना तथा औषधियों के प्रयोग से भी प्राप्त होती हैं। जिन्हें जन्मजात सिद्धियों मिलती हैं, उनके पूर्वजन्म की साधनाएं फलीभूत होती हैं और वे जन्म से ही सिद्धियों के स्वामी हो जाते हैं। किसी कारणवश ऐसे लोगों को जब पुनर्जन्म ग्रहण करना पड़ता है, तब साधनाओं के द्वारा पूर्व जन्म में जो शक्ति वे सञ्चित किये रहते हैं, उनका पुनर्जन्म में भी प्रतिफलन हो जाता है।

हिन्दू धर्म साधनाओं के क्षेत्र में अष्ट महासिद्धियों तथा 15 गौण सिद्धियों पर प्रकाश डाला गया है। अष्ट महासिद्धियों में ‘ईश्वरत्व’ की प्राधनता होती है, जबकि 15 गौण सिद्धियां मनुष्यों को सत्त्वगुण के उत्कर्ष से प्राप्त होती हैं।

जिन अष्ट महासिद्धियों का ऊपर उल्लेख किया गया है, उनका कर्माकरण इस प्रकार किया गया है -

अणिमा महिमा भूतैर्लघिमा प्रासिरिन्द्रवैः ।
प्रकाम्यं श्रुतदृष्टेशु शक्तिप्रेरणमीशिता ॥
युणेष्वसंगो वशिता यत्कामस्तदवस्यति ।
एता मे सिद्धयः सौम्य अष्टावौत्पत्तिका मत्ता ॥

1. अणिमा - अर्थात् मन जब परमाणु ईश्वर का चिन्तन करता है, तो उसे अणिमा की सिद्धि प्राप्त हो जाती है।

2. महिमा - महिमा की जब सिद्धि मिल जाती है, तो योगी अपने शरीर को आकाश की तरह विराट कर सकता है।

3. लघिमा - लघिमा सिद्धि प्राप्त होने पर व्यक्ति कोई भी रूप धारण कर सकता है, आकाश की तरह फैल सकता है, एक स्थान पर रहते हुए दूसरे स्थान पर आ सकता है, अदृश्य होने की सिद्धि भी मिल जाती है। योगी अपने एक रूप को अनेक रूपों में प्रकट कर सकता है।

4. प्रासि - सूक्ष्म शरीर का परिचालन होता है। योगी का स्थूल शरीर तो एक स्थान पर स्थित होता है, किन्तु अपने सूक्ष्म शरीर से वह कहीं भी गमन कर सकता है तथा वहाँ की

वस्तु को कहीं भी पहुंचा सकता है।

5. प्राकट्य - पंचम महासिद्धि प्राकट्य है, इस सिद्धि को प्राप्त योगी लौकिक अथवा परालौकिक समस्त प्रदार्थों को इच्छानुरूप अनुभव कर सकता है।

6. ईशिता - इस सिद्धि को प्राप्त करने वाला योगी कभी भी कोई भी रूप धारण कर सकता है। वह योगी अपनी इच्छा से, अपने संकल्प मात्र से जैसा चाहे, वैसा शरीर निर्माण कर लेता है, कभी देवता होकर स्वर्ग की यात्रा करता है, तो कभी यक्ष हो कर अंतरिक्ष का सञ्चरण करता है अथवा मनुष्य रूप में पृथ्वी पर निवास करता है।

7. वशिता - वशिता अर्थात् वशीकरण सिद्धि है, जिसमें चेतना ऊर्ध्वमुखी होकर विकास के चरम शिखर पर पहुंच जाती है। ऐसी अवस्था में सजीव क्या, निर्जीव पदार्थ भी योगी के वश में हो जाते हैं।

8. प्राकाम्य - अष्ट महासिद्धियों में अंतिम है 'प्राकाम्य', इसे प्राप्त करने के लिए निर्गुण ब्रह्म की धारणा करनी पड़ती है। इससे समस्त कामनाओं का अंत हो जाता है तथा योगी को मोक्ष सुलभ हो जाता है।

देवताओं को सिद्धि युक्त क्यों कहा जाता हैं?

सद्गुरुदेव ने अपने कई प्रवचनों में कहा कि मनुष्य जन्मजात देवता अथवा पूजनीय नहीं होता। देवता या महापुरुष कोई भी हो, राम हो, कृष्ण हो, वेदव्यास हो, परशुराम हो अथवा ऋषियों में अंगिरा अगत्स्य, विश्वामित्र, वाल्मीकि, वशिष्ठ, भारद्वाज, याज्ञवल्क्य अथवा कोई अन्य महापुरुष हो, इन सब ने अपने जीवन में विशेष साधनाएं कीं और साधनाओं से भी आगे बढ़ कर गुरु से ज्ञान प्राप्त हुआ। राम को पूर्ण ज्ञान विश्वामित्र और वशिष्ठ से प्राप्त हुआ। कृष्ण को पूर्ण ज्ञान सांदीपन द्वारा हुआ। वेद व्यास को पूर्ण ज्ञान गौड़ पादाचार्य द्वारा हुआ। स्वामी दयानन्द सरस्वती को विरजानन्द जी द्वारा ज्ञान प्राप्त हुआ, स्वामी विवेकानंद को स्वामी रामकृष्ण परमहंस द्वारा ज्ञान प्राप्त हुआ।

इससे यह स्पष्ट होता है कि जब गुरु से ज्ञान प्राप्त करते हैं तो शक्तियों का प्रवाह प्रारम्भ हो जाता है और वे उस देवता की आधार शक्तियां समान ही हैं। इन आधार शक्तियों के की आधार शक्तियां बन जाती हैं। यदि हम मंत्र महार्णव, मंत्र कारण ही देवताओं को, महाविद्याओं को सर्वपूज्य माना जाता



महोदधि, माहेश्वरी तंत्र इत्यादि ग्रंथों का अध्ययन करें तो यह स्पष्ट होता है कि किन-किन देवताओं की कौन-कौन सी आधार शक्तियां हैं।

विष्णु - विमला, उत्कर्षण, ज्ञान, क्रिया, योग, प्रवाह, सत्य, उग्रान शक्ति।

गणपति - तीव्रा, चालिनी, नन्दा, भोगदा, कामरूपिणी, उग्रा, तंत्री, सत्या एवं विघ्ननाशिनी शक्ति।

महाकाली - जया, विजया, अपराजिता, नित्या, विलासिनी, दोष्डी, अघोरा एवं मंगला शक्ति।

लक्ष्मी - विभूति, उत्त्रति, कान्ति, सौष्ठद्ये, कीर्ति, सन्नति, व्युत्पत्ति, उक्तृष्टि एवं ऋष्टि शक्ति।

धूमावर्ती - कामदा, मानदा, नक्ता, मधुरा, नर्मदा, भोगदा, नन्दा, प्राणदा।

इस विवेचन से यह स्पष्ट होता है कि सारे देवी देवताओं तो शक्तियों का प्रवाह प्रारम्भ हो जाता है और वे उस देवता की आधार शक्तियां समान ही हैं। इन आधार शक्तियों के की आधार शक्तियां बन जाती हैं। यदि हम मंत्र महार्णव, मंत्र कारण ही देवताओं को, महाविद्याओं को सर्वपूज्य माना जाता

है। मूल रूप से इन महाविद्याओं की साधना करने के पीछे यही उद्देश्य है कि इन आधार शक्तियों को प्राप्त किया जाये।

साधक को साधना में सिद्धि प्राप्त होती है तो वह इन आधार शक्तियों के कारण ही प्राप्त होती है। अब प्रश्न उठता है कि किस-किस देवता की साधना की जाये, किस महाविद्या की साधना की जाय जिससे यह आधार शक्तियां प्राप्त हो? साधक को सिद्धि प्राप्त हो। साधकगण में आत्म जागरण की क्रिया प्रारम्भ हो, वे अपने भौतिक जीवन के साथ-साथ आध्यात्मिक जीवन में भी पूर्ण सफलता प्राप्त करें इसीलिये सारे शास्त्रों ने सार रूप में एक ही बात कही है कि -

गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णुः गुरुर्देवो महेश्वरः।

गुरुः सरक्षात् परब्रह्म तस्मै श्री गुरवे नमः॥

सद्गुरु और शक्तिपात -

साधक जब शिष्य बनता है तो गुरु से दीक्षा प्राप्त करता है। दीक्षा प्राप्त करने के पश्चात् ही वह अपने जीवन में उच्च कोटि की साधनाओं में प्रवृत्त होकर सिद्धि प्राप्त करता है। (इसके सम्बन्ध में ऊपर विवरण स्पष्ट किया जा चुका है।) गुरु द्वारा जब शिष्य को कृपा पूर्वक दीक्षा प्रदान की जाती है तो क्या क्रिया होती है इसे समझना आवश्यक है।

गुरु के चरणों में तथा अंगुष्ठ में 32 चिन्ह होते हैं। तलवे में 16 चिन्ह भौतिक सुख के हैं, भौतिक इच्छाओं के हैं।

पुण्य, सफलता, श्रेष्ठता, ज्ञान, प्रेम, ऊचा उठने की भावना, अपने आप में विद्वान बनने की क्रिया, समाज में सर्वोपरि और देश में ख्याति, और 16 आध्यात्मिक क्रियाएं भी हैं - इष्ट के साक्षात् दर्शन, मन की पूर्ण शांति आदि। दोनों का समावेश अगर कहीं है तो गुरु के दक्षिण-पैर में है। इसीलिए उस दाहिने पैर की सेवा, अर्चना, सुश्रुषा करना समस्त देवताओं और अपने पितरों, पूर्वजों और वर्तमान में अपने पिता-माता उन सबकी पूजा करने और उनको पूर्णता देने के बराबर है।

इसी प्रकार मनुष्य के आज्ञा चक्र में 32 बिन्दु होते हैं इनमें 16 भौतिक जीवन के तथा 16 बिन्दु आध्यात्मिक होते हैं।

गुरु का कार्य अपने शिष्य के भौतिक जीवन, भौतिक पक्ष को मजबूत बनाना तो है ही है, इसके साथ-साथ आध्यात्मिक पक्ष को भी निरन्तर उन्नत करना आवश्यक है जिससे वे आत्मसाक्षात्कार कर सकें। अपने आपको पूर्ण रूप से समझ सकें। जीवन की गति को समझ सकें, जीवन की गति को सही दिशा में ले जा सकें। इन सब के साथ साथ

वे स्वयं में सिद्धियों के स्वामी बन सकें। सद्गुरु कभी नहीं चाहते कि उनके शिष्य दास बन कर जीवन व्यतीत करें। गुरु तो प्रत्येक शिष्य को अपने जैसा ही बनाना चाहते हैं। इसके लिये वे विभिन्न क्रियाएं करते ही रहते हैं।

इस बार आरोग्यधाम दिल्ली में दो दिन के विशाल शिविर में यही महान् दीक्षा शक्तिपात के माध्यम से प्रदान की जायेगी और इस दीक्षा के साथ-साथ क्या साधना आवश्यक है, जीवन को नये सिरे से किस प्रकार चलाना है, पुराने कूड़े-करक को हटाना, जीवन में छाये हुए अंधकार को समाप्त करना है, क्योंकि गुरु का कार्य ही शिष्य के अंतः चक्षुओं को जाग्रत कर अंधकार का नाश करना है। इसी क्रिया के माध्यम से शिष्य स्वयं ज्योतिर्मय हो सकता है, अपने मन, प्राण, आत्मा को जाग्रत कर सकता है।

इस क्रिया की विराटता को कुछ शब्दों में बांधना संभव नहीं है। लेकिन एक बात कहनी आवश्यक है कि आप शिष्य हैं तो इस साधना शिविर में अवश्य आयेंगे और नये वर्ष के साथ-साथ अपने जीवन में भी एक नवीनता लायेंगे। प्रत्येक शिष्य को गुरु के साथ कदम मिलाकर आगे बढ़ना है। गुरु ने आपका हाथ थामा है और गुरु आपके जीवन को शक्ति सम्पन्न, सिद्धि युक्त, प्रज्ञा पुरुष बनायेंगे ही, यह गुरु का वादा है। आवश्यकता है शिष्य के संकल्प और श्रद्धा की।

- जय गुरुदेव।

इन नववर्ष के प्राकृत्य में ऐसी ही नहान् क्रिया आपके जीवन में अनपन्न हो सकें। इसके लिये आवश्यकता है गुरु के प्रति पूर्ण कृत्य निष्ठा, श्रद्धा और विश्वास के दिनांक 06-07 जनवरी 2007 को नावायण शक्ति क्षेत्र आकोर्ड धान दिल्ली में आप आयें और आपको "नवसिद्धि आत्म जागरण नहाभिषेक दीक्षा एवं साधना शिविर" में सम्मिलित हों। इस हेतु आपको संलग्न प्रपत्र भव अव ब्रेजना है। आपका हृदय के क्षयागत है।

नवसिद्धि आत्म जागरण महाभिषेक दीक्षा एवं साधना शिविर

पांच मित्रों के नाम :-

1. नाम
पूरापता

2. नाम
पूरापता

3. नाम
पूरापता

4. नाम
पूरापता

5. नाम
पूरापता

उस यशस्वी साधक का नाम जिसने पांच सदस्य बनाकर दीक्षा में भाग लेने की पात्रता प्राप्त की है।

नाम
पूरापता

विशेष - जो साधक पत्रिका के पांच नए सदस्य (जो आपके परिवार जन न हों) बनाएगा, उसे ही यह गुरु कृपा प्रदत्त नवसिद्धि आत्म जागरण महाभिषेक दीक्षा उपहार स्वरूप निःशुल्क प्रदान की जाएगी। पांच मित्रों के पूर्ण प्रामाणिक पते, जिन्हें आप पत्रिका सदस्य बनाना चाहते हैं, इस प्रपत्र में लिखकर जोधपुर के पते पर भेज दें।

प्रपत्र के साथ रुपये 1200/- ($(195+45)=240 \times 5 = 1200$) का बैंक ड्राफ्ट या मनीऑर्डर की रसीद प्रपत्र के साथ भेज दें, जिससे कि आपका स्थान इस महत्वपूर्ण समारोह हेतु आरक्षित किया जा सके।

सम्पर्क: सिद्धाश्रम, 306, कोहाट एन्कलेव, पीतमपुरा, नई दिल्ली-14,

फोन: 011-27352248, टेली फैक्स: 27356700

दीक्षा ज्ञानस्य पूर्णित्वं

‘दीक्षा’ जीवन की परिपूर्णता का सर्वोच्च शिखर है, पूर्णता है, श्रेष्ठता है, दिव्यता है, तेजस्विता है और जीवन को अद्वितीय बनाने की सफल छलांग है।

जो आश्रय को कोसते रहते हैं, जो प्रवत्नशील नहीं है, वे कुछ भी नहीं कर सकते हैं, खाली हाथ आते हैं और जीवन में एड़ियां रगड़ते हुए खाली हाथ मर जाते हैं।

पर यह कायरता है, बुजदिली है, न्यूनता है, जो हिम्मत कर समुद्र के बीचों-बीच छलांग लगा देते हैं, वही मोती चुन कर लाते हैं, पर जो कायर हैं, डरपोक हैं, सिवकर्कों को छाती से चिपकाये रहते हैं, उनके हाथ में घोंघे और पत्थर ही आते हैं, उनके हाथ मोतियों से भरे नहीं होते।

पर जो त्याग कर सकते हैं, श्रद्धा और समर्पण के सहारे गुरु चरणों को आंसुओं से झिगो देते हैं, वे ही जर्से आसमान तक पहुंच सकते हैं, हिमालय के गौरी शंकर पर, उवरेस्ट पर पांव रख सकते हैं और तब पूरा संसार उसके व्यक्तित्व की ओर टकटकी लगा कर देखने के लिए विवश हो जाता है।

और यह सब कुछ सम्भव है - विशेष दीक्षा के माध्यम से -

- | | |
|-----------------------------------|----------------------------------|
| ★ नुक दीक्षा | ★ साधना सफलता दीक्षा |
| ★ राजयोग दीक्षा | ★ आव्योदय दीक्षा |
| ★ कायाकल्प कुण्डलिनी जागरण दीक्षा | ★ सर्व बाधा निवारण दीक्षा |
| ★ रसैश्वरी दीक्षा | ★ आरोग्य दीक्षा |
| ★ पूर्व जन्म दर्शन दीक्षा | ★ द्यन्वन्तरी दीक्षा |
| ★ पूर्व जन्म शापोद्धार दीक्षा | ★ व्यापार वृद्धि दीक्षा |
| ★ ध्यान सिद्धि दीक्षा | ★ राज्य बाधा निवारण दीक्षा |
| ★ क्रियमाण दीक्षा | ★ महालक्ष्मी दीक्षा |
| ★ आत्मसम्मीहन दीक्षा | ★ त्रैण मुक्ति दीक्षा |
| ★ त्रिनैत्र जागरण दीक्षा | ★ आकस्मिक धन प्राप्ति दीक्षा |
| ★ रत्न कण-कण नुक स्थापन दीक्षा | ★ रौम-रौम नुक स्थापन दीक्षा |
| ★ देवत्व आहवान दीक्षा | ★ निष्ठाश्रम दीक्षा |
| ★ वर्भस्थ शिशु चैतन्य दीक्षा | ★ सहस्र चैतन्य दीक्षा |
| ★ नुक तत्व पूर्णाभिषेक दीक्षा | ★ पूर्ण ब्रह्माण्ड दीक्षा |
| ★ जीवन मार्ग दीक्षा | ★ पूर्वजन्मकृत दौष निवारण दीक्षा |
| ★ शास्त्रवी दीक्षा | ★ विशेष शक्तिपात दीक्षा |
| ★ मनोवाञ्छित कार्य सफलता दीक्षा | ★ दस महाविद्या दीक्षा |

दीक्षा गुरु उवं शिष्य के मध्य सम्बन्ध सूत्र है, गुरु शक्ति का संचरण है शिष्य के श्रीतर, ... गुरु की कृपा और शिष्य की श्रद्धा इन दो पवित्र धाराओं का संगम दीक्षा है।

दीक्षा शब्द दान और क्षेप इन दो शब्दों के सहयोग से बना है दान अर्थात् गुरु द्वारा प्रदान की गई शक्ति उवं क्षेप अर्थात् शिष्य के विकारों का नाश वही दीक्षा का मूल अर्थ है।



उच्चकोटि के
साधक, तांत्रिक, शिष्य साधना करते हैं
गुप्त नवरात्रि में
इस बार आपके लिये

वांश्रोत प्राणतोषिणी अनुष्ठान

जो प्राणों में शक्ति वला प्रवाह भर लेता है

सामान्य शास्त्रों में नवरात्रि पर भगवती दुर्गा के पूजन का विधान नौ दिनों तक आया है और अधिकांश साधक चैत्र और आश्विन मास में यह अनुष्ठान सम्पन्न करते हैं, विभिन्न प्रकार की शक्ति साधनाएं सम्पन्न करते हैं, लघु प्रयोग सम्पन्न करते हैं। लेकिन गुप्त नवरात्रि में विशेष साधनाएं ही सम्पन्न की जाती हैं। ऐसी साधनाएं जो उच्चकोटि के साधक कर सकते हैं, जिन साधनाओं का संबंध तंत्र से होता है, पूरे परिवार की रक्षा से होता है, ऐसी साधनाएं जो कुण्डलिनी जागरण में सहायक सिद्ध होती है, प्राण तोषिणी साधना का विधान तो अनोखा है ही, इसके साथ विशेष बात यह है इसका प्रभाव तुरन्त प्राप्त होता है, इस बार संकल्प लेकर पूरे परिवार के लिए सम्पन्न करें, प्राण तोषिणी अनुष्ठान -

शक्ति उपासना का तात्पर्य है, प्रकृति के स्वभाव अर्थात् किया जाता है। इस हेतु रुद्रायमल तंत्र में भगवान शिव ने निद्रा, आलस्य, तृष्णा, कामवासना, भ्रान्ति, अज्ञान, मोह, क्रोध, काम पर विजय कैसे प्राप्त की जाय? महिषासुर रूपी राक्षस क्रोध का प्रतीक है, रक्त बीज रूपी राक्षस काम का प्रतीक है, जितना इसको मिटाने का प्रयास करते हैं, वह पुनः जाग्रत हो जाता है। उपरोक्त सारे दुर्गुणों को अर्थात् अविद्या को नाश करने के लिए शक्ति के गुण सद्बुद्धि, बोध, लज्जा, पुष्टि, तुष्टि, शांति, श्रद्धा, कान्ति, सद्वृत्ति, धृति, उत्तम स्फूर्ति, दया, परोपकार आदि गुणों का विकास आवश्यक है।

नवरात्रि पर्व तो अपने स्वरूप को लघुतम से विराट की ओर ले जाने की प्रक्रिया है क्योंकि भगवती के स्वरूप में ही सब कुछ विद्यमान है इसलिए इन दिनों सच्चिदानन्द स्वरूप मां भगवती विभिन्न स्वरूपों की साधना आराधना, पूजा, श्रवण, कथा स्तवन, भजन, कीर्तन, गायन, नृत्य उल्लास सम्पन्न

त्रिकालं यो नरः कुर्याद् दुर्गायाः पुरतो नृप नृत्यं गीतं च वादित्रं तस्य पुण्यफलं क्षणु यावन्त्यब्दान्हिकुरुते गीतं नृत्यं च वादितम् तावत्कल्पान्हि राजेन्द्र देवीलोके सुखं वरेत्

जो दुर्गा के सम्मुख तीनों काल में नृत्य, गायन और वादन का आयोजन करता है वह उतने ही कल्प तक मां भगवती की कृपा से देवी लोक में सुखपूर्वक निवास करता है।

आगे रुद्रायमल तंत्र में लिखा है कि नवरात्रि से बढ़कर तो कोई पर्व नहीं है। जो पुण्य सैकड़ों यंज्ञा तीर्थ और दान से भी प्राप्त नहीं होता वह नवरात्रि में मां दुर्गा के पूजन से, साधना से प्राप्त होता है।

सद्वायमल तत्र में लिखा है कि -

सर्वे विद्जना विनश्यन्ति शतचण्डी विधोः कृते
रोगाणां भवान्या वा प्रसादाद्विकटे शुभम्।
एवं कृते जगद्रश्यं सर्वे नश्यन्त्युपद्रवाः
राज्यं धनं वशः पुत्रानिष्टमन्यल्लभेत सः॥

जो साधक नवरात्रि में दुर्गा का अनुष्ठान विधि पूर्वक करता है उसके सारे विघ्न शांत हो जाते हैं, रोगों और बैरियों का नाश हो जाता है, धन और समृद्धि बढ़ती है, शंकर और भवानी के प्रसाद से सुख निकट आते हैं, उपद्रव नष्ट होते हैं, राज्य, धन, पुत्र, यश अथवा अन्य जो भी अभीष्ट होता है वह साधक को मिलता ही है।

गुप्त नवरात्रि

नवरात्रि पर्व शक्ति आराधना का पर्व है। यह शक्ति प्रब्रह्म सामान्य जन में बसन्त क्रतु पूर्ण होने पर बसन्तीय नवरात्रि तथा शरद क्रतु में शारदीय नवरात्रि के रूप में सम्पन्न किया जाता है, लेकिन वास्तव में पूरे वर्ष में चार नवरात्रि आती है। प्रकट नवरात्रि चंत्र और आश्विन मास में आती है। गुप्त नवरात्रि आषाढ़ शुक्ल पक्ष और माघ शुक्ल पक्ष से प्रारम्भ होती है।

मूल रूप से गुप्त नवरात्रि ऐसे साधकों के लिए होती है जो साधना पर्व को उत्सव के रूप में कम और साधना कल्प के रूप में ज्यादा विचार कर उन दिनों विशेष साधनाएं सम्पन्न करते हैं। उच्चकोटि के योगी, संन्यासी बसन्त नवरात्रि और शारदीय नवरात्रि में जहां आमजन के बीच रहकर उत्सव के साथ ज्ञान प्रदान करते हैं वहाँ गुप्त नवरात्रि में वे स्वयं अपनी साधना में तल्लीन रहते हैं। उस समय उन्हें प्रकृति की तीव्रता भी झेलनी पड़ती है लेकिन वे साधना के द्वारा प्रकृति का प्रभाव अपने ऊपर नहीं पड़ने देते। गुप्त नवरात्रि में बिना प्रचार-प्रसार के स्वयं की आत्मोन्नति के साथ-साथ अपने परिवार के पूर्ण कल्याण और अपनी बाधाओं पर विजय प्राप्त करने के लिए साधना सम्पन्न करता है तो उसमें उसे सफलता अवश्य ही प्राप्त होती है।

इस गुप्त नवरात्रि के अवसर पर साधकों को विशेष प्राण तोषिणी साधना दी जा रही है। यह शक्ति साधना अपने मन, प्राण में नवानन्ता भरने वाली साधना है। यह साधना कुण्डलिनी जागरण की साधना है। सबसे विशेष बात यह है कि यह साधना भगवती दुर्गा की अष्ट विशिष्ट शक्तियां ब्राह्मी, महेश्वरी, कौमारी, वैष्णवी, वाराही, इन्द्राणी, चामुण्डा, और महालक्ष्मी को अपने भातर धारण करने की साधना है जिसके

प्राण तोषिणी अनुष्ठान कुण्डलिनी जागरण की वाध्यता है। यह आध्यता भगवती दुर्गा की अष्ट विशिष्ट शक्तियां ब्राह्मी, महेश्वरी, कौमारी, वैष्णवी, वाराही, इन्द्राणी, चामुण्डा, और महालक्ष्मी को अपने भीतर धारण करने की वाध्यता है। जिथके माध्यम से जीवन में एक रक्षात्मक वातावरण उत्पन्न हो जाता है। साधक पर विपरीत शक्तियां प्रहार ही नहीं कर सकती क्योंकि गुप्त नवरात्रि की साधना में क्रतु प्रभाव से व्यक्ति अपने घर में ही एकान्त में साधना सम्पन्न करता है। प्रकट नवरात्रि की तरह उसे कोई मेला उत्सव, ध्यान से विचलित नहीं करता। इस समय एकाग्र चित्त होने की शक्ति भी विशेष बढ़ जाती है। ऐसी नवरात्रि में साधना करना पूरे परिवार के लिये सौभाग्य का अवसर है।

प्राणतोषिणी अनुष्ठान

यह बात अच्छी तरह से समझ लीजिये कि भोग के द्वारा केवल रोग की ही प्राप्ति हो सकती है, परन्तु साधना के द्वारा जीवन की पूर्णता और असीम आनन्द की अनुभूति एवं प्राप्ति संभव है।

‘प्राणतोषिणी अनुष्ठान’ अत्यन्त सरल एवं सुविधाजनक है और कोई भी साधक इस प्रकार का अनुष्ठान सम्पन्न कर सकता है। द्वितीय गुप्त नवरात्रि माघ शुक्ल पक्ष 19 जनवरी 2007 से 27 जनवरी 2007 तक है। प्रतिपदा क्षय है अतः माघ कृष्ण अमावस्या 19 जनवरी 2007 से ही नवरात्रि प्रारम्भ हो रही है।

पत्रिका पाटकों के लिए इस दुर्लभ अनुष्ठान को मैं आगे की पंक्तियों में स्पष्ट कर रहा हूँ और मेरी राय में प्रत्येक साधक को यह अनुष्ठान पूर्णता के साथ सम्पन्न करना ही चाहिए -

साधना विधान

प्रत्येक परिवार के मुखिया को चाहिए कि वे सूर्योदय से पहले उठ जायें और अपने परिवार के अन्य सदस्यों को भी जगा दें, फिर सभी स्नान आदि से निवृत्त होकर सुन्दर और उत्तम वस्त्र धारण करें। इसमें किसी भी प्रकार के वस्त्र धारण किये जा सकते हैं। इसके बाद दरी या जाजम बिछा कर अकेले या अपनी पत्नी के साथ बैठ सकते हैं। ज्यादा अच्छा

तो यह होगा कि पूरा परिवार एक साथ बैठे।

यह प्रयत्न होना चाहिए कि जिस समय भगवान् सूर्य अपनी पहली किरण से संसार को प्रकाशवान् करते हैं, उसी समय यह प्रयोग प्रारम्भ किया जा सकता है। अतः सूर्योदय से 9 बजे के बीच साधना के लिए बैठ जाना चाहिए।

इसके अतिरिक्त सामने जलपात्र, केशर, नारियल, पुष्प, फल और प्रसाद आदि पहले से ही मंगाकर रख लेने चाहिए, साथ ही साथ 'रक्षात्मक प्राण तोषिणी माला' भी अपने सामने किसी पात्र में रख देनी चाहिए। यह माला विशेष मंत्रों से गुंथा हुई होती है, और अपने आपमें अत्यन्त महत्वपूर्ण माला कही जा सकती है। पूरे वर्ष परिवारिक सुख, शांति, उन्नति और परिवार की, पूर्ण रक्षा की दृष्टि से यह प्राण तोषिणी माला अत्यन्त श्रेष्ठ मानी गई है। साधकों को चाहिए कि वे स्वयं तो इस अनुष्ठान के बाद यह माला अपने गले में धारण करें ही पर यदि संभव हो तो परिवार के जितने सदस्य हों, उन सभी सदस्यों के भी गले में एक-एक माला पहना देनी चाहिए जो कि आगे के पूरे वर्ष भर के लिए सभी दृष्टियों से उन्नतिप्रद, स्वास्थ्यप्रद एवं रक्षात्मक होती है।

अधिकतर साधक अपने घर में जितने पुत्र-पुत्रियाँ हैं, उन सबके गले में और अपनी पत्नी तथा अपने स्वयं के लिए इस प्रकार की मालाएं धारण कर लेते हैं।

साधना अनुष्ठान

सबसे पहले साधक अपने सामने किसी पात्र में केशर से स्वस्तिक का चिन्ह बना कर उस पर गणपति को स्थापित करें और उसके बाद स्वयं के ललाट पर केशर का तिलक

करें, साथ ही गणपति के सामने धी का दीपक और अगरबत्ती लगा दें, यदि संभव हो तो दीपक में थोड़ा सा इत्र भी मिला दें।

इसके बाद सामने एक चावलों की ढेरी बना कर उस पर एक कलश स्थापित करें और उसमें दूसरे पात्र में से थोड़ा-थोड़ा जल लेकर निम्न सूर्य और चन्द्रकलाओं का उच्चारण करते हुए डालें -

चन्द्र कलाएं -

1. अमृता, 2. मानदा, 3. पूषा, 4. तुष्टि, 5. पुष्टि, 6. रति, 7. धृति, 8. शशिनी, 9. चन्द्रिका, 10. कान्ति, 11. ज्योत्सना, 12. श्री, 13. प्रीति, 14. अनंगा, 15. पूर्णा, 16. पूर्णामृता।

सूर्य कलाएं -

1. तपिनी, 2. तापिनी, 3. धूमा, 4. मारीचि, 5. ज्वालिनी,

6. रुचि, 7. सुषुम्ना, 8. भोगदा, 9. विश्वा, 10. बोधिनी, 11. धारिणी, 12. क्षमा।

फिर कलश के ऊपर बड़ा या पीपल के पत्ते रख कर उसके ऊपर नारियल रखें और हाथ जोड़कर भगवती प्राण तोषिणी का ध्यान करें -

ध्यान

अकोनमुक्त शशांक-कोटि सदृशीमापीन-तुंग स्तनीम्।
चन्द्राद्वार्द्धकित-मस्तकां मधुमदादातोल-नेत्र त्रयम्।
विभ्राणमनिशं दरं जप वटीं विद्यां कपातं करे।
राघां वौवन गर्वितां लिपि तनुं वाणीश्वरीमाश्रये॥

इसके बाद नारियल हटा कर उस कलश के जल से अपना और अपने परिवार के सभी सदस्यों का अभिषेक करें। अभिषेक का तात्पर्य यह है कि सूर्य और चन्द्र कलाओं से युक्त अमृतमय जल का तीन-तीन आचमन जल घर के सभी सदस्य पिएं जिससे कि आन्तरिक शुद्धि हो सके तथा उस जल को सभी सदस्यों के शरीर पर भी छिड़कें जिससे कि उनका सारा शरीर दिव्य, तेजस्विता युक्त एवं रक्षात्मक बन सके।

इसके बाद कलश को वापिस अपने स्थान पर रख दें, और एक तरफ एक छोटे से पात्र में अपनी कुलदेवी या अपने इष्ट को स्थापित करें। यहां कुलदेव या इष्ट से तात्पर्य है - आप और आपका परिवार जिस देवता को या जिस देवी को मानता है या परम्परा से जिस देवी की पूजा आपके घर में होती है,

उस देवी को या इष्ट को स्थापित कर उनका संक्षिप्त पूजन करें, उनके ऊपर कुंकुम केशर लगावें, पुष्प समर्पित करें और प्रसाद चढ़ावें।

फिर दूसरी तरफ एक अलग पात्र में चावलों की ढेरी बनाकर उस पर सुपारी रख कर 'कुण्डलिनी जागरण यंत्र' को स्थापित करें, कुल कुण्डलिनी का तात्पर्य शरीर के अन्दर स्थित सभी सातों चक्रों का जागरण हो सके और इस प्रकार से इस वर्ष में हमारी जो भी इच्छाएं हों वे पूरी हो सकें, इसलिए इस कुल कुण्डलिनी की स्थापना होती है। ये सातों चक्र निम्नवर्त है -

1. मूलाधार, 2. स्वाधिष्ठान, 3. मणिपुर, 4. अनाहत, 5. विशुद्ध, 6. आज्ञा 7. सहस्रार चक्र।

कुण्डलिनी की स्थापना करने के बाद उस पर कुंकुम केसर, अक्षत, पुष्प आदि समर्पित कर हाथ जोड़ कर उसकी स्तुति करें -

कुण्डलिनी स्तुति

उँ नमस्ते देव देवेशि! योगीश प्राण वल्लभे।
सिद्धिदे! वरदे! मात! स्वयम्भू लिंग-वेष्टिते॥

ॐ प्रसुम भुजंगाकारे! सर्वथा कारण प्रिये!
 काम कलान्विते देवि! ममाभीष्टं कुरुष्व च॥
 ॐ असारे धोर संसारे भव-रोगात् कुत्सेश्वरि!
 सर्वदा रक्ष मां देवि! जन्म संसार सागरात्॥

इसके बाद साधक अपने सामने गुरु के चित्र को किसी पात्र में स्थापित कर संक्षिप्त पूजन करें, साथ ही साथ गुरु चित्र के सामने चावलों की ढेरी बना कर अपने पूर्वजों और क्रषियों का स्मरण करते हुए उनका आह्वान करें, जिससे कि वे पूरे वर्ष भर अपनी तपस्या और शक्ति से आपके जीवन को पूर्णता दे सके।

इन ऋषियों को गुरु चित्र के सामने ही चावलों की ढेरी बना कर निम्न पंक्तियों का उच्चारण करते हुए उनका आह्वान कर स्थापना करें -

ऋषि आवाहन

ब्रह्मा चकाश्यपो विषः सनंकश्च सनन्दनः ।
 सन्त् सनातनी विषी नारदः कपिलस्तथा ॥
 मरिचि अत्रिः पुलह पुलस्त्यो गौतम ऋतुः ।
 भृगुर्दक्षः प्रचेतश्च वशिष्ठो वाल्मीकीस्तथा ॥
 द्वैपायनी भारद्वाजः शुक्रो जेमिनीरेव च ।
 विद्वरथः शुनः शेफो जातु कर्णश्च रौरवः ॥
 और्व सर्वतकः शुक्र सुराचार्यो बृहस्पति ।
 चन्द्र सूर्यो बुधः श्रीमान् वज्र सूत्रस्य ग्रन्थिषु ।
 तिष्ठन्तु मम वामांशे वाम स्कन्धे त्वहर्निशम् ।
 ब्रह्माताः देवताः सर्वा वज्र सूत्रस्य देवता ॥
 इसके बाद अपने गुरु सहित इन सभी ऋषियों का संक्षिप्त
 पजन-जल, कंकम, अक्षत, पृष्ठ और प्रसाद से करें।

इसके बाद एक पात्र में गणपति को स्थापित करें, और उनकी संक्षिप्त पूजा करें तथा उनसे प्रार्थना करें कि वे ऋषि-सिद्धि सहित घर में स्थापित हों और पूरे वर्ष भर जीवन के सभी विघ्नों का नाश करते हए पूर्ण मंगल करते रहें।

साथ ही साथ उनके सामने ही चावलों की आठ ढेरियां बनाएं और इन ढेरियों पर एक-एक सुपारी रखें। इन ढेरियों के सामने 'प्राण तोषिणी माला' रख दें तथा उसका संक्षिप्त पूजन करें। इन पर चावल छिड़कते हुए निम्न अष्टमातुकाओं की स्थापना निम्न मंत्रों का उच्चारण करते हुए करें -

१. बाह्यी

दण्ड कमण्डलु करमक्ष-सूत्राभवं तथा।
विभृती कनकच्छाया ब्राह्मी कणजिनीजवला॥

2. महेश्वरी
शूलं कमलां परशुं लृणां पौतं मनोहरम् ।
वहन्ती हेम संकाश ध्येया माहेश्वरी शुभा॥
 3. कौमारी
अंकुशं दण्ड खद्वांग पाशं च दधती करैः ।
ध्येया बन्धूक संकाशा कौमारी शुभदायिनी॥
 4. वैष्णवी
चन्द्रं घण्टं गदा खड्जं विभ्रतीं सुमनोहरां ।
तमालं श्यामला ध्येया वैष्णवी शुभदायिनी॥
 5. वाराही
मूष्ठलं कर वालं च खेटकं दधती हलम् ।
करं शत्रुभिर्वर्साही ध्येता काल धनच्छविः॥
 6. इन्द्राणी
अंकुशं तोमरं विद्युत कुलिशं विभ्रती करैः ।
इन्द्रनील-निमेन्द्राणी ध्येया सर्व समृद्धिदार॥
 7. चामुण्डा
शूलं कपालं नृ शिरः कपालं दधती करैः ।
मुण्डखड्जमणिडता ध्येया चामुण्डा रक्त विश्रहा॥
 8. महालक्ष्मी
अक्षं स्त्रजं बीजपुरं कमलां पंकजं करैः ।
वहन्ती हेम संकाशं महालक्ष्मी हरि प्रिया॥

प्राण तोषिणी मंत्र

ॐ एं हीं हां हीं हूं हैं हों हः जगन्मातः सिद्धिं देहि
देहि स्वयम्भू लिंगमाश्रितायै विद्युत कोटि-प्रभायै
महा-बद्धि प्रदायै सहस्र-दल जागिर्नयै नमः ॥

उपरोक्त प्राण तोषिणी मंत्र की एक माला नित्य जप करें।
अन्त में साधक अपनी बेटियों और बहुओं को यथोचित उपहार
प्रदान कर उन्हें सन्तुष्ट करें।

इस प्रकार पूरे परिवार सहित प्राणतोषिणी अनुष्ठान सम्पन्न करें और पूज्य गुरुदेव का आशीर्वाद प्राप्त करें कि जीवन का हर दिन नवीन ताजगी लिये हुए उल्लास एवं आनन्द से छलकता हुआ आता रहे।

अतः विशेष साधना सामग्री तो उपहार स्वरूप ही है साथ ही इसके नायन से गुरु कार्य के रूप में आप अपने दो मित्रों को पत्रिका सदस्य बनाएं तथा कार्ड क्रं 6 पर अपने दोनों मित्रों का पता लिखकर ऐजेंज़ कार्ड मिलने पर 490/- की दी.पी.पी. द्वारा आपको इस साधना की मंत्र सिद्ध प्राण प्रतिष्ठायुक्त सामग्री भेज देंगे तथा दोनों मित्रों को एक वर्ष तक जियमित रूप से पत्रिका भेजी जाएगी।



भगवान् सूर्य - हमारे प्रत्यक्ष देव

सूर्य का प्रभाव

सूर्य देव का विविचन

सूर्य की नित्य प्रति उषासना

सूर्योपासना से लाभ

सर्व श्रीराजक्षमती विद्या

प्रत्यक्ष देव सूर्य के बारे में आप जो कुछ जानना चाहते हैं, वह सब विवरण हमने इस लेख में देने का प्रयास किया है, जीवन में तेजस्विता चाहिये और जीवन में रोग मुक्ति श्री चाहिये, सम्मोहन-आकर्षण श्री चाहिये, ग्रहदोष निवारण श्री चाहिये तो उक ही उपाय है, सूर्य की साधना-उपासना

भारतीय सभ्यता और साधना की जन्म स्थली को यदि हिमालय की गोद कहा जाए, तो संभवतः कोई अनुचित कथन नहीं होगा। सुविशाल हिमालय पर्वत की छाया तले बैठकर ही हमारे कृषि-मुनियों ने चिंतन-मनन किया, इसके स्पष्ट प्रमाण हैं। कालांतर में यहाँ से जीवन और ज्ञान की जो धारा बही, वही गंगा एवं यमुना नदी के किनारे-किनारे आर्य सभ्यता के रूप में स्थापित हुई - यह भी एक ऐतिहासिक तथ्य है।

यही कारण है, कि हमारा सम्पूर्ण प्राचीन साहित्य प्रकृति प्रेम से ही भरा हुआ है और उसी की जो सूक्ष्म स्मृतियां आज तक प्रत्येक भारतवासी के मन में हैं, वे उसे सहज ही हिमालय की उपत्यकाओं, गुहाएँ, कंदराओं एवं वनों की ओर आकर्षित करती ही रहती हैं। हिमालय एवं हिमालय के चरण तले स्थित समस्त भूभाग हमारे लिए भूमि का एक टुकड़ा ही नहीं वरन् हमारे पूर्वजों का निवास स्थान, चिंतन-मनन की भूमि होने के कारण यज्ञ स्थल के समान ही पवित्र और श्रद्धा की दृष्टि से देखे जाने योग्य है।

यह तथ्य है कि साधनाओं का जन्म मुख्य रूप से हिमालय की तराई वाले प्रदेश में ही हुआ, इसका प्रबल प्रमाण यह है, कि किसी भी हिन्दू के उत्सव पूर्ण जीवन का दीपावली के उपरांत एक प्रकार से अवसान हो जाता है, जो पुनः माघ माह में पड़ने वाले पर्व मकर संक्रान्ति से जाग्रत हो जाता है।

यद्यपि इन तीन माह में भी वे ऋषि-मुनि सर्वथा प्रसुप्त नहीं हो जाते थे, वरन् आध्यात्मिक जीवन से संबंधित, कुण्डलिनी जागरण से संबंधित उच्चकोटि की गहन क्रियाएं करते ही रहते थे। हिमाच्छादित प्रदेशों में रहने के कारण कार्तिक शुक्ल पक्ष से प्रारम्भ कर प्रायः माघ की अमावस्या तक उनका जीवन प्राकृतिक विसंगति से भरा हुआ होता था तथा माघ माह की शुक्ल पक्ष के आरम्भ के साथ ही साथ शीत की भीषणता में कमी आने से पुनः उनका उल्लास मदता का मूल स्वभाव भी जाग्रत हो उठता था।

इसी तथ्य को इस प्रकार से भी देखा जा सकता है, कि उन्होंने क्रतुओं के जो भेद किए उसमें से अधिकांश शीत क्रतु

के ही विभिन्न भेदों से सम्बन्धित हैं, यथा-ग्रीष्म, वर्षा, हैमंत, ऋतु के उपरांत भगवान् सूर्य के दर्शन हों, तो उनमें नवजीवन और आङ्गोद का संचार हो। यद्यपि ऊपर मैंने ऋतुओं के अनुसार भेद किए हैं, किंतु हमारे पूर्वज जो मुख्यतः प्रकृति पूजक ही थे, उनकी गणना सूर्य की गति से होती थी तथा वे अपनी विशिष्ट गणना पद्धति से यह पूर्वानुमान कर लेते थे, कि कब सूर्य का मकर राशि में संक्रमण होगा और वही अवसर उनके लिए नव वर्ष का होता था।

पूज्यपाद गुरुदेव ने हमारे ऋषि-मुनियों के 'गणना-चिन्तन' क्रम को मुखरित करते हुए यह स्पष्ट किया था, कि वास्तव में मकर संक्रान्ति का पर्व केवल शरद ऋतु के उपरांत आने वाली सुखद ऊष्मा के स्वागत का ही अवसर नहीं है वरन् साधना पर्व भी है, क्योंकि इस दिवस को सूर्य ब्रह्माण्ड में ऐसी स्थिति पर होता है, जिससे साधक किसी भी साधना के द्वारा उसकी तेजस्विता को अपने प्राणों में पूर्णता से उतार सकता है। सूर्य का भारतीय चिंतन में केवल एक ग्रह के रूप में अथवा ज्योतिषीय ढंग से ही महत्व नहीं है वरन् इसे साक्षात् प्राण व आत्मा का ही मूर्तिमंत स्वरूप माना गया है; जिस प्रकार चन्द्रमा को मन का प्रतीक कहा गया है।

वैज्ञानिक जिस सूर्य को अब Solar Energy के अक्षय स्रोत के रूप में देख कर कृतज्ञ हो रहे हैं, भारतीय चिंतन उसे युगों पूर्व ऊर्जा के स्रोत या बिजली बनाने के कारखाने के रूप में देखकर साक्षात् जीवन दाता के रूप में वंदित करता आ रहा है।

उपनिषद् में दृष्टव्य है, कि भगवान् सूर्य से किंचित् गुह्य रूप में भी याचना की गयी है कि वे उसे (अर्थात् साधक को) केवल अपनी प्रखर रश्मियों से दग्ध ही न करें वरन् उसके भीतर समाहित होकर साधक को तेजवान् भी बनायें। उपरोक्त स्तुति में 'ज्योति को पुञ्जीभूत' करने का यही अर्थ है, क्योंकि सूर्य का तेज कभी शांत नहीं हो सकता, किंतु साधक द्वारा उसे समाहित कर लेने के उपरांत वह 'शांत' हो सकता है, तब साधक का व्यक्तित्व भी सूर्यवत् प्रखर हो जाता है।

सूर्य के बिना जीवन की कल्पना ही नहीं की जा सकती, सूर्य ही वह परम तत्व है, जो संसार के समस्त तेज, दीप्ति और कान्ति के निर्माता तथा इस जगत की आत्मा कहे गये हैं। सूर्य ही वह विराट पुरुष, आदि देव हैं, जिनकी साधना-

उपासना से समस्त रोग, नेत्र-दोष और ग्रह बाधा दूर होती है, क्योंकि सूर्य ही अपनी शक्ति न केवल पृथ्वी को अपितु चन्द्र, मंगल, बुध, गुरु, शुक्र, शनि आदि को उचित मात्रा में प्रदान कर इस सृष्टि का संचालन करते हैं।

सूर्य के सम्बन्ध में 'शिव पुराण' में लिखा है, कि -

आदित्यं च शिवं विद्याच्छिवमादित्य रूपिणम्।

उभयोरनन्तरं नास्ति हार्दित्यस्य शिवस्य च॥

एष ब्रह्मा च विष्णुश्च रुद्र एव हि भाष्करः।

त्रिमूर्त्यात्मा त्रिवेदात्मा सर्वदेवमयो रविः॥

ब्रह्मा, विष्णु व रुद्र, सूर्य के ही अभिन्न अंग स्वरूप हैं, सूर्य में ये तीनों देव स्थित हैं।

वैज्ञानिक रीति-नीति से विवेचन करने पर यह स्पष्ट है, कि यदि किसी पौधे को कुछ दिनों के लिए अन्धकार में जहां सूर्य का प्रकाश बिल्कुल ही न पहुंचे वहां रख दिया जाय, तो वह पौधा मृत हो जायेगा, यही स्थिति मनुष्य की है, यदि मनुष्य को सूर्य-तत्व निरन्तर प्राप्त न हो तो उसे विभिन्न प्रकार के त्वचा रोग, नेत्र-रोग, तथा पेट सम्बन्धी बीमारियां हो जाती हैं।

ज्योतिष और सूर्य

सूर्य ग्रहराज हैं और कभी वक्त्री नहीं होते। सौदैव मार्गी ही रहते हैं। सिंह राशि के स्वामी हैं और स्थिर स्वभाव के, क्षत्रिय वर्ण, विद्या, व्यक्तित्व, तेज, प्रभाव, स्वाभिमान के कारक ग्रह हैं, सूर्य के चन्द्र, मंगल, बृहस्पति मित्र ग्रह तथा शुक्र, शनि शत्रु ग्रह हैं, सूर्य सभी ग्रहों के दोष-प्रभाव का शमन कर सकते हैं, परन्तु शनि, जो कि सूर्य पुत्र माने गये हैं, सूर्य बल को नष्ट करने में समर्थ रहते हैं।

सूर्य उपासना क्यों?

मकर संक्रान्ति के अवसर पर सूर्य साधना का लोक व्यवहार में सदा से महत्व रहा है। अंतर केवल इतना है, कि जहां सामान्य व्यक्ति केवल पूजन के द्वारा अपनी श्रद्धा भगवान् सूर्य को निवेदित करते हैं, वहीं साधक उनके वरदायक प्रभाव को किसी विशिष्ट साधना के द्वारा अपने शरीरमें उतारने का प्रयास करता है, जिसके फलस्वरूप उसके जीवन के विविध पाप-दोष एवं जड़ताएं समाप्त हो सकें।

सूर्य की साधना का महत्व एक छोटे से उदाहरण से ही समझा जा सकता है, कि जिस प्रकार एक छोटी-सी खिड़की खोलने पर कमरे का अंधकार पूरी तरह से समाप्त हो जाता है तथा उजाले का संचार हो जाता है, उसी प्रकार उचित साधना

के द्वारा एक छोटी-सी खिड़की खोलने भर से ही जीवन की दरिद्रता, जड़ता, आलस्य, मलिनता और चिंता आदि का अंत होने की क्रिया प्रारम्भ हो जाती है।

क्या आप अपने नववर्ष का आरम्भ इसी रूप में नहीं करना चाहेंगे?

मकर संक्रान्ति के पर्व को यदि 'प्राणश्चेतना के पर्व' की संज्ञा दी जाए, तो सर्वाधिक उचित होगा और यह भी सत्य है, कि जब तक जीवन में प्राणश्चेतना का प्रवाह नहीं होता, तब तक न तो व्यक्ति स्वस्थ हो सकता है, न सुखी और न ही आध्यात्मिक। इन अर्थों में मकर संक्रान्ति की साधना चतुर्विधि प्रभाव प्रदान करने में समर्थ है, जो मूलतः सूर्य साधना ही है।

यदि इस जगत में अविराम गति की किसी प्रकार से उपमा दी जा सकती है, तो निश्चय ही एक मात्र सूर्य के माध्यम से ही दी जा सकती है। यद्यपि धरा के किसी भी भूभाग पर सूर्य का आविर्भाव मात्र बारह घंटे के लिए होता है ओर शेष बारह घंटे वही भूभाग सूर्य के अस्त हो जाने के पश्चात अंधकार में डूब जाता है, किन्तु यह तो एक चक्र अथवा प्रकृति की एक क्रीड़ा भर ही होती है। धरा के किसी भूभाग के अंधकार ग्रस्त हो जाने से सूर्य के अस्तित्व अथवा गति पर कोई अंतर नहीं पड़ता है, क्योंकि वह तो निरन्तर धरा के समस्त भूभागों को क्रमशः अपना संस्पर्श प्रदान करता ही रहता है और इसी कारण वश भारतीय चिंतन में ही नहीं वरन् इस विश्व के अनेक धर्मों व संस्कृतियों में सूर्य को मात्र एक प्रकाशमान पिण्ड अथवा ऊष्मा के स्रोत के रूप में ही स्वीकार न करके साक्षात् देवतुल्य ही माना गया है।

सूर्य को ऐसा स्वीकार करने में कोई अतिरेक भी नहीं है, क्योंकि जो भी जीवन में ऊष्मा व प्रकाश को लाए उसे स्वतः ही स्तुत्य माना ही जाना चाहिए। कदाचित् यही हमारे पूर्वजों, महान् ऋषियों की अन्तर्भविना रही होगी और इसी कारणवश उन्होंने कालपुरुष की कल्पना भी सूर्यरूप में की।

सूर्य का पूजन दूसरे रूप में काल चक्र का ही तो पूजन है और इस जगत में क्या चर और अचर, कौन ऐसा है जो काल चक्र से आविष्ट न हो?

केवल काल चक्र के बंधन से मुक्त होकर जीवन मुक्त होने के लिए ही नहीं, अपितु तेजस्विता की तो इस जीवन में पग-पग पर आवश्यकता पड़ती ही है, चाहे वह अर्थोपार्जन का विषय हो अथवा समाज में अपना एक वर्चस्व युक्त प्रभाव बना कर सम्मानजनक जीवन जीने का। दुर्बल व्यक्ति की गति न तो इस लोक में हो पाती है और न ही इस लोक से

इतर किसी अन्य लोक में, ऐसा ही शास्त्रों का भी प्रमाण है।

गायत्री मंत्र में भी मूल रूप से यही व्याख्या है, कि हे सविता (सूर्यदिव) आप हमें अपनी तेजस्विता प्रदान करें, लेकिन संक्रमण काल में सूर्य का आहवान किस प्रकार किया जाए, यह महत्वपूर्ण है। मूल रूप से संक्रमण का अर्थ है परिवर्तन। जीवन में सन्धि काल - संक्रमण काल आता ही रहता है। संक्रमण शुभ से अशुभ की ओर हो सकता है और अशुभ से शुभ की ओर भी। लेकिन क्या हम संक्रमण में भी स्थिर चित्त से जीवन को निरन्तर शुभ की ओर गतिशील कर सकते हैं? क्या ऐसा सम्भव है? संक्रमण काल में सूर्य साधना से यह सम्भव हो सकता है।

भगवान् सूर्य के विषय में भविष्य पुराण के ब्रह्म पर्व में कथा वर्णित है। वही अव्यक्त ईश्वर भगवान् सूर्य के रूप में दृश्यमान होते हुए इस जगत मण्डल पर अभिव्यक्त अथवा प्रकट होते हैं, जिन्होंने सभी देवताओं तथा प्रजा की सृष्टि करने के उपरान्त अदिति के गर्भ से बारह रूपों में जन्म लिया और इस जगत में द्वादश आदित्यों के रूप में विख्यात हुए -

भगवान् आदित्य (सूर्य) के द्वादश नाम इस प्रकार हैं - इन्द्र, धाता, पर्यन्य, त्वष्टा, अर्यमा, भग, विवस्वान् अंशु, विष्णु, वरुण, एवं मित्र।

यदि पौराणिक शैली में किए गए भगवान् सूर्य के इस वर्णन को गूढ़ता से परखें, तो वास्तव में उन्हें ही समस्त जगत का नियंता और पालनकर्ता वर्णित करने की ही तो चेष्टा की गई है, और जो सूक्ष्म बात है वह यह, कि इस प्रकृति के समस्त उपादानों की क्रियाशीलता अथवा तेजस्विता का आधार भगवान् सूर्य को ही घोषित किया गया है। आज विज्ञान भी इस तथ्य को स्वीकार कर चुका है कि इस पृथ्वी का समस्त चक्र केवल सूर्य की उपस्थिति के कारण ही सम्भव है। कदाचित् यही कारण है जिसका हजारों वर्षों पूर्व उपनिषदकारों ने अनुभव कर सूर्य को साक्षात् प्राण की ही संज्ञा दी थी।

सूर्य की उपासना यथार्थ में प्राण की ही उपासना है क्योंकि प्राण ही अध्यात्म व भौतिक जगत, दोनों का आधार है।

मकर संक्रान्ति का पर्व हिन्दू परम्परा में प्राचीन काल से ही अत्यन्त श्रद्धा से मनाया जाने वाला पर्व है। ज्योतिष की गणना के अनुसार इसी पर्व पर सूर्य का धनु राशि से मकर राशि पर संक्रमण होता है। यद्यपि संक्रमण तो पूरे वर्ष भर में बारह राशियों के क्रम में बारह बार होते हैं, किन्तु विशेष कारणों से इसी संक्रमण का महत्व सर्वोपरि माना गया है। ज्योतिष की

दृष्टि से क्यों इसी संक्रमण का विशेष महत्व माना गया है, यह पृथक वर्णन और विवेचना का विषय है। कैसे इस पर्व विशेष का अधिकतम लाभ प्राप्त किया जाए यही इस लेख की विषय वस्तु है।

पूज्यपाद गुरुदेव ने कई वर्ष पूर्व इस पर्व से सम्बन्धित एक गोपनीय रहस्य का उद्घाटन किया था, कि इस दिवस पर तांत्रोक्त, मांत्रोक्त अथव किसी भी पद्धति की कोई भी साधना सम्पन्न की जाए, तो उसका निश्चय ही शीघ्रगामी फल प्राप्त होता है।

यह तो किसी भी साधक की अपनी भावना हो सकती है, कि उसके मानस में किस साधना का महत्व सर्वोच्च है, किन्तु यदि इस दिवस पर जो इस वर्ष दिनांक 14.01.2007 को पड़ रहा है।

अन्य देवताओं को तो साधना-उपासना द्वारा, उनके स्वरूप को भीतर ही भीतर, भावना द्वारा ही समझा जा सकता है, लेकिन सूर्य देव तो नित्य-प्रति प्रत्यक्ष होने वाले, साधक के सामने ही स्थित हैं, तो इनको क्यों न सिद्ध किया जाय? सूर्य की साधना साधक के भीतर ज्ञान और क्रियाशीलता का उद्धीपन करती है, यह तेज कभी शांत नहीं हो सकता, सूर्य की शक्ति संज्ञा, कुण्डलिनी जागरण की प्रक्रिया का प्रारम्भ नहीं, अपितु प्रारम्भ से पूर्णता तक है।

सूर्य पूजा-साधना के नियम

1. साधक कोई भी साधना करे, उसे प्रातः उठ कर सर्व प्रथम सूर्य नमस्कार करना तो आवश्यक है।
2. सूर्योदय होने से पूर्व ही साधक नित्य क्रिया से निवृत हो कर, स्नान कर, शुद्ध वस्त्र अवश्य धारण कर लें।
3. सूर्य की मूल पूजा उगते हुए सूर्य की पूजा ही है, और यही फलकारक है, अतः सूर्योदय के पश्चात् पूजन से कोई प्रयोजन सिद्ध ही नहीं होता।
4. सूर्य को लाल कनेर के पुष्प विशेष प्रिय हैं, अतः साधक वे ही पुष्प सूर्य को अर्पित करें।
5. सूर्य देव को सूर्योदय के समय पुष्पों के साथ ताम्रपात्र में तीन बार अर्ध्य देकर प्रणाम करना चाहिए।
6. नेत्र रोग तथा निर्बलता से पीड़ित सूर्य-उपासक को रविवार के दिन नमक, तेल रहित भोजन केवल एक समय ग्रहण करना चाहिए, तथा उसे चक्षुभ्रति विद्या पाठ करना चाहिए।

सूर्य साधना का क्रम

रविवार के दिन प्रारम्भ की जाने वाली इस साधना के समय ऊपर लिखे हुए नियमों का पालन करते हुए, साधक पूर्व दिशा की ओर मुख कर अपने सामने 'सूर्य यंत्र' को स्थापित कर, उस पर चन्दन, केसर, सुपारी तथा लाल पुष्प अर्पित कर, इसके साथ ही गुलाल तथा कुकुम के साथ-साथ सिन्दूर भी अर्पित करें, और अपने सामने सिन्दूर को शुद्ध जल में धोल कर, दोनों और सूर्य चित्र बनाएं तथा पुष्पांजलि अर्पित करते हुए प्रार्थना करें कि -

आदित्यं जातवेदसं देवं वहन्ति
केतवः दृशे विश्वाव शूर्यम् ।

'हे आदित्य! आप सिन्दूर वर्णीय, तेजस्वी मुख मण्डल, कमलनेत्र स्वरूप वाले, ब्रह्मा, विष्णु तथा रुद्र सहित सम्पूर्ण सृष्टि के मूल कारक हैं। आपको इस साधक का नमस्कार! आप मेरे द्वारा अर्पित कुकुम, पुष्प, सिन्दूर एवं चन्दनयुक्त जल का अर्ध्य ग्रहण करें।

सूर्य प्रार्थना के पश्चात् अपने हाथों में ताम्रपात्र लेकर, सूर्य को तीन बार अर्ध्य दें। सूर्य को अर्ध्य देने के बाद पुनः आसन ग्रहण करें तथा 'मणिमाला' निम्न सूर्य मंत्र का जप करें-

सूर्य वैदिक मंत्र
ॐ आकृष्णेन रजसा वर्तमाने
निवेश्यमृतमत्त्वं श्विरण्यवेन सविता रथेना
देवा वाति भुवनानि पश्यन् ॥

सूर्य गायत्री मंत्र
आदित्याव विद्धहे प्रभाकराय धीमहि तज्जः सूर्यः
प्रचोदयात् ॥

एकाक्षरीबीज मंत्र
ॐ धृणिः सूर्याय नमः ॥
तांत्रोक्त सर्य मंत्र

ॐ हां हौं हौं सः सूर्यायनमः ॥

इन चारों मंत्रों की एक-एक माला जप करें। यह साधना एक मास तक सम्पन्न करनी है। यदि आप मकर संक्रान्ति से साधना प्रारम्भ कर रहे तो अगले महीने 13 फरवरी तक अवश्य करें अर्थात् जब सूर्य एक राशि पर रहता है तो सूर्य साधना करें। सूर्य साधना का यह प्रयोग साधक करे तो अत्यन्त श्रेष्ठ रहता है, और उसकी साधनाएं सफल होती हैं।

साधना सामग्री - 360/-

☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆

सूर्य साधना और रोग

सूर्य तो आरोग्य के देव हैं, इनके सामने निर्बलता, रोग, जड़ता ठहर ही नहीं सकती, सूर्य का तात्पर्य ही आयु, बल, आरोग्य है।

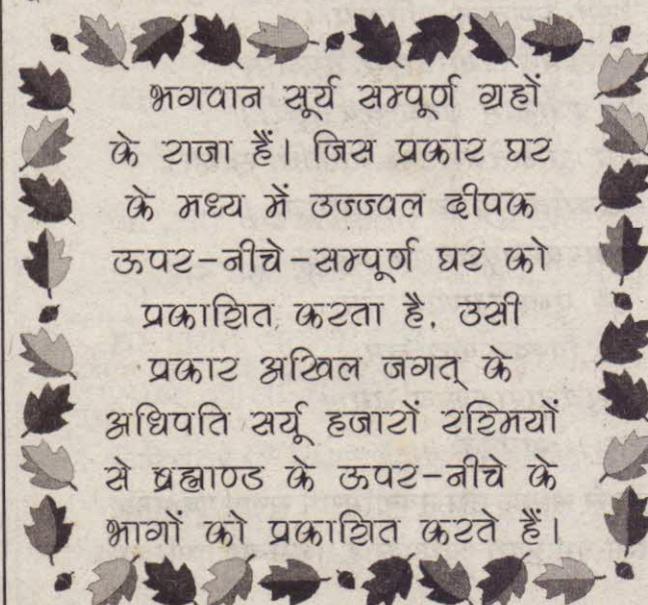
नित्य प्रति सूर्य नमस्कार और प्राणायाम से शरीर का दूषित रक्त साफ होता है, और इस पूजा के निरन्तर अभ्यास से शरीर स्वस्थ, बलिष्ठ एवं दीर्घजीवी होता है।

चक्षुष्मती साधना-दिव्य दृष्टि साधना

नेत्र सूर्य के ही स्वरूप हैं, और नेत्र सम्बन्धी सभी प्रकार के रोगों-दोषों को दूर करने के लिए सूर्य की साधना ही की जाती है। यह साधना कुछ विशेष नियमों के अनुसार सम्पन्न करना आवश्यक है, इसके कुछ विशेष मंत्र हैं, उन्हीं मंत्रों के आधार पर इस साधना को सम्पन्न करने से पूर्णता प्राप्त होती है।

इस साधना के सम्बन्ध में पूर्ण प्रामाणिक विवरण 'परशु राम कल्पसूत्र' में विशेष रूप से, विस्तार से लिखा गया है।

यह साधना रविवार के दिन ही प्रारम्भ की जाती है और नेत्र-रोग बाधा वाले साधक को रविवार के दिन एक समय भोजन (और वह भी बिना नमक) करना चाहिए, साधक प्रातः ही सूर्योदय से पहले लाल चन्दन, सिन्दूर, लाल पुष्प, ताम्र पात्र, लाल वस्त्र, 'चक्षुष्मती यंत्र', 'मणिमाला', 'सूर्य चित्र' की व्यवस्था कर लें, पूर्व दिशा की ओर मुंह कर सूर्य के सामने यह साधना सम्पन्न करनी चाहिए। सूर्योदय के समय सूर्य का तेज प्रारम्भ होता है, उससे पहले ही सामग्री की व्यवस्था कर सूर्योदय के साथ गुरु ध्यान, पूजन एवं अपने बाएं हाथ में जल लेकर चक्षुष्मती साधना



अगवान् थूर्य अर्घ्यूर्ण ग्रहों
के टाजा हैं। जिथ प्रकाट घट
के मध्य में उज्ज्वल दीपक
ऊपट-बीचे-अर्घ्यूर्ण घट को
प्रकाशित करता है, उथी
प्रकाट अथिल जगत् के
अधिपति थर्यू हजाटों टठिमयों
ये छह्नाठ के ऊपट-बीचे के
आगों को प्रकाशित करते हैं।

ध्यान एवं संकल्प करें -

भास्वद्रत्नाद्यमौति: स्फुरदर्थरस्त्रारञ्जितश्चारुके शरी।
भास्वान्योदिव्यतेजा करकमलयुतः स्वर्णवर्णं प्रभाभिः।
विश्वाकाशावकाशो ग्रहगणसहितो भाति वश्चोदव्यद्वै
सव्वर्णन्दप्रदाता हरिहरन्मित पातु मां विश्वकृः॥

हे सूर्यदिव! आप मेरे नेत्रों के तेज रूप में स्थित हो कर मेरी दृष्टि सम्बन्धी सभी दोष दूर करें, मुझे अपना स्वर्ण जैसा तेज प्रदान करें, अन्धकार से प्रकाश की ओर मृत्यु से अमृत्यु की ओर ले जायें।

अब सर्वप्रथम चक्षुष्मती यंत्र का पूजन कर उस पर पुष्प एवं रक्त चन्दन अर्पित करें और सूर्य का ध्यान कर जल अर्पित करें, इसके पश्चात चक्षुष्मती विद्या का पाठ 11 बार सम्पन्न करें, चक्षुष्मती सूर्य की ही शक्ति का स्वरूप है।

चक्षुष्मती विद्यापाठ

ॐ सूर्यायाक्षितेजसे नमः खेचराय नमः, अस्तो मा सदगमय। तमसो मा ज्योतिर्गमय। उष्णो भगवान् शुचिरूपः हंसो भगवान् शुचिरप्रतिरूपः।
वदः सुपर्णाउपसेदुर्दिं प्रियमेधा ऋषयो नाथमानाः।
अपर्धवान्तमूर्णुहि पूर्धिचक्षुमुर्जद्य स्माङ्गिधवेय बद्वान्॥
पुण्डरीकाक्षाय नमः पुष्करेक्षणाय नमः अमलेक्षणाय नमः।
कमलेक्षणाय नमः विश्वरूपाय नमः श्री महाविष्णवे नमः॥

प्रत्येक बार पाठ करने के पश्चात् लाल पुष्प से ताम्र पात्र में रखा हुआ जल अपने नेत्रों में लगाएं, इस प्रकार यह पाठ ज्यारह बार- सम्पन्न करें, तत्पश्चात् अपने पूजा-स्थान में पूर्व की ओर मुख कर मणिमाला से पांच माला तांत्रोक्त सूर्य मंत्र का जप करें। जब तक साधक को अपने नेत्र-बाधा सम्बन्धी, दृष्टि सम्बन्धी, तेज सम्बन्धी पूर्णता प्राप्त नहीं हो जाय तब तक प्रति रविवार यह प्रयोग सम्पन्न करना चाहिए।

चक्षुष्मती विद्या के चमत्कार एवं इसके सिद्ध होने के उदाहरण एक-दो नहीं हजारों हैं, सूर्य पूजा-साधना से नेत्रों के अलावा व्यक्तित्व को विशेष आत्मस्वाभिमान, आत्मविश्वास एवं तेजस्विता प्राप्त होती है।

निष्कर्ष यह है कि सूर्य-पूजा साधना से लाभ ही लाभ है, चाहे साधक उसे साधना की दृष्टि से लें, स्वास्थ्य की दृष्टि से, वैज्ञानिक दृष्टि से ले अथवा कोई अन्य विचार से, जीवन के कुछ नियम अवश्य होने चाहिए। प्रतिदिन सूर्य-ध्यान, पूजा एवं सूर्य नमस्कार को भी जीवन का अंग बना लेना चाहिए।

साधना सामग्री - 450/-

☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆

सूर्य के बारह रूप हैं। ये बारह आदित्य बारह महीनों से सम्बद्ध हैं। इनके नाम हैं - इन्द्रा, धाता, भग, पूषा, मित्र, वसुण, अथमा, अंशु, विवस्वान्, त्वष्टा, सविता और विष्णु हैं।

सूर्य की द्वादश कलाएँ हैं। इनके नाम हैं - तपिनी, धूमा, मरीचि, ज्वालिनी, लचि, सुधूमा, भोगदा, विश्वा, बोधिनी, धारिणी और क्षमा।

सूर्योपासना के प्रमुख रूप हैं - गाथत्री-उपासना, संध्या, सूर्यमंत्र, जप, सूर्यपूजा और पञ्चदेव-पूजा।

चाक्षुष्मती स्तोत्र

नित्य ११ बार पाठ करने पर नेत्र-रोगों से मुक्ति मिलती ही है, साथ ही नेत्र-ज्योति में श्री वृच्छि होने लगती है। साथ ही व्यक्तित्व को विशेष आत्मस्वाभिमान, आत्मविश्वास उवं तेजस्विता प्राप्त होती है।



ॐ चक्षुश्चक्षु तेजः स्थिरो भव, मां पाहि पाहि,
त्वरितं चक्षुरोगान् प्रशमय प्रशमय,
मम जातरूपं तेजो दर्शय दर्शय,
वर्थाहं अनधी न स्यां तथा कल्पय कल्पय,
कृपया कल्याणं कुरु कुरु,



मम यानि यानि पूर्वं जन्मरोपार्जितानि चक्षु प्रतिरोधकदुष्कृतानि,
तानि सर्वाणि निर्मूलय निर्मूलय।

ॐ नमश्चक्षु शतेजोदात्रे दिव्यभास्कराय,

ॐ नमः करुणाकरायामृताय,

ॐ नमो भगवते श्री सूर्याय अक्षितेजसे नमः,

ॐ खेचराय नमः, ॐ रजसे नमः, ॐ सत्वाय नमः,

ॐ असतो मा सद्गमय, ॐ तमसो मा ज्योतिर्गमय,

ॐ मृत्यो मर्त्तमृतं गमय,

उष्णो भगवान् शुचिरूपः हंसो भगवान् प्रतिरूपः।

ॐ विश्वरूपे घृणिन जातवेदसे हिरण्मये ज्योतिरूपं तपन्तम्।

सहस्ररश्मिः शतथा वर्तमानः पुरः प्रजानाम् उदयत्येष सूर्यः॥

ॐ नमो भगवते श्री सूर्याय आदित्याय अक्षितेजसेऽहो वाहिनि स्वाहा।

ॐ वयः सुपर्णा उपसेदुरिन्द्रं प्रियमेधा क्रष्णयो नाथमानाः।

अप द्वान्तमूर्णुहि पूर्थि चक्षुः मुमुक्षुस्माद्विधयेव बद्रान्॥

ॐ पुण्डरीकाक्षाय नमः, ॐ पुष्करेक्षणाय नमः,

ॐ कमलेक्षणाय नमः, ॐ विश्वरूपाय नमः,

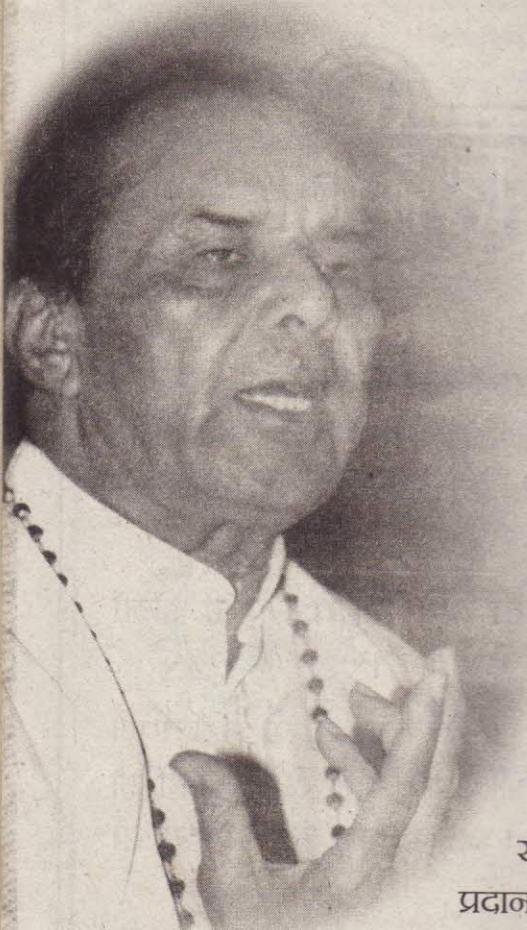
ॐ महाविष्णवे नमः, ॐ सूर्यनारायणाय नमः।

ॐ शान्तिः। शान्तिः॥ शान्तिः॥

इस दुर्लभ स्तोत्र का नियमित एवं श्रद्धायुक्त पाठ करने से साधक उस नयनाभिराम सुखद एवं मनोहर प्रकृति के सौन्दर्य को परखने की, देखने की, जो उसका प्रभु प्रदत्त अधिकार है, जिसे वह दुर्भाग्यवश खो बैठ था, प्राप्त कर लेता है।

शिष्य धर्मी

- ❖ जब तक आत्महीनता की स्थिति से बाहर नहीं आओगे तब तक अपने आपको पहचान भी नहीं पाओगे। प्रभु ने वरदान स्वरूप वे सभी गुण तुम्हें प्रदान किये हैं, जो सभी अन्य व्यक्तियों में हैं, आवश्यकता इस बात की है कि अपने गुण को पहचानो और उसके विकास की ओर अग्रसर हो।
- ❖ शिष्य के लिए सदगुरु भगवान स्वरूप और समृद्धा होते हैं। वे अपनी दोनों आंखों से नहीं, अपितु अपने दिव्य चक्षु से शिष्य को देखते हैं।
- ❖ सदगुरु के लिए प्रिय और अप्रिय शब्द नहीं होता है, उनके लिए सबसे महत्वपूर्ण शिष्य ही होता है और जो शिष्य बन गया, वह कभी भी अपने गुरु से दूर नहीं हो सकता है। क्या परछाई को आकृति से अलग किया जा सकता है? शिष्य तो सदगुरु की परछाई की भाँति ही होते हैं।
- ❖ अपने आपको बलिदान कर देने में सार्थकता नहीं है, अपने को समाज के सामने छाती ठोककर खड़ा कर देना और अपनी पहचान के साथ-साथ गुरु की मर्यादा तथा सम्मान समाज में स्थापित कर देना ही तो शिष्यत्व है।
- ❖ संयम, श्रद्धा, आत्मविश्वास, प्रेम, निष्ठा और समर्पण - ये छः गुण जब स्थापित हो जाएं, तब ही जानिए कि आप सफलता की सीढ़ियों पर चढ़ रहे हैं। कोई आपके लिए सफलता के द्वार खोल कर नहीं खड़ा है। आपको ही ये छः गुण अपने भीतर विकसित करने हैं।
- ❖ जो आप बनना चाहते हैं, वो आप बन सकते हैं लेकिन आपके विचार सकारात्मक हों और उन सकारात्मक विचारों से ही अपने भीतर की निराशा को तोड़ सकते हैं।
- ❖ हर समय अदम्य इच्छा शक्ति बनाए रखें और आपका लक्ष्य सदैव आपके सामने स्पष्ट होना चाहिए।
- ❖ जैसे विचार अपने भीतर बोओगे, वैसी ही फसल तैयार होगी। श्रेष्ठ विचार श्रेष्ठता की ही वृद्धि करेंगे। सदगुरु ही आपके मित्र हैं, भाता हैं, माता-पिता हैं। उनमें ही एकाकार होने की क्रिया आज ही से प्रारम्भ कर देनी चाहिए।



गुरुकृत्याणी

★ अध्यात्म का अर्थ है - मन की बहिर्भूत गति को मोड़ कर अन्तर्मुख करना, आत्म केन्द्रित करना, विविध लक्ष्यों की ओर भटकने से रोकना... और यह स्वभाविक ही है कि जब चर्चा हो अध्यात्म की, आत्मा की, तो ध्यान स्वतः केन्द्रित हो जाता है गुरु तत्व पर क्योंकि गुरुदेव वस्तुतः प्रत्येक आत्मा के, प्रत्येक जीव के अन्तर्मन के प्रतिबिम्ब ही होते हैं।

★ समर्पण कोई घुटटी नहीं होती, कि उसे आते ही साधक को पिला दिया जाए और उसके भक्ति रूपी दांत निकल आएं। प्रत्येक साधक की पारिवारिक पृष्ठभूमि पृथक होती है, अतः प्रत्येक के साथ गुरु को एक सर्वथा पृथक क्रिया सम्पन्न करनी पड़ती है, वेतना प्रदान करने के लिए एक ओर से तो उन्हें अपने शिष्य के मन को कोमल भावों को जाग्रत करना पड़ता है, वहीं बड़ी कृशलता से उसके अहं पर चोट देते हुए उसे समाप्त भी करना होता है।

★ प्रभु ने यह जीवन इस कारण नहीं दिया है, कि इसे यूं ही व्यर्थ की भागदौड़ या आपाधापी में व्यतीत कर दिया जाए। जीवन की यह सार्थकता केवल मूर्तियों के सामने हाथ जोड़ कर गिड़गिड़ाने से नहीं प्राप्त हो सकती।

- ☆ दौड़ तो हर व्यक्ति रहा है, कभी किसी पथ के साथ तो कभी किसी देवता की भक्ति के साथ, किन्तु उसे वास्तविक रूप में उसे मार्गदर्शक की पहचान ही नहीं हो सकी है, जिसे हमारी परम्परा में गुरु कहा गया है।
.... और यह भी सत्य है कि जब तक जीवन में कोई रहबर अर्थात् सदगुरु नहीं होंगे तब तक पूरे जीवन का, उसकी उपलब्धियों का कोई अर्थ नहीं रह जाएगा, क्योंकि गुरु का सीधा सा अर्थ है महानता, ऐसी महानता जिससे आस्था उपजती है।
- ☆ ...क्योंकि गुरु की क्रिया केवल मार्ग बताने तक ही सीमित नहीं होती, वे तो अपने शिष्य के जीवन रूपी पथ पर अभावों, तनावों, दैन्य, विषमता इत्यादि के बिखरे कंटकों को हटाने का दायित्व भी स्वतः स्वीकार कर लेते हैं।
- ☆ मेरे प्रवचन में गति है, विश्राम नहीं है, रुकने का स्थल नहीं है, यह तो तुम्हारे डगमगाते पैर में गति देने की प्रक्रिया है, तुम्हारे तुतलाते शब्दों को दृढ़ता देने का आयाम है, तुम्हारे मुर्दा शरीर में संजीवनी देने की प्रक्रिया है। इसलिए मेरे प्रवचन कान से सुनने का तथ्य नहीं नाभि से गहरे उतारने का आयाम है।
- ☆ बिना गुरु के व्यक्ति जीवन के दिन केवल गिन-गिन कर तो काट सकता है, उसे उत्साह से नहीं जी सकता है, क्योंकि उसमें कोई लक्ष्य नहीं होता है और लक्ष्यहीन जीवन से अधिक भयावह कोई भी स्थिति नहीं हो सकती।
- ☆ साथ ही मेरा स्वप्न तो यह भी है कि मेरे शिष्य उस पवित्र भूमि को स्पर्श कर, अपने जीवन को धन्य कर, उसकी चेतना से ओतप्रोत हो कर, वहां की स्निग्धता में तरल होकर, वहां की पावनता से पवित्र होकर वहां की ज्योतरना से शुश्र होकर पुनः इस समाज में लौटें और समाज को स्पष्ट और प्रामाणिक विवरण दे सकें। बता सकें कि बिना भौतिकता को छोड़े हुए भी कैसे जीवन के उस सर्वोच्च लक्ष्य को प्राप्त किया जा सकता है।

आप अपनैं आप को शैष्ठ सम्मोहन कर्ता बनाना चाहते हैं

आप अपनैं नेत्रों में चुम्बकीय शक्ति भरना चाहते हैं

आप अपनैं व्यक्तित्व को उच्च बनाना चाहते हैं

आप साधना मार्ग में पूर्ण सफलता प्राप्त करना चाहते हैं

तो प्रारम्भ कीजिए
सम्मोहन का आधार



त्राटक

योग की घट्ट क्रियाओं में त्राटक का महत्वपूर्ण स्थान है। त्राटक स्वस्थता ही प्रदान नहीं करता, अपितु यह आपके व्यक्तित्व में असाधारण शक्तियां भर देता है। त्राटक के नियमित अभ्यास से आप मानव के साधारण स्तर से ऊपर उठने लगते हैं।

ठृठ योग के ब्रंश 'ठृठ योग प्रदीपिका' में मानव-शरीर को स्वस्थ और शुद्ध रखने के लिए जिन घट्ट क्रियाओं की संस्तुति की गई हैं, उनमें त्राटक सर्वाधिक महत्वपूर्ण क्रिया है। त्राटक का अर्थ है, मानसिकता व एकाग्रता को विकसित करने तथा आंखों को स्वस्थ रखने के उद्देश्य से कुछ विशेष पदार्थों को बिना पलकें छपकाए हुए एकटक देखने का अभ्यास करना।

त्राटक से सबसे बड़ा लाभ यह है, कि इन से भलगिलत रिचार्ड कम होने लगती है, और अंगरः भन ध्यान की स्थिति में किसी एक वस्तु पर टिक जाना है। त्राटक सम्मोहन रिचार्ड की आधारभूत क्रिया है, क्योंकि इससे अंगरों की सम्मोहन शक्ति का अधिकास होता है। त्राटक क्रिया में पांच व्यक्ति दूसरे व्यक्तियों के भन की बारें जान लेता है, दर स्थानों पर घटित होने वाली घटनाओं का ज्ञान प्राप्त कर लेता है, जंगली जानवरों को अपने रथ में कर लेता है, दूर पड़ी वस्तुओं को अपने-अपने स्थानों से हटा सकता है, जलते हुए दीप को बुझा सकता है, और बुझे हुए दीप को जला सकता है।

पातंजलि योग में वर्णित षट्कर्म में एक प्रमुख कर्म है त्राटक। वैसे तो षट्कर्मों के करने का मुख्य उद्देश्य मोक्ष प्राप्ति है और इनके अभ्यास से प्राकृतिक रूप से मिलने वाली विभिन्न सिद्धियों को उपयोग में लाना शास्त्रों के अनुसार वर्जित है, लेकिन वर्तमान समय में रहन-सहन की कठिन परिस्थितियों को देखते हुए और इस संसार को सत्य मानते हुए यदि विचार करें, तो पायेंगे, कि असाधारण सिद्धियों का स्वयं के लाभ में लाना कोई पाप नहीं है। संयोग से पातंजलि योग भी इसका समर्थन करता है।

त्राटक का प्रचलन हजारों साल से सम्भवतः लगभग सभी देशों में होता आया है। जहां इसका अच्छे लोगों ने उपयोग किया है, वहीं बुरे लोगों ने दुरुपयोग भी किया है। आम जनता के मध्य त्राटक की उपलब्धियां हमेशा संदेहास्पद और भ्रमपूर्ण रही हैं और विवादग्रस्त भी, लेकिन प्राचीन ग्रंथों में त्राटक के

अभ्यास से प्राप्त होने वाली जिन शक्तियों का उल्लेख मिलता है, उनकी प्राप्ति आज के युग में उतनी ही सत्य है।

पहले यह देखें, कि त्राटक क्या है एवं इससे शक्ति प्राप्त होने के क्या सिद्धान्त हैं?

सूर्योदय के पूर्व नित्यकर्मों से निवृत्र होकर सीधे बैठकर आंखों की सीध में लगभग 3 फीट दूर एक शक्ति चक्र जो कागज पर अंकित होता है उसे रखा जाता है और बिना पलक झापकाये इसे देखना प्रारम्भ करते हैं। प्रारम्भ में 3 से 5 मिनट तक अपलक देखने पर आंख से आंसू आ जाते हैं, तब अभ्यास रोक दिया जाता है। फिर दूसरे दिन ठीक उसी समय फिर से ऐसा ही अभ्यास किया जाता है। इसी तरह 8 से 10 दिन तक लगातार करने पर 8 से 10 मिनट तक अपलक देखने का अभ्यास हो जाता है। लगभग 6 माह तक धैर्यपूर्वक अभ्यास करने पर 30 मिनट तक अपलक देखने की योग्यता आ जाती है।

जब अभ्यास प्रारम्भ किया जाता है, तब उसके साथ कुछ और नियम पालन करने होते हैं, जो लगते तो साधारण हैं, परं परिणाम चमत्कारिक ढंग से देते हैं।

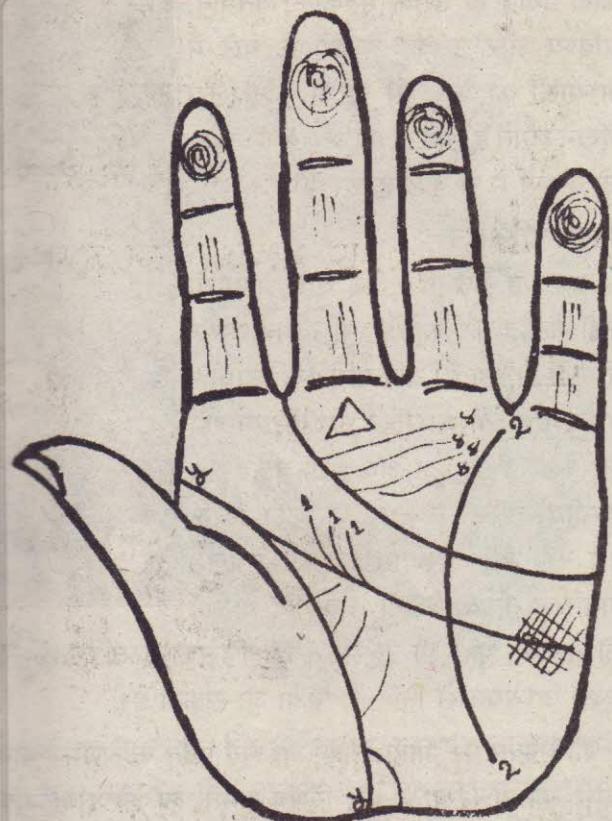
पहला नियम - भयमुक्त श्वास-प्रश्वास और अत्यन्त धीमी गति का श्वास प्रश्वास।

दूसरा नियम - त्राटक से एक निश्चित उद्देश्य की प्राप्ति का दृढ़ संकल्प लेना, जैसे भविष्य दर्शन की क्षमता या दूर श्रवण की क्षमता या इच्छित वस्तु को प्राप्त करना आदि।

अनेक नियमों में से केवल श्वास-प्रश्वास का नियम और दृढ़ संकल्प - इन दो नियमों के अनुसरण से ही 6 से 7 महीने में त्राटक की सफलता का दृढ़ विश्वास जम जाता है। फिर यही विश्वास का संबल आगे चल कर त्राटक में पूर्ण सिद्धि प्रदान करता है।

अब देखें त्राटक के बाद शारीरिक और मानसिक परिवर्तन किस प्रकार के हो रहे हैं - अच्छे या बुरे?

अभ्यास गलत होने पर गलत प्रभाव पड़ता है, कारण कि त्राटक का अभ्यास पूर्णतः मस्तिष्क की गुप्त शक्तियों और विचारों की शक्तियों का खेल है। अभ्यासी यदि इस अत्यन्त संवेदनशील खेल में सावधानी रखता है, तो सफल हो जाता है। त्राटक के अभ्यास का अवलोकन अभ्यासी के हाथ में किया जाता है। पूरे शरीर में हाथ एक अद्भुत अंग है, हाथ की लकीरों और आकार को हम पूरे शरीर, मन और बुद्धि का दर्पण मान सकते हैं। अतः हस्त रेखाओं के माध्यम से अभ्यासी में आ रहे परिवर्तनों का अध्ययन किया जाए।



अच्छे परिवर्तन

चित्रानुसार मस्तिष्क रेखा (रेखा 1-1) से ऊपर जाती रेखाएं उर्वरक मस्तिष्क का घोतक हैं। यदि ये रेखाएं अभ्यास के बाद बन रही हैं, तो इसका अर्थ है, कि अभ्यासी सफलता की ओर बढ़ रहा है और उसमें सृजनात्मक क्षमता का विकास हो रहा है।

दूसरा लक्षण है शनि पर्वत पर त्रिभुज बनाना। यह अभ्यासी में सम्मोहन की क्षमता विकसित होने का लक्षण है। यह विद्या या तो आंखों के द्वारा विकसित होगी या फिर बातचीत और हावभाव के द्वारा। लेकिन दोनों ही माध्यम का सिद्धान्त एक ही है - 'सामने वाले की तर्क करने की क्षमता और विचार करने की क्षमता को थोड़े समय के लिए खत्म करना या उस पर पक्षाधात लगाना।'

तीसरा लक्षण, जो बहुत ही जल्द आ जाता है - बुध पर्वत से चन्द्र पर्वत तक तलवार जैसी ढलवा रेखा (रेखा 2-2) का बनाना। इसका अर्थ होता है, त्राटक से अभ्यासी में पूर्वभास की क्षमता का विकास हो रहा है, जिससे भविष्य दर्शन, किसी व्यक्ति की आदतों, व्यवहार या आन्तरिक उद्देश्यों को केवल फोटो देखकर पहचान जाना आदि-आदि। यह सब अभ्यासी को दिवास्वप्न की भाँति दिखता है। किसी व्यक्ति के

फोटो देखते ही उसके भूतकाल, वर्तमान, भविष्य और उसकी आदतों के बारे में अभ्यासी को कैमरे से खींची फोटो जैसे दिखने लगते हैं। यह तो हुए अच्छे परिवर्तन, जो हजारों में से कुछ ही हैं।

गलत परिवर्तन

अब यह देखना है, कि यदि अभ्यासी कहीं गलती कर रहा है, तो खराब असर तो नहीं हो रहा है। यदि मस्तिष्क रेखा पर बारीक रेखाओं का जाल अंत में बन रहा हो (रेखा 3-3), तो अर्थ हुआ त्राटक का केन्द्रीय तंत्रिका तंत्र पर प्रतिकूल असर पड़ रहा है। परिणाम स्वरूप बेवजह मानसिक तनाव, बेचैनी, घबराहट या पेट की खराबी, कुछ भी हो सकता है, जिसको हस्त रेखाओं के सूक्ष्म अध्ययन से निश्चित किया जा सकता है।

शनि पर्वत पर आड़ी रेखाएं जो सूर्य पर्वत के लगभग पास पहुंच रही हों (रेखा 4-4), निर्णय क्षमता का क्षरण बतलाती हैं। साथ ही केन्द्रीय तंत्रिका पर अतिरिक्त दबाव को भी बताती हैं, जो भविष्य में रक्तचाप की अनियमितता दे सकता है।

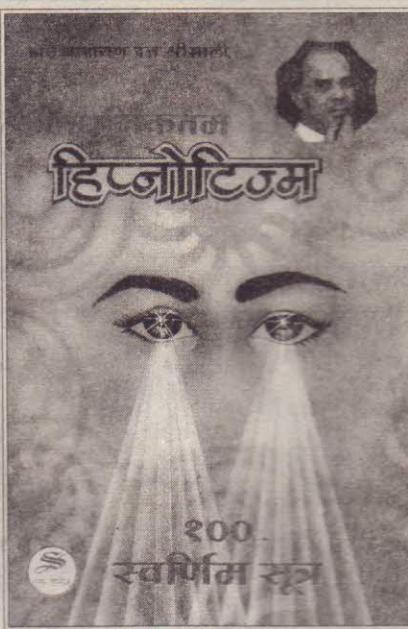
जीवन रेखा (रेखा 5-5) पर अभ्यासी की वर्तमान आयु निश्चित कर, उस स्थान पर अच्छे-बुरे चिन्ह देख कर त्राटक का अंतिम परिणाम निकाला जा सकता है। ये सभी लक्षण 6 महीने या 1 साल बाद ही बनते बिगड़ते देखे जा सकते हैं।

पूर्णता प्राप्ति

30 से 40 मिनट तक सफलता पूर्वक अपलक देखने की क्षमता आ जाने पर अभ्यासी की प्रतिभा उसके संकल्प के अनुसार विकसित होती है, जैसे भविष्य दर्शन की प्रतिभा वाले व्यक्ति को त्राटक के दौरान अनजानी जगहों, अनजाने व्यक्तियों या अजीबो-गरीब घटनाओं के दर्शन, जो भूतकाल या भविष्य से सम्बन्धित हो सकते हैं, लययुक्त श्वास-प्रश्वास और एक निश्चित उद्देश्य रखने पर इन दृश्यों के दिखने न दिखने पर नियन्त्रण आने लगता है और जल्द ही पूर्वाभास, भविष्य की घटनाओं का दर्शन आदि में अभ्यासी दक्ष हो जाता है।

त्राटक से ऐसा क्यों होता है?

मनुष्य का मस्तिष्क सम्भवतः पूरे ब्रह्माण्ड में रहस्यमय पदार्थ है। व्यक्ति का मस्तिष्क खोपड़ी के अन्दर दो भागों में



बंटा है। ये दोनों गोलार्ध आपस में बारीक तंत्रिकाओं द्वारा जुड़े हुए हैं, जिनकी संख्या असंख्य है। विभिन्न देशों में हुए अनुसंधान के अनुसार मस्तिष्क के दोनों गोलार्धों में निरन्तर विद्युत निर्माण होता रहता है, यह विद्युत मिलीवोल्ट के हजारों लाखों हिस्से के बराबर होता रहता है, और निरन्तर बनती रहती है। जब यह विद्युत एक निश्चित मात्रा के ऊपर पहुंच जाती है, तो मस्तिष्क में इससे होने वाले क्षरण से बचने के लिए दोनों गोलार्धों के मध्य स्पार्क करता है। इस क्रिया के असर से ही व्यक्ति पलकें झपकता है, अर्थात् जब भी पलक झपकती है, मस्तिष्क के दोनों गोलार्धों के मध्यन धन और क्रृष्ण विद्युत का स्पार्क होता है।

जब हम त्राटक करते हैं, तो इसका अर्थ है मस्तिष्क में बनने वाली क्रृष्ण और धन विद्युत को स्पार्क के द्वारा खत्म होने से रोकना 30 से 40 मिनट तक त्राटक करने पर मस्तिष्क में काफी मात्रा में विद्युत इकट्ठी हो जाती है, जिसका यदि सृजनात्मक उपयोग न किया गया, तो यह विनाशकारी साबित हो सकती है।

सृजनात्मक उपयोग में काम आते हैं लय युक्त श्वास-प्रश्वास और एक निश्चित उद्देश्य अर्थात् 6 माह तक त्राटक का जो अभ्यास है, वह लय युक्त श्वास-प्रश्वास और निश्चित उद्देश्य द्वारा अतिरिक्त विद्युत को मस्तिष्क के सुस्त पड़े गुम शक्ति केन्द्रों में प्रवाहित करने का अभ्यास है और जब यह विद्युत इच्छित स्थान पर पहुंच कर गुम शक्ति केन्द्र विशेष को उत्तेजित करता है, तो अभ्यासी को मनोवांछित सिद्धि मिल जाती है।

अब आपको निश्चय ही समझ में आ गया होगा, कि हजारों साल पहले भारतीय ऋषियों ने मस्तिष्क में विद्युत का वैज्ञानिक उपयोग कितनी चतुराई से किया और वे ही सिद्धान्त आज भी विज्ञान की अमूल्य धरोहर हैं।

एक त्राटक ही नहीं, पातंजलि के सभी षट्कर्मों और इनकी सभी उपलब्धियों की बेहतरीन वैज्ञानिक व्याख्या है, जो कसौटी पर सौ प्रतिशत खरी उतरेगी। यदि सरकार इन उपलब्धियों पर ध्यान दे और अनुसंधान करवाये तो देश का कल्याण होगा।

महाशिवरात्रि - 16 फरवरी 2007

देवाधिदेव महादेव का अभिषेक करना ही है

महाशिवरात्रि पर्व पर

ऐसा अभिषेक पूजन जो

शास्त्रोक्त है, मांत्रोक्त है, तांत्रोक्त है

महाशिवरात्रि

पूजन

आरती गायन कर महादेव को प्रसन्न नहीं किया जा सकता, शिवलिंग पर जल दूध चढ़ाकर महादेव को वशीभूत नहीं किया जा सकता है, उपवास कर महादेव को जाग्रत नहीं किया जा सकता, जप कर महामृत्युजयं को सिद्ध नहीं किया जा सकता, उन्हें अपने हृदय प्राणों में पूर्ण रूप से जोड़ने की किया पूर्ण विधि-विधान सहित महाशिवरात्रि को गणपति पूजन, गौरी पूजन, गुरु पूजन, शिव पूजन, अभिषेक द्वारा ही पूर्ण रूप से अपने अनुकूल बनाया जा सकता है। जिसेस महादेव की अमृत वर्षा आपको पूरे वर्ष आनन्द से आप्लावित करती रहे, आवश्यकता पूर्ण लगन श्रद्धा से पूजन अभिषेक किया जाय। मंत्र सिद्ध प्राण प्रतिष्ठा युक्त पारद शिवलिंग और अन्य यंत्र तथा सामग्री हो, यहां तक की रुद्राक्ष माला का प्रत्येक मनका शिव के १०८ मंत्रों से अभिमंत्रित हो।

पत्रिका पाठकों के लिए यह व्यवस्था की जा रही है जिससे वे समय पर सामग्री प्राप्त कर लें तथा विधि-विधान से पूजन अभिषेक कर सकें -

महाशिवरात्रि के पर्व का आगमन हो रहा है। यह विचार ही साधकों के हृदय को पुलकित कर देता है, रोमाञ्चित कर देता है क्योंकि साधकों का, शिष्यों का यहीं तो पर्व है, जब वे शिव की आराधना कर स्वयं को शिवमय बना सकते हैं, जब वे अपने शिव स्वरूप गुरुदेव का आशीर्वाद प्राप्त कर अनेक क्षेत्रों में निर्विघ्नता पूर्ण सफलता प्राप्त कर लेते हैं।

और फिर तो महाशिवरात्रि की छटा ही निराली है। जिस ओर नजर जाती है, उधर ही भगवान शिव अपने सम्पूर्ण श्रृंगार में विराजमान हैं। ऐसा प्रतीत होता है कि इस लोक में ही नहीं अपितु ब्रह्माण्ड के समस्त लोकों में शिवरात्रि के दिन भव्यता और दिव्यता के साथ भगवान शिव का अर्चन होता है, उससे तो प्रकृति में भी चहुं ओर हर-हर महादेव की ध्वनि गुंजरित होने लगती है।

स्वयं अनादि स्वरूप भगवान शिव भी इस अवसर पर अपने साधकों के मध्य औघड़दानी का स्वरूप लेकर उपस्थित रहते हैं। जिसने जो इच्छा की, उसे पूर्ण किया और कोई भी हताशा या नैराश्य भावना से नहीं रहा।

मनोकामना पूर्ण देव, विश्व के नाथ इन पलों में अपनी परम शक्ति के साथ विराजमान होकर समस्त ब्रह्माण्ड का कल्याण करने को आतुर रहते हैं। उनके हृदय में तो किसी के प्रति भेदभाव नहीं है।

वे देवों के जितने प्रिय हैं, उतने ही दानवों के भी। दानवों ने ने तो ब्रह्मा की साधना की, न विष्णु की। उदाहरणों से यहीं प्रकट होता है कि दैत्य कुल के समस्त श्रेष्ठ तथा बली भगवान शिव के ही उपासक रहे हैं।

रावण भले ही कितना दुराचारी, पापी क्यों न रहा हो, पर उसकी शिवभक्ति से स्वयं भगवान शिव भी पराजित की भाँति ही थे। इसीलिए ही उन्हें देवों के देव महादेव कहा गया। ऐसे ही महादेव की शरण में आकर मारकण्डेय ने बाल्यावस्था में ही यम को भी पराजित कर दिया। उसकी भक्ति देख स्वयं भगवान शिव को प्रकट होना ही पड़ा और यम को असहाय लौटना पड़ा कि ‘जिसकी रक्षा स्वयं भगवान शिव कर रहे हैं, उसके समक्ष तो मैं भी बाध्य हो जाता हूँ।’

भगवान शिव अपने साधक की साधना के समक्ष तत्क्षण उसे फल देने को आतुर हो जाते हैं। ऐसे भगवान शिव को प्रसन्न करने की कला मात्र साधना द्वारा ही ज्ञात की जा सकती है और यह साधना का मार्ग मात्र गुरु ही प्रशस्त कर सकते हैं।

इस अवसर पर तो प्रकृति भी सूर्य की किरणों के माध्यम से भगवान शिव को अर्ध्य अर्पित कर, वायु द्वारा मेघ रूपी पुष्पाक्षत अर्पित कर और स्वयं को भी समर्पित कर रही प्रतीत होती है। अब उसके कण-कण से, उसकी दसों दिशाओं से मात्र एक ध्वनि ‘हर हर महादेव’ ही गुंजरित हो, तो फिर कोई अभाग ही होगा, जो इस पर्व पर भगवान शिव की साधना से वञ्चित रह जाए, क्योंकि यह अवसर है ही भगवान शिव की साधना का।

महाशिवरात्रि ही वह उपयुक्त अवसर है, जब साधक शिव की भाँति मस्त प्रसन्न रह सकता है। ऐसे अद्वितीय अवसर पर समस्त साधकों की इच्छा होती है, कि वे इसको अपने गुरु के सान्निध्य में व्यतीत करें। फिर भी कभी-कभी सामाजिक मर्यादाओं के रूप में ऐसी बाधाएं आड़े आ जाती हैं कि साधक प्रयत्न करते हुए भी अपने गुरु के श्रीचरणों में नहीं पहुंच पाता है।

ऐसे ही कुछ कठोर क्षणों में स्वयं की भावनाओं को समेटते हुए गुरु के पास पहुंचने के निर्णय का त्याग करना पड़ता है।

परन्तु गुरुदेव तो स्वयं शिव सदृश्य हैं, इसलिए उन्हें भी अपने समस्त मानस पुत्रों का, शिष्यों का ध्यान रहता है कि ऐसे महत्वपूर्ण अवसर पर कहीं कोई साधक छूट न जाए, ऐसा न हो कि उनका कोई शिष्य इस महत्वपूर्ण अवसर को यों ही गंवा दे।

इसीलिए तो गुरुदेव ने एक अद्वितीय साधना दी है जो उन साधकों के लिए है जो इस अवसर पर गुरुदेव के सान्निध्य से वञ्चित रहते हैं।

यदि आप शिविर में भाग ले रहे हैं, तो भी शिवरात्रि के दिन

आप इस साधना को सम्पन्न कर सकते हैं, क्योंकि यह साधना कोई सामान्य साधना नहीं अपितु भगवान शिव के अनेक रूपों की समन्वित साधना है।

इस साधना के अन्तर्गत आप जिस इच्छा से भगवान शिव की साधना करेंगे, आपकी वह इच्छा अवश्य पूर्ण होगी, चाहे वह समस्त रोगों से मुक्ति हेतु वैद्यनाथ स्वरूप हो, कुबेराधिपति का स्वरूप हो या फिर शिवत्व प्राप्ति हेतु भगवान शिव की साधना ही हो।

इस साधना का अर्थ है कि भगवान शिव के किसी एक स्वरूप को नहीं अपितु इन समस्त स्वरूपों की प्राप्ति संभव है। इस बार महाशिवरात्रि दिनांक 16 फरवरी 2007 को है।

इस विशेष साधना हेतु निम्न सामग्री चाहिए, जो मंत्र सिद्ध एवं प्राण प्रतिष्ठित हो -

1. पारद शिवलिंग, 2. शिव यंत्र, 3. पांच रुद्राक्ष दाने, 4. विकटा, 5. रुद्राक्ष की माला।

तांत्रोक्त विधि द्वारा प्राण प्रतिष्ठित शिव यंत्र प्रतीक है भगवान शिव का, जिसके माध्यम से साधक धन, धान्य, पद, प्रतिष्ठा, ऐश्वर्य आदि प्राप्त कर सकता है।

विशेष मंत्रों से ‘अभिमंत्रित रुद्राक्ष’ के दाने साधक की समस्त बाधाओं तथा समस्याओं के निवारण हेतु है।

तीव्र प्रभावी मंत्रों से प्राण प्रतिष्ठित ‘विकटा’ साधक को शत्रुओं के समक्ष विजयी बनाती है।

‘रुद्राक्ष माला’ जिससे आप जप करेंगे, उस जप के पश्चात् सवा माह तक धारण करना अपने चारों ओर सुरक्षा कवच का निर्माण करना है।

इस अवसर विशेष के लिए अत्यन्त सीमित मात्रा में ही पैकेटों का निर्माण हो पाया है, क्योंकि प्रत्येक सामग्री की प्राण प्रतिष्ठा में अत्यधिक ऊर्जा, धन और समय व्यय होता है।

अतः यदि आप अपने लिए पैकेट चाहते हैं, तो यथा संभव शीघ्र ही जोधपुर के पते पर अपना पत्र डाल दें ताकि आपको किसी निराशा का सामना नहीं करना पड़े और आप समय पर निर्विघ्न साधना सम्पन्न कर सकें। शिवरात्रि के अवसर पर पूज्य गुरुदेव ने आप सभी साधकों को हार्दिक आशीर्वाद प्रदान किया है।

साधना सामग्री - 450/-

मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान जनवरी 2007 विशेषांक में

पूर्ण शास्त्रोक्त शिव अभिषेक पूजन



वियुपचित्मेघं भूमयः कन्दलिन्यो
नवकुटजकदम्बामोदिनी गन्धवाहाः।
शिखिकुलकलकेकारावरम्या वनन्ताः
सुखिनमसुखिनं वा सवमुत्कण्ठयन्ति॥



मेघाच्छब्द आकाश, नवीन अंकुरों वाली भूमि, नये खिले हुए मालती और कदम्ब के फूलों से सुगन्धित वायु, मधुरों की मधुर वाणी से सुन्दर वन प्रदेश आदि सुखी अथवा दुःखी सभी जनों की काम-आनन्द विषय की उत्कण्ठा को बढ़ाते हैं।

आला है आला है ब्रह्मसंतोष आला

नृचे मन मधूर उठे प्रेम हिलेक

काहे विध करु उपासना जब जीवन है प्रेमोपासना

ऋषि मुनि विचारत हारे, जीवन तो प्रेम ढोर संवारे

ऋतुओं में वसंत को ऋतुराज कहा है, जीवन में प्रेम को साधना कहा है, आनन्द को पूर्णता कहा गया है। खिलते हुए पुष्प को सौन्दर्य कहा है, गंध को मादकता कहा है, यही तो रूप है वसंत का, जब हो जाये प्रेम मधन, श्रीगो आनन्द से शांत हो मन की जलन।

युगों-युगों से भारतीय मन के समक्ष एक ही प्रश्न रहा है कि वह कौन सा उपाय है जिससे मनुष्य की सहज चेतना न ही उन्मादित हो और नहीं कुठित। यही प्रश्न भारतीय जीवन-चिंतन का सर्वाधिक विवादस्पद प्रश्न भी रहा है, क्योंकि युगों-युगों से इसकी विविध रूपों में व्याख्या के उपरांत भी कोई समाधान ऐसा नहीं मिला है जिसके प्रतिपक्ष को लेकर विरोधी मुखर न हुए हो।

‘कृष्ण’ इसी कड़ी के एक अंग ही नहीं सर्वाधिक प्रख्वर विवेचक हैं। वे आदि से अंत तक विवेचक ही तो हैं, शेष जो कुछ है वह उनका आवरण मात्र है, उनकी लीला मात्र है। भारतीय जीवन की सबसे मधुर लीला, प्रेम का सबसे सरस उदाहरण, दुराग्रहों की सर्वाधिक तीक्ष्ण आलोचना और बंधनों के सर्वाधिक निर्मम आघात - इतना सब कुछ समेट लेने वाले ‘विचारक’ फिर यदि सहज ही साक्षात् ब्रह्म लिये गये, तो आश्चर्य ही कैसा?

भारतीय जीवन की यह व्याख्या करने की प्रवृत्ति का साहस ही उसकी गतिशीलता का आधार है। उसमें जीवन्तता और नित नूतनता भी इसी कारण से है। कृष्ण ने इसी परम्परा को कुछ यूं धधका दिया, जो कई सहस्र वर्षों से तो बुझी नहीं है और शायद कुछ सहस्र वर्षों तक अभी बुझेगी भी नहीं।

पर क्या है वह परम्परा जिसे उन्होंने मृतप्राय अवस्था से जागत कर प्रज्ञवलित कर धधका देना चाहा?

सौन्दर्य तो जीवन का उमंग है,
छलछलाहट है, आनन्द है, मस्ती है,
सौन्दर्यहीन जीवन किसे अच्छा लगेगा?

और पिछर सौन्दर्य के ऊपर तो ऋषियों ने श्रेष्ठ गंथ भी लिखे हैं, तभी तो सभी ने अपने हर गंथ में सौन्दर्य का प्रयोग किया है।

- ☆ क्या केवल स्त्री - पुरुष के रागात्मक सम्बन्ध?
- ☆ क्या केवल हास्य-विनोद की अठखेलियां?
- ☆ क्या केवल नृत्य और रास की मधुरिमा?

केवल इतने से ही तो वह चित्त सम्पूर्ण नहीं होता, जो कृष्ण का चित्त लगे, जो जगदगुरु का प्रतीक बने अथवा जो साक्षात् ईश्वर की कलाओं का प्रतिबिम्ब बने।

ये तो रंग हैं केवल चार या पांच रंग, जबकि हम ही कहते हैं, कि वह षोडश कलाओं से युक्त व्यक्तित्व था। वह अद्वितीय युग पुरुष केवल कुछ रंगों से ही युक्त रहा होगा और अपने साथ किसी गंभीर प्रवाह का चिंतन नहीं लाया होगा, यह बात हृदय को कुछ भाती नहीं। पर हम उसे समझें भी तो कैसे? क्योंकि उसे समझने के लिए उसके अनुसार उसके तद्रूप होना होगा और हमें उसके तद्रूप होने की क्रिया का रहस्य ही तो जात नहीं।

इसी से हम उसकी केवल एक कला 'प्रेम' को समझ लेना चाहते हैं, क्योंकि निर्मल प्रेम की श्वेत धारा में ही तो वे सात रंग छिपे हैं, जो कभी उसका हास्य बनकर प्रकट होते हैं, तो कभी उसका लास्य बून कर; लेकिन हम उसकी यह श्वेत धारा जो प्रेम का शुभ्र निर्झर थी, उसे कैसे परख सकते हैं?

उसे परखने और समझने की क्षमता तो केवल उसी में थी, जो स्वयं गौरांगी थी, जो स्वयं अत्यन्त शुद्ध निर्मल और

उज्जवल थीं, जो समर्पित भी थीं और जो निर्मलता से भरी अभिमानी थी। जो समूह में भी उपस्थित थी और जो वहां उपस्थित नहीं थीं, जो उनको मान भरी दृष्टि से एक ही पल में देख भी रही थीं और जिसकी दृष्टि भूमि की ओर भी थी। वो 'राधा' थीं!

जो कृष्ण अपने वचनों से न कह सके, जिसे स्पष्ट किया ही नहीं जा सकता था, मानो वह उसी की व्याख्या करने के लिए ही अवतरित हुई थीं। जीवन कैसे उन्मुक्त भी हो, जीवन कैसे मर्यादित रहे - इसका रहस्य तो राधा ही जानती थी। इसी से राधा का स्थान कृष्ण से कुछ ऊंचा ही है।

वे कृष्ण के जीवन का मात्र प्रस्फुटन ही नहीं, निरन्तर स्पंदन भी है। वे कृष्ण की मात्र सहचरी ही नहीं, उनकी पथ प्रदर्शिका भी हैं। वे प्रेम के उस स्वान्निल जगत में केवल एक पक्षधर ही नहीं, साक्षात् प्रेम हैं। वे कृष्ण की श्वासों से फूटी वह उच्छ्वास हैं जो आज तक बांसुरी के स्वर में इस जगत में गुजरित है; इसी से वे मात्र शुभ्र, शीतल, परम सौन्दर्यवती नारीत्व की पूर्ण प्रतीक और चिरविरहणी मात्र ही नहीं, साक्षात् जगन्माता हैं। जिस प्रतिमा ने अपने माधुर्य से जगत को इतने दिन जीवित रहने की आस्था दी हो, जिसने स्वयं विरह में झुलस कर भी अपने प्रिय को अपने हृदय में ही संजो लेने की कला जगत को सिखाई हो, जिन्होंने मूक रहकर भी प्रेम के अनंत गीतों की सृष्टि की हो, उनके प्रति श्रद्धा व्यक्त भी कैसे की जा सकती है?... कृष्ण की तो वे सर्वस्व थीं ही।

इसी से यदि कृष्ण को समझना है, यदि उस रहस्य को समझना है, तो चिरकाल से प्रश्न बन कर खड़ा है, कि जीवन भोगयुक्त होते हुए उच्छ्वर्ष्णखल कैसे न हो - तो राधा को समझना ही पड़ेगा।

... वे मन्दहासिनी तो समझ ही रही थीं कि ये जो गोपिकाओं के झुण्ड में खड़ा है, वह कैसे-कैसे कटाक्षों के साथ मेरी ही ओर तो निहार रहा! ये केवल अपने वर्ण से ही मेघ जैसा श्याम नहीं, हृदय से भी श्याम होगा! देखो न, तभी तो सबको कैसे विघ्रम में डाल कर, ओठों के कोने को बार-बार दबा कर, मेरी ही ओर अपने स्मित की द्युति झलका कर कैसे सदेश दे रहा है!

- ओह! इसके तो रोम-रोम में ही भाद्रपद के मेघों की चपलता भरी है।

यही तो राधा-कृष्ण की लीला का अद्भुत रहस्य है, जिसको जितना सुलझाया जाय, उतना ही उलझता जाता है, क्योंकि कृष्ण की चर्चा करो, तो राधा अपने सलज्ज मुख पर स्मित

यहीं तो राधा-कृष्ण की
लीला का अद्भुत रहस्य है,
जिसकी जितना सुलझाया
जाय, उतना ही उलझता जाता है,
जाता है, क्योंकि कृष्ण की
चर्चा करो, तो राधा अपने
सलज्ज मुख पर स्मित
लैकर विवरण करने लगती
है और राधा की चर्चा करो,
तो वही चित्तवीर आस-पास
मंडराने लगता है। कोई
समझ ही नहीं सकता, कि
दोनों में विभेद करें भी तो
कैसे?

लेकर विचरण करने लगती है और राधा की चर्चा करो, तो वही चित्तचोर आस-पास मंडराने लगता है। कोई समझ ही नहीं सकता, कि दोनों में विभेद करें भी तो कैसे?

पता नहीं दोनों में कोई विभेद है भी नहीं या नहीं। यद्यपि प्रेम की कुछ-कुछ समझ होने लग जाती है। कोई चतुर कोय प्रेम की मूक, अनहृद बनकर गूँजने लग जाती है। आह्लाद में तृप्त हो गए नयनों के सामने धूप की ऊप्सा भी शीतल पड़ स्वर्णिम छिलमिलाहट के साथ बिखरने लग जाती है और कपोलों पर गुनगुनी धूप सी लालिमा बिखरने लग जाती है।

... और जिसने ऐसा कुछ अनुभव न किया, जिसके मन ने प्रेम के झूले पर चढ़कर ऊँची पीँगें न लीं, जो एकदम से उठकर नाचने न लग गया, उसने न तो प्रेम को समझा है, न आह्लाद को और न ही ध्यान-धारणा-समाधि को, और कृष्ण को... तो खैर उसने समझा ही नहीं।

क्योंकि कृष्ण का सम्पूर्ण स्वरूप एक मर्यादित उच्छवास के अतिरिक्त है ही क्या? जो मर्यादित भी हो और जो उन्मुक्त भी हो, वही तो 'कृष्ण' है।

यदि कोई कहे, कि ये दो विरोधी गुण एक साथ संभव ही नहीं, तो स्पष्ट है, कि उसके हृदय में कृष्णत्व का प्रवेश या

जवानी की देह-गंध

हर किसी के तन में देह-गंध होती है। इसमें खास बात यह है कि यह गंध हर किसी में अलग-अलग होती है। देह-गंध ने वैज्ञानिकों को इस हृद तक आकर्षित किया है कि उस पर शोध किये गये हैं। इतना ही नहीं जीव विज्ञान में देह-गंध पर 'फीरोमीन' नाम से पूरा एक अध्याय बना दिया गया है। वैज्ञानिकों का कहना है कि देह-गंध पर्सीने से अलग है। पर्सीने से जहां दुर्गंध आएगी वहां देह-गंध जरा हट के होगी।

यह गंध पुरुष और महिला दोनों में ही होती है मगर महिला की गंध का विशेष महत्व है। यह गंध जवानी में विपरीत सेक्स के आकर्षण का केन्द्र बनती है जो शादी के बाद पति-पत्नी के बीच कड़ी को मजबूत करने में सीमेंट का काम करती है। मां बनने पर यहीं गंध बच्चे को ममता का पहला पाठ पढ़ाती है।



उदभव भी संभव नहीं। वे स्त्री-पुरुष गम्बन्धों के पर्याय नहीं हैं अपितु उसे स्पर्श करते हुए भी उम्म्म परं ले जाकर ब्रह्मत्व के दर्शन करने का हेतु बन कर यथा जगत में आयं जगदगुरु ही तो हैं। यदि रति सुख ही समाधि की भाव भूमि बनाता, तो सभी कामुक व्यक्ति प्रेम के साकार वरूप बन चुके होते।

किन्तु यमुना उल्टी नहीं बहती, वह तो बहते-बहते जाकर उसी शुभ्र धरवत गंगा रूपी गंधा में मिल कर अपना नाम, स्वरूप, प्रवाह सभा कुछ समाप्त कर परमनृत हो जाता है। कृष्ण यहीं संदेश देने आये थे। प्रेम में, अपन प्रमाण्यद में स्वयं को निमग्न कर देने का ही दंग बनाने आये थे। इसी से वे चिरस्मरणीय बन सके हैं। इसी से आज तक कई युग व्यतीत हो जाने के बाद भी उनका नाम प्रवाह का, माधुरीं का, संगीत और प्रेम का ही प्रतीक बना हुआ है।

यहीं वसंत का भाव है। वर्षन के चिरंग॥ग्रिन्व की कला है। शीत से निकल कर ऊप्सा की ओर जाने का घटना ही 'वसंत' है। ऊब, नड़ता और भावनालौनता से मुक्त होकर जीवन के स्पंदन को ग्रहण करना ही ता 'वसंत' है। वर्षन केवल एक ऋतु मात्र ही नहीं है। इसी से यदि वर्षन का राधा-कृष्ण का पर्व कहा जाय तो उचित होगा। वर्षन की इस 'युग्म' से अधिक स्पष्ट व्याख्या और हो भी क्या यकीनी है?

ब्रह्मांकों की वाणी

मेष -

इस माह आप स्वयं पर बहुत अधिक दबाव महसूस करेंगे, इस कारण आप स्वयं को बुझा-बुझा एवं अस्वस्थ महसूस करेंगे। किसी नजदीकी व्यक्ति से धोखा भी हो सकता है अतः एक तरह से यह माह आपके लिए चुनौती पूर्ण ही होगा जिसमें आपको अपने साधना बल एवं धैर्य से विजय प्राप्त करना है। यह माह आपके लिए राज्यपक्ष की दृष्टि से अनुकूल सिद्ध होगा। प्रणय सम्बन्धों में नवीनता के स्पर्श से आनन्द प्राप्त होगा। आप 'ललिताम्बा साधना' (अक्टूबर 2006) करें। तिथियां - 4, 7, 11, 15, 17, 24, 27 हैं।

वृष -

समय के गति को समझते हुए अपने आपको को बदलें अन्यथा शत्रु बाधा उत्पन्न हो सकती है तथा आर्थिक हानि भी उठानी पड़ सकती है। बेवजह किसी के प्रति द्वेष नहीं रखें। कारोबारी मामलों में आई उदासीनता और जीवन के प्रति अरुचि की भावना को समाप्त करना होगा। इस माह आपको परिवार से बहुत अनुकूलता प्राप्त होगी तथा परिवार में चला आ रहा विवाद भी समाप्त होगा। संतान पक्ष की ओर से विशेष समाचार प्राप्त होंगे। घर परिवार में आपके मान-सम्मान में वृद्धि होगी। आप 'आज्ञावक्र जागरण साधना' (अगस्त 2006) करें। तिथियां - 1, 7, 9, 13, 18, 22, 25 हैं।

भित्तुन -

इस माह किसी भी व्यक्ति की उपेक्षा न करें तथा दूसरों के मान-सम्मान का ध्यान रखें। किसी से भी वाद-विवाद होने की स्थिति में संयम रखें। आपको इस माह कई नई समस्याओं से सामना करना पड़ सकता है। परन्तु समस्याएं अल्पकालिक ही होगी। घर परिवार में प्रसन्नता पूर्ण वातावरण रहेगा। विद्यार्थी वर्ग के लिये समय बहुत अनुकूल रहेगा, मेहनत करने पर सफलता उनके हाथ लगेगी। इस माह आपके विदेश यात्रा के विशेष योग बन रहे हैं। स्त्रियों को परिवारजनों का विशेष सहयोग प्राप्त होगा। आप 'पारद गणपति साधना' (अक्टूबर 06) करें। तिथियां - 1, 6, 8, 13, 15, 19, 26 हैं।

कर्क -

इस माह आपको शारीरिक पीड़ा का सामना करना पड़ सकता है। जिस कारण आप मानसिक तनाव की स्थिति में भी संभल कर रहे हैं। इस माह आपके लिए किसी भी प्रकार की लापरवाही बरतना नुकसानदेह हो सकता है। मित्रों एवं सम्बन्धियों से किसी भी प्रकार के सहयोग की आकांक्षा नहीं रखें। अपना कार्य स्वयं एवं अपनी समझबूझ से करें। परिवार में बिना वजह कलेह और परेशानी हो सकती है। नये कार्य कुछ समय के लिए टाल दें। आप 'कनकधारा साधना' (अक्टूबर 2006) करें। तिथियां - 2, 7, 10, 14, 17, 20, 27 हैं।

सिंह -

यह माह पिछले कुछ महीनों की तुलना में आप पर भारी होता नजर आ रहा है। इस माह आपको आर्थिक अनुकूलता तो प्राप्त होगी परन्तु साथ ही मानसिक परेशानीयां आयेगी। माह के अंत में आपको बहुत से कार्यों में व्यर्थ धन व्यय करना पड़ सकता है। परिवार में कलह पूर्ण वातावरण रहेगा। पति-पत्नी के बीच भी अनबन रहेगी। संतान पक्ष आपके अनुकूल नहीं होने से आप और अधिक परेशान होंगे। अपने इष्ट पर पूर्ण श्रद्धा रखते हुए अधिक से अधिक समय मंत्र-जप एवं साधना में व्यतीत करें। आप 'शूलिनी साधना' (जुलाई 2006) करें। तिथियां - 2, 4, 7, 10, 11, 14, 21, 23 हैं।

कन्या -

यह माह आपके लिए अनुकूल ही रहेगा। पिछले काफी समय से आ रही बाधाएं समाप्त होने के आसार है। इस माह आपके परिवार मांगलिक कार्य का विशेष योग बन रहा है। कुंवरे लड़के-लड़कीयों के विवाह के भी श्रेष्ठ योग बन रहे हैं। किसी प्रिय व्यक्ति से जचानक मुलाकात हो सकती है। नौकरीपेशा व्यक्तियों के उच्चति के बहुत अच्छे योग बन रहे हैं तथा व्यापारी वर्ग को भी व्यापार में विशेष लाभ की स्थिति होगी। बेरोजगारों तथा विद्यार्थीयों को समय का सदुपयोग करना चाहिए। आप 'मृगाक्षी रूप गर्विता किन्त्री साधना' (नवम्बर 2006) करें। तिथियां - 1, 4, 7, 8, 16, 18, 24 हैं।

रावणी, अमृत,

विष्वाकर, शिवि योग

सिद्ध योग 6, 12, 27 दिसम्बर / 10, 12, 27 जनवरी ☆ सर्वार्थ सिद्ध योग 1, 28, 29 दिसम्बर / 1, 10, 13, 15, 25, 26, 29 जनवरी ☆

अमृत सिद्ध योग 1 दिसम्बर / 29 जनवरी ☆ रवि पुष्य योग 12 नवम्बर ☆

इस मास ज्योतिष की दृष्टि से : उत्तर प्रदेश में राजनैतिक समीकरण बनेंगे। केन्द्र में सरकार को परेशानी का सामना करना पड़ेगा। आर्थिक उन्नति का वातावरण श्रेष्ठ अवश्य रहेगा लेकिन शेयर मार्केट में उथल-पुथल की संभावना है। भारत अमेरिकी सम्बन्ध और अधिक सुदृढ़ होंगे। पाकिस्तान, बंगलादेश में हिंसा का वातावरण बढ़ने की संभावना है।

तुला -

आपकी सबसे बड़ी कमी यह है कि आप कई कार्य एक ही समय में करने की चेष्टा करते हैं। आपको चाहिए कि अपनी समस्त शक्ति एक ही कार्य क्षेत्र में लगाएं जिससे आपको उचित सफलता प्राप्त हो। कुछ समय से आप तीर्थ यात्राएं करते आ रहे हैं जिसके कारण आप आत्मिक बल एवं आध्यात्मिक श्रेष्ठता अनुभव कर रहे हैं। इस अवसर का उपयोग करते हुए आप साधनाएं संपन्न करेंगे तो आध्यात्मिक एवं भौतिक लाभ अवश्य प्राप्त होंगे। आध्यात्मिक दृष्टि से यह माह श्रेष्ठ सिद्ध होगा। आप ‘‘कामाख्या साधना’’ (अक्टूबर 2006) करें। तिथियां - 6, 8, 14, 16, 19, 24, 27 हैं।

वृश्चिक -

आपका स्वभाव वैसे तो मधुर है परंतु कुछ समय से आप अभिमानी प्रवृत्ति के हो गए हैं। यह आपके लिए अनुकूल नहीं। इससे हानि आपको ही होगी। आपको चाहिए कि प्रेम एवं सौहार्द से अपने कार्य क्षेत्र में आगे बढ़ें। इससे आप दूसरों का पूर्ण सहयोग प्राप्त कर सकेंगे तथा सफलता आपके कदम चूमेगी। इस माह आपके कई नए संपर्क बनेंगे, जिससे आपका मनोबल बढ़ेगा। शीघ्र ही आपको इनसे लाभ होंगा आप अवसर को छूके बिना अपनी सारी शक्ति लक्ष्य प्राप्ति में लगा दें। आप अनुकूलता हेतु ‘कुबेर साधना’ (सितम्बर 2006) अवश्य सम्पन्न करें। तिथियां - 4, 8, 16, 17, 23, 29 हैं।

धनु -

इस माह परिवार के साथ आपका समय व्यतीत होगा। प्रारम्भ में समय की कमी के कारण ऐसा करने पर आपको क्षोभ हो सकता है परन्तु आखिर में आप प्रसन्न अनुभव करेंगे तथा परिवार के साथ बिताए उन पलों को अपनी यादों में संजो कर रखने का प्रयत्न करेंगे। पूरा मास प्रसन्नता पूर्वक व्यतीत होगा तथा सामाजिक आयोजनो मनोरंजन कार्यक्रमों में आप बढ़चढ़ कर भाग लेंगे। नयी खरीददारी के लिए भी अच्छा समय है। बेरोजगारों को सफलता के विशेष अवसर प्राप्त होंगे। आप ‘पारद गणपति साधना’ (अक्टूबर 2006) अवश्य करें। तिथियां - 8, 13, 14, 17, 23, 27 हैं।

मकर -

क्षमता से अधिक आप कार्य करने का प्रयास करेंगे तो आपके स्वास्थ्य के लिए प्रतिकूल सिद्ध हो सकता है। इस माह अपने स्वास्थ्य का विशेष ध्यान रखें। इसलिए कहीं बाहर भोजन न करें तो अच्छा होगा। नए व्यापार को आरंभ करने हेतु यह समय अनुकूल है। नौकरीपेशा व्यक्तियों को भी पदोन्नति, स्थानांतरण अथवा आय वृद्धि के अवसर प्राप्त करने हेतु प्रतियोगी परीक्षाओं तथा साक्षात्कारों के लिए भली भाँति तैयारी कर लें। किसी सिफारिश पर निर्भर रहने की अपेक्षा स्वयं की तैयारी ठीक रखें। आप ‘पद्मावती साधना’ (मई 2006) करें। तिथियां - 6, 8, 14, 16, 19, 24, 27 हैं।

कुंभ -

माह के आरम्भ में आप स्वयं को असमंजस में पाएंगे कि यह करुं या यह करुं। अंत में आप अपनी अंतःशक्ति द्वारा सही निर्णय लेने में सफल होंगे। जिससे आपको कार्यक्षेत्र में अभूतपूर्व सफलता प्राप्त होगी। नौकरीपेशा व्यक्तियों की पदोन्नति, आय वृद्धि भी हो सकती है। कुल मिलाकर परिस्थिति सर्वथा आपके अनुकूल होगी तथा आप हर्षित अनुभव कर पाएंगे। माह के अंत में यात्रा के योग भी बन रहे हैं तथा यात्रा द्वारा आपको अत्यधिक लाभ भी होगा। आप ‘घोड़शी त्रिपुर सुन्दरी साधना’ (नवम्बर 06) करें। तिथियां - 2, 7, 9, 13, 22, 28 हैं।

मीन -

कोई भी कार्य करने से पहले भली भाँति सोच विचार कर लें और अपने शुभचिंतकों से परामर्श अवश्य करें। पारिवारिक उत्सवों और समारोहों में आप व्यस्त रह सकते हैं। जीवन साथी के साथ संबंध मधुर बने रहेंगे। इस माह साधनाओं तथा अध्यात्म में भी आपकी अधिक रुचि रहेगी। कला तथा संचार क्षेत्रों से जुड़े व्यक्तियों के लिए यह समय उत्तम रहेगा तथा उन्हें आर्थिक सफलता के साथ साथ पुरस्कार भी प्राप्त हो सकते हैं। आप ‘हर गोरी सिद्धि साधना’ (अगस्त 2006) सम्पन्न करें। तिथियां - 5, 8, 12, 18, 23, 27, 28 हैं।

इस मास के व्रत, पर्व एवं त्यौहार

12	दिसम्बर पौष कृष्ण पक्ष: - 08	मंगलवार	कालाष्टमी
16	दिसम्बर पौष कृष्ण पक्ष: - 11	शनिवार	सफला एकादशी
18	दिसम्बर पौष कृष्ण पक्ष: - 13	सोमवार	सोम प्रदोष
20	दिसम्बर पौष कृष्ण पक्ष: - 30	बुधवार	पौषी अमावस्या
31	दिसम्बर पौष शुक्ल पक्ष: - 12	गविवार	पुत्रदा एकादशी
01	जनवरी पौष शुक्ल पक्ष: - 13	सोमवार	सोम प्रदोष
03	जनवरी पौष शुक्ल पक्ष: - 15	बुधवार	पूर्णिमा व्रत



सागराया हूं

साधक, पाठक तथा सर्वजन सामान्य के लिए समय का वह रूप यहाँ प्रस्तुत है, जो किसी भी व्यक्ति के जीवन में उन्नति का कारण होता है तथा जिसे जान कर आप ख्याल अपने लिए उन्नति का मार्ग प्रशस्त कर सकते हैं।

नीचे दी गई सारिणी में समय को श्रेष्ठ रूप में प्रस्तुत किया गया है – जीवन के लिए आवश्यक किसी भी कार्य के लिये, वाहे वह व्यापार से सम्बन्धित हो, नौकरी से सम्बन्धित हो, घर में शुभ उत्सव से सम्बन्धित हो अथवा अन्य किसी भी कार्य से सम्बन्धित हो, आप इस श्रेष्ठतम समय का उपयोग कर सकते हैं और सफलता का प्रतिशत 99.9% आपके भाव्य में अंकित हो जायेगा।

ब्रह्म मुहूर्त का समय प्रातः 4.24 से 6.00 बजे तक ही रहता है।



वार/दिनांक	श्रेष्ठ समय
रविवार (विसम्बर 3, 10, 17, 24, 31)	दिन 07:36 से 10:00 तक 12:24 से 02:48 तक 04:24 से 04:30 तक रात 07:36 से 09:12 तक 11:36 से 02:00 तक
सोमवार (विसम्बर 4, 11, 18, 25) (जनवरी 1)	दिन 06:00 से 07:30 तक 09:00 से 10:48 तक 01:12 से 06:00 तक रात 08:24 से 11:36 तक 02:00 से 03:36 तक
मंगलवार (विसम्बर 5, 12, 19, 26) (जनवरी 2)	दिन 06:00 से 07:36 तक 10:00 से 10:48 तक 12:24 से 02:48 तक रात 08:24 से 11:36 तक 02:00 से 03:36 तक
बुधवार (विसम्बर 6, 13, 20, 27) (जनवरी 3)	दिन 06:48 से 11:36 तक रात 06:48 से 10:48 तक 02:00 से 04:24 तक
गुरुवार (विसम्बर 7, 14, 21, 28)	दिन 06:00 से 06:48 तक 10:48 से 12:24 तक 03:00 से 06:00 तक रात 10:00 से 12:24 तक
शुक्रवार (विसम्बर 1, 8, 15, 22, 29)	दिन 09:12 से 10:30 तक 12:00 से 12:24 तक 02:00 से 06:00 तक रात 08:24 से 10:48 तक 01:12 से 02:00 तक
शनिवार (विसम्बर 2, 9, 16, 23, 30)	दिन 10:48 से 02:00 तक 05:12 से 06:00 तक रात 08:24 से 10:48 तक 12:24 से 02:48 तक 04:24 से 06:00 तक

यह हमने नहीं करा हमिहिरने कहा है

किसी भी कार्य को प्रारम्भ करने से पूर्व प्रत्येक व्यक्ति के मन में संशय-असंशय की भावना रहती है, कि यह कार्य सफल होगा या नहीं, सफलता प्राप्त होगी या नहीं, बाधाएं तो उपस्थित नहीं हो जायेगी, पता नहीं दिन का प्रारम्भ किस प्रकार से होगा, दिन की समाप्ति पर वह स्वयं को तनावरहित कर पायेगा या नहीं। प्रत्येक व्यक्ति कुछ ऐसे उपाय अपने जीवन में अपनाना चाहता है, जिनसे उसका प्रत्येक दिन उसके अनुकूल एवं आनन्द युक्त बन जाय। कुछ ऐसे ही उपाय आपके समक्ष प्रस्तुत हैं जो वराहमिहिर के विविध प्रकाशित-आपकाशित ग्रंथों से संकलित हैं, जिन्हें यहां प्रत्येक दिवस के अनुसार प्रस्तुत किया गया है तथा जिन्हें सम्पूर्ण करने पर आपका प्रा-दिन पूर्ण सफलतादायक बन सकेगा।

जनवरी

- प्रातः 51 बार 'ॐ ह्रौं जू सः' मंत्र का जप करें।
- सरसों के तेल का दीपक लगाकर 5 बार हनुमान बाण का पाठ करें। विघ्न समाप्त होंगे।
- तीन निर्धन कन्याओं को भोजन एवं दक्षिणा प्रदान करें।
- प्रातः गुरुदेव के चित्र पर श्वेत पुष्प अर्पित कर, निम्न मंत्र का 7 बार उच्चारण करें - 'ॐ गुरु देवाय विद्महे परं ब्रह्मनाय धीमहि, तद्गे गुरुः प्रचोदयात्'।
- 'कामदा' (न्यौछावर 60/-) का कुंकुम, अक्षत एवं पुष्प से पूजन करें। फिर किसी कामना की पूर्ति हेतु प्रार्थना करें। कामदा जल में प्रवाहित कर दें।
- घर से बाहर कदम रखते हुए 'हुं फट' का उच्चारण करें, विजय प्राप्त होगी।
- 'सूर्यभ' (न्यौछावर 50/-) को प्रातः कलश में डालकर 10 बार 'ॐ ह्रौं सूर्योदित्याय नमः' का जप करें। फिर पूरे घर में जल छिड़क दें। रोग, शोक समाप्त होंगे।
- प्रातः 15 मिनट 'शिवोऽहं शंकरोऽहं' का जप करें।
- तुलसी के पौधे का पूजन अवश्य करें।
- भगवान गणपति का पूजन लड्ढु एवं दुर्वा से करें, मंगल होगा।
- प्रातः काल 'अं' बीजमंत्र का 21 बार उच्चारण करते हुए, प्रत्येक बार एक अक्षत गुरु चित्र पर अर्पित करें।
- प्रातः गाय को रोटी खिलाने के पश्चात ही भोजन करें।
- 'ॐ शं शनैश्चराय नमः' का 8 बार जप करते हुए सरसों का तेल 'शनैश्चरी गुटिका' (80/-) पर चढ़ाएं। फिर पीपल की जड़ में डाल दें। संकट दूर होंगे।
- प्रातः सूर्य साधना अवश्य सम्पन्न करें।
- शिवलिंग पर 5 बिल्व पत्र अर्पित करें।

- प्रातः काल हनुमान मन्दिर में सरसों के तेल का दीपक प्रज्ञवलित करें।
- प्रातः 11 बार 'अं गणपत्ये नमः' का उच्चारण करें।
- गुरु चित्र के समक्ष धी का दीपक लगाकर निम्न श्लोक का 6 बार जप करें -
न गुरोरधिकं तत्वं न गुरोरधिकं तपः
तत्वज्ञानात् परं नास्ति तस्मै श्री गुरवे नमः
- आज दही खाकर ही घर से बाहर जाएं।
- आज काले कपड़े तथा सरसों का तेल दान करें।
- गुरु जन्म दिवस पर 'निखिल स्तवन' का पाठ करें। दिन भर गुरु स्मरण करें तथा गुरु सेवा का संकल्प लें।
- 'महाकाल गुटिका' (न्यौछावर 90/-) का पूजन कर शिव मन्दिर में अर्पित कर दें। बाधा समाप्त होगी।
- हनुमान चालीसा का पाठ कर ही घर से निकलें।
- निम्न मंत्र का का 5 बार जप करते हुए गणपति का ध्यान करें।
परं ज्ञानं पर ब्रह्म परेशं परमाद्भुतम्।
विघ्न विघ्न हरं शातं गणेशं प्रणमाम्यहम्॥
- आज 3 माला अतिरिक्त गुरु मंत्र का जप करें।
- प्रातः 'श्री प्रद' (न्यौछावर 60/-) को चावल की ढेरी पर स्थापित कर, उसका पूजन करें। धन लाभ होगा।
- आज काले जानवरों को भोजन करायें।
- सूर्य को अधर्य देकर, लाल पुष्प अर्पित करें।
- 'शिवा' (न्यौछावर 60/-) का संक्षिप्त पूजन कर उसे किसी शिव मन्दिर में चढ़ा दें।
- बजरंग बाण का अवश्य पाठ करें।
- पांच लौंग एक पीले कागज में बांध कर दिन भर अपने साथ रखें, सफलता प्राप्त होगी।

जीवन का स्वल्प है

क्रिष्ण-कौन्द्रेय-योगीवन इनका आधार है

काम-कैति-कर्मेग



जीवन तो संसार में आने वाला प्रत्येक ग्राणी जीता ही है कुछ जीवन धूत-धूत गुजारते हैं, कुछ जीवन को जिम्मेदारी समझकर निभाते हैं, कुछ जीवन को एक यात्रा मानकर कालचक्र के अधीन जीते हैं, कुछ रोते हुए, कुछ परेशान से जीवन जीते हुए अपनी जीवन चर्चा पूर्ण करते हैं, कुछ हर समय युवा बने रहते हैं, कुछ असमय ही बृद्ध हो जाते हैं, कोई रोग से परेशान है, तो कोई परिवार से, कोई शत्रु से, तो कलह से और कुछ लोग तो खिलने से पहले मुरझा जाते हैं, जब ऐसे व्यक्तियों को देखते हैं तो लगता है ये जीवन का तात्पर्य कब समझेंगे, क्या इनके जीवन में वर्षा, शीत और ग्रीष्म ही है अथवा वसंत भी कभी इनके जीवन में आता है, जो न समझे वसंत को वह जीवन पुष्ट को विकसित कर ही नहीं सकता है, हर वसंत जीवन में एक अनमोल सदेश देता है, हृदय मन में हितोर उठाता है, कब समझेंगे इसे अब भी देर नहीं हुई वसंत आपके मन के द्वार खड़ा है, मन की कोठरी खोलिये, सुवासित सुगन्ध, मादक गंध भाव को भरिये मन में और प्राणों में ऊर्जा का संचार करिये -

◆ ◆ ◆ ◆ ◆ ◆ ◆ ◆ ◆ ◆ ◆ ◆

वास्तविकता यह है, कि व्यक्ति प्रेम के बगैर रह ही नहीं सकता। परन्तु प्रेम केवल भाग्यशाली व्यक्तियों को ही प्राप्त हो पाता है जिनके मन में प्रेम की कोंपल फूटती है, वे अति सौभाग्यशाली होते हैं। प्रेम का जागरण होने का तात्पर्य है, जीवन में अनन्त सम्भावनाओं के द्वार खुलना।

जिनके मन में प्रेम पैदा होता है, स्वतः ही उनके जीवन में ऐसे प्रवाहित होने लगता है, ऐसा ऐसा जो व्यक्ति के जीवन को आनन्द से परिपूर्ण करने में पूर्ण सक्षम होता है।

प्रेम में कभी किसी प्रकार का सौदा नहीं होता, प्रेम तो मात्र कुछ दे देने की प्रक्रिया है। जो व्यक्ति कुछ प्राप्त करने की लालसा रखते हैं वे प्रेम नहीं कर सकते। प्रेम तो अपने आपको विसर्जित करने की प्रक्रिया है, अपने आपको पूर्ण समर्पित करने की भावना है।

जीवन का अर्थ यह नहीं होता, कि केवल श्वास-प्रश्वास की क्रिया में निमग्न रहें। रोता हुआ, उदास, मलिन, दरिद्रता से युक्त जीवन 'जीवन' नहीं कहलाता। इस प्रकार के 'जीवन' में कोई उत्तरति भी नहीं हो सकती।

जीवन में उत्तरति तब होती है जब मन में प्रेम हो, आनन्द हो, प्रसन्नता हो, प्रफुल्लता हो, हर समय कुछ नया घटित कर देने की क्षमता हो और उत्साह हो।

ऐसी स्थिति जीवन में कब आती है?

ऐसी स्थिति जीवन में तब आती है जब मन जाग्रत होता है प्राणतत्त्व जाग्रत होता है, स्वचेतना का जागरण होता है।

जब मन जाग्रत होता है, तभी जीवन में प्रेम की उत्पत्ति होती है।

जब ऐसी स्थिति आती है, तो समझना चाहिए कि प्रेम हुआ है। प्रेम समर्पण की श्रेष्ठतम अवस्था है... और जो अपने

आपको ही विसर्जित कर देते हैं, वे सब कुछ प्राप्त भी कर लेते हैं। देना, अपने आपको मिटा देना।

'प्रेम' शब्द आज समाज में अपना एक अत्यन्त ही धिनौना स्वरूप धारण कर चुका है। जहां भी प्रेम शब्द का उच्चारण होता है, वर्ही मानस में वासना का भाव आता है। वासना मतलब 'सेक्स'। जहां वासना होगी, वहां प्रेम हो ही नहीं सकता और जहां प्रेम नहीं है, वहां -

प्रेम तो फूलों से हो सकता है, पत्तियों से हो सकता है, उमड़ते-धुमड़ते बादलों से भी हो सकता है।

प्रेम तो माँ से भी हो सकता है, बहन से भी हो सकता है और वास्तविक प्रेम तो गुरु और इष्ट से ही संभव है।

प्रेम और समर्पण की कला स्त्री से ही सीखी जा सकती है, क्योंकि यह मात्र स्त्री हृदय की ही विशेषता हो सकती है। स्त्री हृदय का तात्पर्य भाव प्रधान हृदय से है।

कोई पुरुष भी तभी प्रेम कर सकता है, जब उसके अन्दर भाव पक्ष की प्रधानता हो, क्योंकि जो पुरुष-प्रवृत्ति होती है, वह केवल छीनने में ही विश्वास रखती है। पुरुष केवल सौदा कर सकता है, कि मैंने इसको क्या-क्या दिया है और बदले में मुझे इससे क्या-क्या प्राप्त हुआ है।

'काम' शब्द का नाम आते ही लोग इस प्रकार विचार करने लग जाते हैं। मानों वे किसी विचित्र वस्तु के बारे में विचार कर रहे हैं जो कि जीवन के लिये अनिष्टकरी है। जबकि यह धुब्र सत्य है कि जीवन का आधार ही प्रणय, काम है। जिसके कारण ही यह सृष्टि निरन्तर अग्रसर हो रही है प्रत्येक आर्य ऋषि ने विवाह किया, सन्तानें हुई, प्रत्येक देवता ने विवाह किया और यहाँ तक कि जब हम सर्व श्रेष्ठ त्रिदेव ब्रह्मा, विष्णु, महेश की चर्चा करते हैं तो विष्णु ने लक्ष्मी से, भगवान शिव ने पार्वती से तथा सृष्टि निर्माता ब्रह्म ने सरस्यती से विवाह कर गृहस्थ धर्म निभाया और यह सृष्टि क्रम निरन्तर चला आ रहा है। और इसका आधार स्त्री-पुरुष संबंध अर्थात् काम और रति ही हैं जब तक पुरुष में काम भाव जाग्रत नहीं होगा और स्त्री में रति भाव जाग्रत नहीं होगा तब तक जीवन का नवनिर्माण और जीवन में सरस्यती नहीं आ सकती है इसीलिये पुरुषों में पूर्ण पराक्रमी, सौन्दर्यवान पुरुष को कामदेव तथा सौन्दर्य युक्त स्त्री को रति की संज्ञा दी गई है।

जहां सौदा होता है, वहां प्रेम नहीं हो सकता, प्रेम के लिए तो अनिवार्य शर्त होती है अपना सर्वस्व न्यौछावर कर आपको ही विसर्जित कर देते हैं, वे सब कुछ प्राप्त भी कर लेते हैं। देना, अपने आपको मिटा देना।

हमने प्रेम को अत्यन्त धिनौना स्वरूप दे दिया है, जबकि वास्तविकता में यह पवित्रतम शब्द है, मानव को ईश्वर से होता है, वर्ही मानस में वासना का भाव आता है। वासना प्राप्त श्रेष्ठतम उपहार है। गंदगी तो हमारी ही आंखों में है। जो मतलब 'सेक्स'। जहां वासना होगी, वहां प्रेम हो ही नहीं भाव हमारे मन में होते हैं, वे ही आंखों के माध्यम से प्रकट हो जाते हैं।

प्रेम का मतलब यह नहीं है, कि आपको कोई पुष्प पसन्द आया और आपने उसे तोड़कर जेब में रख लिया - यह प्रेम नहीं हो सकता, इसे तो मात्र वासना ही कहा जाता है, वास्तविक प्रेम कभी भी फूल को तोड़ लेने की प्रेरणा नहीं देता।

जब एक भाव पक्ष प्रधान व्यक्ति फूल को अत्यन्त ही प्रेम और स्नेह के साथ निहारता है, तो स्वतः ही उनके मन में उस परमात्मा के लिए प्रार्थना का निर्झर प्रवाहित प्रवाहित होने लगता है, जिसने उस पुष्प को बनाया, जिसकी महक से सारा वातवारण ही पुलकित हो रहा है। प्रेम की परिपक्वता तो प्रार्थना पर जाकर ही पूर्ण होती है, वासना पर नहीं।

जब प्रेम परिपक्व होकर प्रार्थना पर पहुंचता है, तो प्रार्थना सीधे परमात्मा की ओर ले जाती है और एक प्रेमी का परमात्मा से मिलन होने लगता है, यही तो है प्रेम की सार्थकता, यही तो है प्रेम का रहस्य।

विकृत प्रेम ने मानव मन को अतृप्त कर दिया है। सुरसा मुख की तरह बढ़ती आवश्यकताएं और उनकी पूर्ति में व्यस्त जीवन, यह सोचने और समझने का अवसर ही नहीं प्राप्त नहीं होता कि प्रेम क्या है। स्वर्ण मृग के लिए भागता आदमी, केवल भागता ही रहता है, दौड़ता ही रहता है, अन्ततः हाथ कुछ भी नहीं लगता।

कुछ क्षण ऐसे भी होने चाहिए जो केवल खुद के लिए हों, जब उन क्षणों में आदमी केवल अपने लिए जिये और सोचे-

-जीवन क्या है? - मेरा जन्म क्यों हुआ? - क्या मैं जो इतनी भाग-दौड़ करता हूं, यह प्रेम है?

- नहीं, यह तो एक सौदा है।

शादी की है, पत्नी ने अपना तन सौंप दिया, तो उसको जीवन भर खिलाना ही पड़ेगा, मजबूरी है, प्रेम नहीं, यह वासना है; प्रेम का तो अंश मात्र भी नहीं है।

... और यदि जीवन में प्रेम नहीं होगा, तो व्यक्ति तनावों से, बीमारियों से, चिन्ताओं से ग्रस्त होकर समाप्त हो जायेगा।

पूर्णः पुरुषो जेयः सौन्दर्यं चैव कामयेत्



अगर जीवन को सही ढंग से जीना है, तो जीवन में सौन्दर्य और प्रेम दोनों को ही महत्वपूर्ण स्थान दीजिए, क्योंकि यही है वह अवयव जो आपको चिर यौवनमय बनाये रखता है - हर क्षण, हर पल। आपके व्यक्तित्व को आकर्षक बनाये रखने में सहायक रहता है।

और अगर यही महत्वहीन होगा, तो जीवन में प्रसङ्गता के स्थान पर कड़वाहट शुल्क लगेगी।

कामदेव रति तंत्र प्रचारण

‘कामदेव’ एवं ‘रति’ पूर्ण पुरुष सौन्दर्य और स्त्री सौन्दर्य किन्नर, गंधर्व आदि भी प्रयत्नशील रहते हैं और इसी कारण के प्रतीक हैं। सौन्दर्यवान होना जीवन में ईश्वर का वरदान ही है। सौन्दर्य युक्त जीवन ही जीवन माना गया है। निस कार्य या जिस वस्तु में सौन्दर्य नहीं होता, उसके प्रति कोई आकर्षित नहीं होता है। वह स्वतः ही अपने आप को हीन समझने लग जाता है।

सौन्दर्य का महत्व तो इस बात से ही प्रतिपादित होता है, कि जिसे प्राप्त करके स्थिर बनाये रखने के लिए देवी, देवता,

मोटापा भी घटाता है प्रेम

चिंता मोटापे की हो तो भी प्रेम मददगार होता है। आपके शरीर में रह-रहकर बहता प्रेम रसायन शरीर पर चढ़ती चर्बी को गलाकर वहा देता है। सुप्रसिद्ध पोषण वैज्ञानिक डा. रिचार्ड स्मिथ के अनुसार प्रेमाग्नि आपके तन की अतिरिक्त कैलोरीज को जलाकर आपको पतला कर देती है। अपनी हाल ही में प्रकाशित पुस्तक ‘आल ब्यू डायटर्स गाइड टु वेट लास डच्यूरिंग सैक्स’ में रिचार्ड ख्याल करते हैं कि मात्र चुंबन से भी मोटापा कम होता है। एक बार मैं प्रगाढ़ चुंबन से ही तीन कैलोरीज रखा हूँ जाती है। यह लाभ दोनों को तभी मिलेगा, जब दोनों प्रगाढ़ता में बराबरी की साझेदारी करें।

वैज्ञानिकों की राय में वसंत ऊर्जा की ऋतु है। ठंड का ठहराव न केवल शारीरिक क्रियाओं को बल्कि सामान्य गति को भी कम कर देता है। जापान स्थित निगोदा विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों के अनुसार वसंत मन को इस हृद तक प्रफुल्लित कर देता है कि वैवाहिक जोड़े भी अपने रोमांस में कमनीयता ले जाते हैं। जापानी शोधकर्ता कातोरा कैमुरा के अनुसार सर्वाधिक गर्भ भी इस ऋतु में धारण किये जाते हैं। हार्वर्ड विश्वविद्यालय के मनौवैज्ञानिक कहते हैं कि वसंत ऋतु में स्पर्श शरीर के जर्म्स यानी कीटाणुओं को मौत थमाता है। आज पंचतारा होटलों की संस्कृति कुछ भी हो मगर बदले रूप में ही सही यहां वसंतोत्त्व मनाया जाता है। गर्मियों-सर्दियों में इंटरनेट पर इतनी चैटिंग नहीं होती जितनी कि वसंत में। शोधपरक रपट बताती है कि शरीर में ‘टेस्टोस्टेरोन हारमोन’ सारे फसाद की जड़ है। जब करीबी ज्यादा होती है तब मस्तिष्क से फास नामक प्रोटीन निकलने लगता है जो यह संकेत देता है कि स्नायु कोशिकाएं पूर्णतः सक्रिय हैं और प्यार की आग भझक रही है।

वैज्ञानिकों के शोधपरक तथ्य बताते हैं कि लंबी उम्र पानी कर सकते हैं आप इस प्रयोग द्वारा।

है तो किसी से दीवानेपन की हृद तक प्यार कीजिए। प्यार न

केवल अंदर स्फूर्ति पैदा करता है बल्कि आपकी आंतरिक क्रियाओं को भी बदल देता है। जिसे आप चाहने लगते हैं, इसके पीछे भी प्रेम रसायन का ही साव है।

किन्तु वर्तमान युग में वास्तविक सौन्दर्य को लोगों ने भुला दिया है, उन्होंने कृत्रिम प्रसाधन प्रयोग को ही सौन्दर्य मानकर अपने प्राकृतिक सौन्दर्य को नष्ट कर दिया। वास्तविक सौन्दर्य क्या है, इसे अब प्रत्यक्ष देखना नामुमकिन सा लगता है। ऐसा इसलिए हुआ, क्योंकि लोगों ने सौन्दर्य को मात्र बाहरी दिखावे की वस्तु समझ लिया, जबकि ऐसा नहीं होता। आन्तरिक और बाह्य दोनों रूपों से सौन्दर्य युक्त व्यक्ति ही 'सौन्दर्यवान' कहा जा सकता है। हमारी विडम्बना यही है, कि हम दोनों प्रकार के सौन्दर्य को भूल बैठे हैं।

ऐसा सौन्दर्य किस काम का, कि आप शारीरिक रूप से तो सुन्दर हैं, लेकिन आन्तरिक रूप से धृणा, क्रोध, कड़वाहट, कपट और छल से युक्त हैं, आपकी वाणी से किसी को प्रसन्नता मिलने के स्थान पर दुःख मिले या आप आन्तरिक रूप से सभी गुणों से युक्त हैं, लेकिन बाह्यतः आपका व्यक्तित्व चित्तार्थक नहीं है, फिर तो ऐसा सौन्दर्य भी अधूरा ही है।

जहां किसी स्त्री का सौन्दर्य बाह्यतः आकर्षक देहयष्टि तथा आन्तरिक रूप से कोमलता, मधुरता, सहृदयता और ममत्व के गुणों से युक्त होना चाहिए; वहीं पुरुष का सौन्दर्य बाह्यतः आकर्षक एवं पुष्ट शरीर, चेहरे पर ओज तथा अन्तरतः स्वभाव में चन्द्रमा के समान शीतलता तथा सूर्य की तरह तेजस्विता युक्त होना ही पूर्णता का परिचायक है।

जीवन को प्रसन्नता, उमंग, जोश और मस्ती से भरा हुआ बना सकते हैं आप इस 'रति-कामदेव तंत्र प्रयोग' से। इस प्रयोग को देवता, अप्सराएं, किन्नर, गंधर्व सभी करते हैं और पाते हैं, अपने जीवन में मस्ती; छलछलाहट और चिर यौवन।

इसे करने के बाद आपका व्यक्तित्व भी आकर्षक बनेगा, प्रसन्नता से भरा रहेगा। आप स्वयं अनुभव करेंगे, कि इसके बाद लोगों को आपसे बात करने में रुचि, आपका साथ पाने की ललक रहने लगी है और आपमें भी जीवन को आनन्द के साथ जीने की चाहत उत्पन्न होगी। इस प्रयोग को करने के बाद आपके निजी सम्बन्धों में प्रसन्नता व प्रगाढ़ता उत्पन्न होगी। तभी तो आप समझेंगे, कि जीवन क्या है? फिर आप इसका पूर्ण रूप से आनन्द ले पायेंगे और भरपूर एहसास के साथ उसे जी पायेंगे। जीवन में पूर्णता के सौन्दर्य को स्थापित

साधना विधान

- ★ इस प्रयोग के लिए 'रतिकाम यंत्र' एवं 'अनंग माला' का प्रयोग करें।
 - ★ यह साधना दिनांक 23.1.2007 को सम्पन्न की जा सकती है, या फिर किसी भी शुक्रवार को भी की जा सकती है।
 - ★ यह साधना रात्रिकालीन साधना है। इसे आप रात्रि 10 बजे के बाद ही करें।
 - ★ साधना करने से पूर्व स्थान को स्वच्छ करें।
 - ★ स्वयं भी सौन्दर्य युक्त होकर, इत्र लगाकर, सुगन्धमय होकर साधना में बैठें।
 - ★ सफेद आसन पर 'पूर्व' या 'उत्तर' की ओर मुख कर बैठें।
 - ★ सामने लकड़ी का बाजोट बिछा कर उस पर सफेद वस्त्र बिछावें, फिर उस पर स्वस्तिक बना कर कलश रखें। बाजोट को सुन्दर ढंग से सजावें।
 - ★ यंत्र को धोकर, पौछ कर किसी प्लेट में रखें तथा सुगन्धित धूप और दीप लगायें।
 - ★ यंत्र पर कुकुम से दो बिन्दियां लगायें, अक्षत और पुष्प चढ़ायें।
 - ★ माला का भी इसी विधि से पूजन करें।
 - ★ अनंग माला से निम्न मंत्र का 51 माला जप करें -
//ॐ काम रत्ने फट//
 - ★ जप के पश्चात् गुरु आरती करें।
 - ★ प्रयोग समाप्त होने के बाद माला धारण कर दें, सात दिन मंत्र जप करें। तत्पश्चात् सामग्री को नदी में प्रवाहित कर दें।
 - ★ यह प्रयोग आप अकेले भी कर सकते हैं तथा पति-पत्नी संयुक्त रूप से भी कर सकते हैं, लेकिन मालायें अलग-अलग होनी चाहिए।
- यह साधना अत्यन्त प्रभावशाली है। इसे सम्पन्न करने के बाद आप अपने जीवन में परिवर्तन स्वयं अनुभव करेंगे, कि आपका व्यक्तित्व कितना आकर्षक, सम्मोहक और प्रेममय बन गया है। आपके बातचीत का अंदाज मधुर हो गया है, आपके चलने का देखने का अंदाज भी एक विशेष आत्मविश्वास से परिपूर्ण हो गया है।

उर्वशी.. उर्वशी.. उर्वशी..

कहे विधि पाऊं संग रूप रास का
कौन सुनाये गाथा प्रेम-सौन्दर्य क्रीड़ा की

शरमाइये मत, राकिये मत बसकदम बढ़ाये
हृदय के कपाट खोल ले इस उर्वशी साधना हेतु

यह आलेख केवल उनके लिये है जिनका विन्तन हर समय युवा है, जो अपने जीवन में आनन्द ही आनन्द चाहते हैं जो प्रेम से आपूरित होकर ज्ञान प्राप्त करना चाहते हैं जो जीवन अमृत का पान करना चाहते हैं स्त्री हो या पुरुष आयु से वृद्ध हो या जवान, निर्णय आपको ही लेना है। दो साधनाएं प्रेम, सौन्दर्य की उदाम अप्सरा उर्वशी की... उर्वशी तो प्रत्येक के हृदय की धड़कन है

प्राचीन काल से लेकर आज तक उर्वशी ने अपने रूप यौवन हजार वर्षों तक उनकी तपस्या निर्बाध गति से चलती रही। के बल पर योगियों, ऋषियों तथा साधकों के हृदय पर शासन उनके तपनित तेज से सम्पूर्ण चराचर जगत संतप्त हो उठा। किया है। प्रत्येक योगी, ऋषि तथा साधक की यही इच्छा जैसा कि सदैव होता है, इन्द्र के मन में नर-नारायण के रहती है, कि वह अपने जीवन काल में एक बार उर्वशी का प्रति द्वेष उत्पन्न हो गया। इन्द्र ने सोचा, कि अब मुझे क्या करना चाहिए? मुझे ऐसे कौन से उपाय करने चाहिए कि सभी 108 अप्सराओं में प्रमुख अप्सरा उर्वशी है। यद्यपि जिससे इन दोनों ऋषियों की तपस्या भंग हो जाये? ऐसा सोच सभी अप्सराएं रूप एवं यौवन से परिपूर्ण हैं, किन्तु जैसा रूप कर इन्द्र अपने ऐरावत पर सवार होकर उन दोनों ऋषियों के एवं यौवन उर्वशी का है, वैसा किसी भी अप्सरा का नहीं है निकट पहुंचा और उनसे कहने लगा - 'ऋषि श्रेष्ठो! मैं तुम्हें और इसी रूप एवं यौवन के बल पर बड़े से बड़े योगी को भी उत्तम एवं श्रेष्ठ वर देने के लिए प्रस्तुत हूं, तुम्हारी जो इच्छा अपने पीछे भागने के लिए आतुर कर दिया है। अन्य अप्सराओं की तुलना में इसकी साधना अपेक्षाकृत कुछ कठिन ही है। किन्तु दोनों ऋषियों ने इस पर ध्यान नहीं दिया और अपनी अन्य अप्सराएं तो शीघ्रता से सिद्ध की जा सकती हैं, किन्तु उर्वशी को सिद्ध करना कुछ कठिन ही है और कठिन भी क्यों तपस्या में मन रहे।

किन्तु दोनों ऋषियों ने इस पर ध्यान नहीं दिया और अपनी अन्य अप्सराएं तो शीघ्रता से सिद्ध की जा सकती हैं, किन्तु उर्वशी को सिद्ध करना कुछ कठिन ही है और कठिन भी क्यों नहीं, यह सभी अप्सराओं से कुछ विशिष्ट जो है?

उर्वशी की उत्पत्ति की कथा भी कुछ कम रोचक नहीं है। प्राचीन काल में नर और नारायण नामक दो ऋषि थे। ये दोनों ऋषि भगवान श्री विष्णु के अंशावतार थे। एक बार नर-नारायण हिमालय पर्वत पर गए तथा घूमते-घूमते वे ब्रिकाश्रम नामक पवित्र स्थान पर जा पहुंचे। वहाँ के वातावरण को देख उन ऋषि द्वय का मन तपस्या में रम नहा और पूरे एक

सभी ओर से निराश होकर इन्द्र ने वसन्त तथा कामदेव को

बुलाया और कहा - 'कामदेव! तुम वसन्त तथा रति को साथ लेकर मन्धामादन पर्वत पर जाओ। तुम्हारी सहायता के लिए मैं अप्सराओं को भी साथ भेज रहा हूं। वहाँ ब्रिकाश्रम कर उन ऋषि द्वय का मन तपस्या में रम नहा और पूरे एक नामक स्थान पर पुराण पुरुष नर-नारायण बैठ कर तपस्या

कर रहे हैं। मन्मथ! उनके निकट पहुंच कर उनके चित्त को कामातुर कर देना परमावश्यक है। अप्सराओं का यह समूह तुम्हारी सहायता करने के लिए प्रस्तुत है। शीघ्र जाओ और उन क्रषियों की तपस्या भंग कर दो।'

इन्द्र के आदेश को सुन कर कामदेव ने वसन्त रति तथा अप्सराओं के दल के साथ प्रस्थान किया। सर्वप्रथम उस पर्वत पर वसन्त का आगमन हुआ। सभी वृक्ष पुष्पों से लद गए, उन पर भौंरों की कतारें मंडराने लगीं, आम, पलाश आदि वृक्ष पुष्पों से सुशोभित हो गए, पेड़ों की शाखाओं पर कोयलों का मधुर गन प्रारम्भ हो गया, फूलों से लदी श्रेष्ठ लताएं ऊचे पर्वतों पर चढ़ने लगीं। प्राणियों में कामवेग सीमा को पार कर गया, उनमें कामोन्माद सा छा गया और वे कामासक्त हो कर कामकीड़ा में निमग्न हो गए। पुष्पों की उनम गन्ध लेकर दक्षिणी पवन मंद गति से चलने लगा, जिसके स्पर्श होते ही आनन्द का अनुभव होता था।

उस समय क्रषियों का संयम भी शिथिल होने लगा। तत्पश्चात् रति सहित कामदेव ने अपने पंच बाणों को साथ लेकर अति शीघ्र बद्रिकाश्रम में डेरा डाल दिया। रम्भा और तिलोत्तमा आदि अप्सराएं संगीत, नृत्य व गायन कला में बड़ी प्रवीण थीं, अतः स्वर लय और ताल के साथ गान प्रारम्भ हो गया।

उन मधुर गीतों, कोयलों के मधुर गन और भौंरों के गुञ्जन को सुन कर क्रषि द्रव्य नर और नारायण की समाधि टूट गई वे आश्चर्यचकित भी हुए, कि असमय इस वसन्त का आगमन कैसे?

योग बल से ज्ञान हुआ, कि तपस्या से भयभीत इन्द्र ने ही यह सब कुचक्र रचा है, दिव्य अप्सराओं का संगीत भी सुनाई पढ़ रहा है, सुगन्धित, शीतल एवं मन को मुग्ध करने वाला पवन शरीर को स्पर्श कर रहा है।

क्रषि द्रव्य ने विचार किया, कि इन्द्र के षड्यंत्र के अतिरिक्त अन्य कोई कारण इसमें नहीं है।

क्रषि द्रव्य नर और नारायण इसी प्रकार विचार कर ही रहे, कि इतने में ही सारी मण्डली सामने दिखाई दी। उनमें कामदेव प्रमुख था, मेनका, रम्भा, तिलोत्तमा, पुष्पगन्धा, सुकेशी, महाश्वेता, मनोरमा, घृताची, गीतज्ञा, चारुहासिनी, चन्द्रप्रभा, शोभा, विद्युन्माला, अम्बुजाक्षी, कांचनमालिनी के अतिरिक्त अन्य बहुत सी अप्सराएं नर-नारायण को दृष्टिगोचर होने लगीं, उन सबकी संख्या सोलह हजार पचास थी।

कामदेव की विशाल सेना को देख कर क्रषि द्रव्य आश्चर्य में

पड़ गए। तदनन्तर वे सभी अप्सराएं उन्हें प्रणाम करके मुनि द्रव्य के सामने खड़ी हो गईं। वे सभी दिव्य आभूषणों से अलंकृत थीं, दिव्य हार उनके गले की शोभा बढ़ा रहे थे। नारायण क्रषि ने उन अप्सराओं से कहा - 'समुद्ध्यमाओ! तुम लोग सानन्द यहीं ठहरो। तुम सभी अतिथि के रूप में स्वर्ग से यहां आई हो, अतः मैं तुम्हारा अद्भुत प्रकार से अतिथि सत्कार करने के लिए तैयार हूं।'

उस समय नारायण क्रषि ने मन में विचार किया, कि इन्द्र ने हमारे तप में विघ्न उपस्थित करने के विचार से इन्हें यहां भेजा है, किन्तु इन बेचारी नगण्य अप्सराओं से हमारा क्या बनना-बिगड़ा है। मैं अभी इन सबको आश्चर्य में डालने वाली नई अप्सरा की सृष्टि करता हूं। इन अप्सराओं की अपेक्षा उसका रूप-सौन्दर्य विलक्षण होगा। इस प्रकार मन में निश्चय कर नारायण क्रषि ने अपना हाथ अपनी जंघा पर पटका और तत्क्षण एक षोडश वर्षीया सर्वांग सुन्दरी नवयौवना को उत्पन्न कर दिया।

उस षोडश वर्षीया, सुन्दर, स्वस्थ, यौवन की आभा से दीप तस्ती का अण्डाकार मुखमण्डल यौवन, प्रेम तथा सौन्दर्य से गुलाबी हो रहा था, उस पर गहरी झील सी आंखें अद्वितीय प्रतीत हो रही थीं। उसके होंठ ऐसे प्रतीत हो रहे थे, मानो दो गुलाबी पंखुड़ियों को एक-दूसरे पर रख दिया गया हो और चिकुक के छोटे से गड्ढे में समस्त संसार का यौवन कूद पड़ने को आतुर था।

हंसिनी ग्रीवा तथा मांसल, पुष्ट, कठोर, उन्नत उरोज ऐसे प्रतीत हो रहे थे, मानो दो क्रषि खड़े होकर सूर्य को अर्घ्य दे रहे हैं। उरोजों पर कस कर पीली रेशमी कढ़ी हुई चोली बंधी हुई थी।

उदर पीपल के पत्ते जैसा चिकना व पतला था, नाभि प्रदेश त्रिवली युक्त विशेष प्रकार के गठन से युक्त था तथा उसने नाभि के नीचे नील वर्णीय परिधान घुटनों तक धारण कर रखा था। उसकी जंघाएं हस्ति सुण्ड की भाँति थीं, जो कि रोमरहित तथा अत्यधिक चिकनी थीं। उसके सिर पर केश काले धने और लम्बे थे, जो कि जंघाओं को चूम रहे थे। नितम्ब अत्यधिक गठे हुए, सुडौल, मांसल, पुष्ट व चक्राकार थे। पैरों की पायलों में छोटे-छोटे घुंघरू बंधे होने के कारण पैर अत्यधिक सुन्दर व आकर्षक लग रहे थे। यौवन भार से ज़ुका हुआ उसका शरीर ऐसा प्रतीत हो रहा था, मानो वह अपने रूप, यौवन और सौन्दर्य से सम्पूर्ण विश्व को पराजित करना चाह रही है।

उसके इस अद्वितीय सौन्दर्य को निरख कर काम और रति साधना की, उनके जीवन में रस आया, प्रेम करने की कला तथा समस्त अप्सराएं लज्जित हुईं। नारायण ऋषि के उस आई, उन्होंने जीवन का उत्सर्ग कर ध्यान और समाधि की भाग से निकलने तथा सबके हृदय में बसने के कारण वह अमूल्य निधि पाई।

‘उर्वशी’ के नाम से विख्यात हुई।

नारायण ऋषि प्रणीत उर्वशी साधना

उर्वशी प्रेम, उल्लास, यौवन, जीवन, प्रसन्नता, आनन्द, खिलखिलाहट का ही नाम है। जब व्यक्ति समाज के बंधनों को ढोता हुआ थक जाता है, तो वह अपने जीवन में कुछ परिवर्तन चाहता है, जिसके माध्यम से वह जीवन में मधुरता, चैतन्यता, जीवन्तता प्राप्त कर ले और उर्वशी साधना का अर्थ ही यही है।

साधक दिनांक 29 जनवरी 2007 को जया एकादशी और उसके साथ सर्वार्थ सिद्धि अमृत योग है, उस दिन प्रारम्भ करें। इसके लिए आवश्यक सामग्रियों - ‘उर्वशी यंत्र’ तथा ‘उर्वशी माला’ को पहले से ही प्राप्त कर रखें। साधक स्वयं गुलाबी वस्त्र धारण करें तथा सुगन्धित द्रव्य लगायें। साधना कक्ष को सुगन्धित अगरबत्ती से सुगन्धित बना दें। यह साधना रात्रि काल में सम्पन्न करें।

लकड़ी के बाजोट पर गुलाबी वस्त्र बिछा दें, उस पर कुंकुम से अष्टदल कमल बना कर उस पर उर्वशी यंत्र को स्थापित करें। यंत्र के समक्ष धी का दीपक लगा दें।

यंत्र व माला का पूजन अष्टगांध, अक्षत तथा गुलाब के पुष्पों से करें, फिर माला को अपने हाथ में ले कर उसे धुमाते हुए निम्न मंत्र बोलें -

ॐ माते माते महामाते! सर्व तत्त्व स्वरूपिणी/
चतुर्वर्णस्त्वयि न्यस्तस्तस्मान् मे सिद्धिदाभव॥

फिर निम्न मंत्र का 51 माला मंत्र जप करें -

//ॐ ह्रौं उर्वशी वशीकरण फट॥

मंत्र जप के पश्चात् साधना स्थल पर ही विश्राम करें। सात दिन मंत्र जप के पश्चात् यंत्र तथा माला को बाजोट पर बिछे गुलाबी वस्त्र में बांध कर जलाशय में प्रवाहित कर दें।

साधना सामग्री - 260/-

☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆

विश्वामित्र प्रणीत उर्वशी साधना

प्रेम और समर्पण की कला सीखी जा सकती है ‘उर्वशी साधना’ से। ‘उर्वशी साधना’ ही प्रेम को अभिव्यक्त करने का सौम्य और सशक्त माध्यम है।

जिन्होंने ‘उर्वशी साधना’ नहीं की, उनके जीवन में प्रेम नहीं है, तन्मयता नहीं है, प्रफुल्लता नहीं है और जिन्होंने उर्वशी

साधना की, उनके जीवन में रस आया, प्रेम करने की कला निश्चित उछाल देने की क्रिया अप्सरा साधना के माध्यम से ही संभव है।

साधना विधान

इस साधना में ‘उर्वशी सिद्धि यंत्र’, ‘प्रेमोत्सव माला’ तथा ‘दोष निवारण गुटिका’ की आवश्यकता होती है।

यह रात्रि कालीन साधना है जो दिनांक 2 फरवरी 2007 ललिता जयंती के दिन प्रारम्भ करें, उस दिन पूर्णिमा भी है या किसी भी पूर्णिमा की रात्रि को या शुक्लपक्ष के किसी भी शुक्रवार से प्रारम्भ की जा सकती है।

इस साधना में पूर्व या उत्तर दिशा प्रमुख है।

इसमें 21 दिन तक प्रतिदिन तीन माला मंत्र जप करना अनिवार्य है।

साधक स्नान आदि से निवृत्त होकर, सफेद वस्त्र धारण कर, पूर्ण सुसन्जित होकर इस साधना में किसी भी रंग के आसन पर बैठें।

‘प्रेमोत्सव माला’ को बाजोट पर रखकर उस पर यंत्र स्थापित करें, तत्पश्चात् यंत्र का पूजन करें।

इसी प्रकार ‘दोष निवारण गुटिका’ का सामान्य पूजन करते हुए पूर्ण नुल्लेच से दोष निवारण हेतु तथा पूर्ण पवित्रता और प्रेम प्राप्ति की प्रार्थना करते हुए गुटिका को तीन बार अपने सिर के ऊपर से धुमा कर रखें तथा प्रथम दिन की साधना के पश्चात् किसी चौराहे पर या निर्जन स्थान में फेंक दें।

इसमें धी का दीपक सुगन्धित इत्र डालकर जलाना चाहिए। दीपक की लौ साधक की ओर होनी चाहिए। उर्वशी माला से नित्य तीन बाला निम्न मंत्र का जप करें-

//ॐ पूर्वत्वं प्रेमोत्सव अप्सरा सिद्धये फट॥

21 दिन के बाद सभी सामग्री किसी नदी, तालाब या कुंए में विसर्जित कर दें।

इस साधना का प्रारम्भ पूर्ण प्रेममय होकर करें और प्रेममय ही बने रहें, किसी प्रकार का क्रोध व उत्तेजना मन में न लायें। यह साधना जन्म-ज्ञाप में ही प्रेम प्रदायक एवं सौभाग्य वृद्धि करने वाली साधना है।

साधना सामग्री - 300/-

☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆

विद्या नाम नरस्य रूपमधिकं प्रच्छन्तरगुप्तं धनं
 विद्या भोगकरी यशः सुखकरी विद्या गुरुणां गुरुः ।
 विद्या बन्धुजनो विदेशगमने विद्या परा देवता
 विद्या राजसु पूज्यते न हि धनं विद्याविहीनः पशुः ॥

विद्या ही मनुष्य का सौदर्य और मुस्त धन है। विद्या ही श्रीम, यश और सुख देने वाली है। विद्या ही मुकुओं का श्री मुकु है। परदेस में विद्या ही बन्धु है। विद्या परा देवता है। विद्या ही राजाओं में पूजी जाती है धन गर्ही, अतः विद्याहीन नर निरापश है।



जहां सरस्वती है वहां

उद्यम, साहस, धैर्य, विद्या, बुद्धि
और पराक्रम है

सरस्वती तो आधार है ग्रिशमि का

सरस्वती तो क्रिया-ज्ञान-योग है जीवन का



त्रि-शक्ति का तात्पर्य है ज्ञान शक्ति, क्रिया शक्ति और इच्छा
शक्ति। इन तीनों का समन्वित स्वरूप ही शक्ति स्वरूप
कहा गया है। नवरात्रि में भी त्रि-शक्ति साधना विशेष रूप से
सम्पन्न की जाती है। मूल रूप से ज्ञान शक्ति सरस्वती के
माध्यम से प्रकट होती है, क्रिया शक्ति महाकाली के रूप में
स्पष्ट होती है और इच्छा शक्ति भगवती महालक्ष्मी के रूप में
स्पष्ट होती है। विस्तृत विवेचन से पहले यह जान लेना चाहिए
कि जगत् का आधार ज्ञान है, क्रिया है अथवा धन है? वास्तव
में तीनों के समन्वित रूप से ही यह संसार चक्र चल रहा है।
जहां भी एक पक्ष भी कमज़ोर हो जाता है तो दूसरा पक्ष पूर्ण
रूप से सफलता नहीं दे सकता है। अतः जीवन में आवश्यक
है कि हम ज्ञान, क्रिया एवं इच्छा तीनों को समन्वित करें।

जीवन का आधार ही 'ज्ञान' है क्योंकि ज्ञान के बिना क्रिया और इच्छा फलीभूत हो ही नहीं सकती है। प्रश्न यह उठता है कि ज्ञान की परिभाषा क्या है?

1. क्या पुस्तकीय ज्ञान को ही ज्ञान कहा जा सकता है?
 2. वर्तमान युग में क्या डिग्री प्राप्त करना ही ज्ञान की परिभाषा है?
 3. क्या योग्य गुणी व्यक्तियों के पास बैठकर प्राप्त किया हुआ ज्ञान कहलाता है?
 4. क्या किसी एक विद्या में निपुणता ज्ञान कहलाता है?
 5. क्या श्रेष्ठ वक्ता बनना ज्ञान की परिभाषा में आता है?
 6. क्या दूसरों को सम्मोहित कर देना ज्ञान की श्रेणी में आता है?
 7. क्या नृत्य, संगीत, गायन, काव्य पाठ इत्यादि ज्ञान कहलाता है?

यदि हम अपने शास्त्रों का विवेचन करें तो ज्ञान को किसी एक परिभाषा में बांधा ही नहीं जा सकता है। इस सम्बन्ध में चाणक्य नीतिसार में कह कर्या है कि:

अत्परसरं श्रुतवन्मपि न बहु मन्यते लोकः ॥

अर्थात् वेद शास्त्र पढ़ने से या ऊंची शिक्षा प्राप्त करने से मनुष्य को पुस्तकीय ज्ञान तो हो जाता है परन्तु यदि वह बुद्धिहीन है तो उस ज्ञान का उपयोग नहीं कर सकता। इसी हेतु आगे चाणक्य नीति कहती है कि

यस्त नास्ति स्वयं प्रज्ञा शास्त्रं तस्य करोति किम् ।
लोचनाभ्यां विहीनस्य दर्पणः किं करच्छ्याति ॥

अर्थात् जिसके पास स्वयं बुद्धि नहीं है उसको शास्त्र क्या कहेगा जिसकी आंखें हीं फूटी हों तो उसके लिये दर्पण भला किस काम का?

बुद्धिमान मनुष्य विद्वान न होने पर भी समझदारी की बात करता है। वह व्यवहार कुशल होता है। बुद्धिहीन विद्वानों को कोई नहीं पूछता क्योंकि उनकी सारी बातें मूर्खतापूर्ण ही होती हैं। अतः यह स्पष्ट होता है कि ज्ञान का आधार बुद्धि है और बुद्धि मनुष्य के मस्तिष्क से प्रकट होती है। बुद्धि अर्थात् उस तत्व को प्राप्त कर लेना जो जीवन में साहस प्रदान करे और उससे जोखिम उठाने की शक्ति प्रदान करे। इसीलिये सामान्य जीवन में भी साहसी व्यक्ति को बुद्धिमान माना गया है।

उद्यमं साहसं धैर्यं विद्या बुद्धिः पराक्रमः ।

षडेते यत्र वर्तन्ते तत्र दैव सहायकृत ॥

उद्यम, साहस, धैर्य, विद्या, बुद्धि और पराक्रम, ये छः तत्व जहां होते हैं वहां भाग्य भी सहायता करता है। अर्थात् इन गुणों से मनुष्य अपने भाग्य को भी बदल सकता है और उसके कार्य सफल हो सकते हैं। तात्पर्य यह है कि किसी दुष्कर कार्य को सफल बनाने के लिए साहस के अलावा अन्य गुणों की भी आवश्यकता होती है। निरे जोश में आकर या हेकड़ी जताने के लिए किया गया कार्य साहस नहीं अपितु दुर्साहस मूर्खपूर्ण होता है।

ज्ञान व्यक्ति को धैर्य प्रदान करता है, उसे चतुरता प्रदान करता है और इसके साथ ही उसके सोचने समझने के साथ क्रिया की शक्ति में भी विस्तार करता है। जब ज्ञान और विद्या से युक्त शक्ति क्रिया और इच्छा करते हैं तो वह कार्य अवश्य ही परिपूर्ण होता है।

भृतहरि कहते हैं कि -

हर्त्यर्याति न गोरचरं किमपि शं पुण्णाति व्यत्सर्वदा
द्वाथिभ्यः प्रतिपाद्यमानमनिशं प्राप्नोति वृद्धिं पराम् ।

कल्पान्तेष्वपि न प्रयाति निधन विद्याच्छव्यमन्तर्धनम्
येषा तान्प्रति मानुमुञ्जत नृपाः कस्ते: सहस्पर्थते ॥१६॥

जिनके पास विद्या रूपी धन है उसको चोर भी नहीं देख सकते और विद्या निरन्तर कल्याण की वृद्धि करती रहती है। गुरु द्वारा शिष्यों को सर्वदा विद्या देते रहने से भी यह धन बढ़ता ही रहता है, जिसका महाप्रलय में भी कभी नाश नहीं होता। विद्यायुक्त बुद्धिमान व्यक्ति से कोई भी स्पर्धा नहीं कर सकता है।

विद्या शब्द 'विदे ज्ञाने' धातु से बना है, अतः विद्या का अर्थ ज्ञान है परन्तु ज्ञान की तरह विद्या शब्द का प्रयोग भी कई अर्थों में होता है। अध्यात्म के प्रसंग में विद्या का अर्थ है वह ज्ञान जिससे मोक्ष प्राप्त हो; 'सविद्या या विमुक्तये' अर्थात् विद्या वह है, जो जीवन-मरण से छुटकारा दिला दे। धर्म के प्रसंग में विद्या का अर्थ है धर्मशास्त्र तथा नीतिशास्त्र। चाणक्य के अर्थशास्त्र में चार विद्याओं का उल्लेख है: आन्विक्षिकी (तर्क अथवा दर्शन शास्त्र), त्रयी (तीन वेद), वार्ता (अर्थशास्त्र) तथा दंडनीति (राजनीति)। विद्याएं चौदह मानी जाती हैं। तंत्रशास्त्र में दस देवियों को दश महाविद्या कहा गया है। देवी के मंत्र का नाम भी विद्या है।

जो मनुष्य विद्वान होता है या किसी विद्या का धनी होता है, वह ख्याति प्राप्त कर लेता है, अर्थात् लोक-प्रसिद्ध हो जाता है, और उसकी ख्याति बढ़ती चली जाती है।

मनुष्य का शरीर नश्वर है, मरने के बाद नष्ट हो जाता है। फिर उसकी कोई स्मृति नहीं रहती है। आगे की पीढ़ियां उसका नाम तक भूल जाती हैं। शरीर नष्ट होने पर भी उसका यश रूपी शरीर सबके सामने रहता है। कहा है: 'कीर्तिर्यस्य स जीवित', अर्थात् जिसकी कीर्ति है वह सदा जीवित रहता है, मर कर भी नहीं मरता। उसके नाम को काल भी नहीं खाता।

यश या कीर्ति उसी को प्राप्त होती है जो जीवनकाल में लोक-कल्याण के चिरस्थायी काम कर जाता है या जिसका जीवन ऐसा होता है कि लोग उससे सदा प्रेरणा ग्रहण करते रहें। वीरों, देश-विजेताओं तथा किसी क्षेत्र में उत्कृष्टता प्राप्त करने वालों के नाम इतिहास के पृष्ठों में ही लिखे मिलते हैं परन्तु मनुष्यों को सीधे-सच्चे मार्ग पर चलने का उपदेश देने वालों के नाम लोगों की जबान पर चढ़ जाते हैं। राम, कृष्ण, महावीर, बुद्ध, यीशु, मोहम्मद, नानक, कबीर, आदि के नाम सदा चमकते रहेंगे। वाल्मीकि, तुलसी, कालिदास, शेक्सपीयर, शेख सादी की कृतियों को लोग नहीं भूलेंगे।

उपरोक्त विवेचन देने का सार यही है कि साधक अपने जीवन में ज्ञान रूपी सिद्धि प्राप्त करें, बुद्धि रूपी सिद्धि प्राप्त

करें, उद्यम रूपी शक्ति प्राप्त हो, साहस का संचार हो, धैर्य का विकास हो और पराक्रम का कभी हास नहीं हो। यही ज्ञान तो शक्ति तत्व का आधार भूत ज्ञान है।

इस सम्बन्ध में ब्रह्मोपनिषद् में विस्तार से आया है कि एक बार नारद ने ब्रह्मा से पूछा कि - 'किस उपाय से विद्योत्पत्ति होती है और वेदान्त का प्रकाश होता है?' ब्रह्मा जी ने कहा कि यही प्रश्न कल्पारम्भ में मैंने भगवान् विष्णु से पूछा था। उन्होंने बताया कि 'सारस्वत-कल्प' के जानने मात्र से जड़ता दूर होकर सब शास्त्रों का ज्ञान प्राप्त होता है। उससे आशु सर्वज्ञता मिलती है और विचित्र वाक्य-रचना की शक्ति प्राप्त होती है। इसी 'सारस्वत-कल्प' के प्रभाव से देव-गण सबके पूज्य, वृहस्पति बाणीश और द्वैपयन वेद व्यास हुए।

ज्ञान की आधार शक्ति मां सरस्वती ही है जो जगत को प्रकाश देने वाली, अज्ञान का नाश करने वाली, मनुष्य में कुण्डलिनी शक्ति जागृत करने वाली मनुष्य को पशु से श्रेष्ठ मनुष्य में परिवर्तित कर देने वाली, मूर्ख को बुद्धिमान बनाने वाली आधार शक्ति है जिनके ध्यान में नारद ऋषि ने कहा है -

**मुक्ता-कान्ति-निभां देवीं, ज्योत्स्ना-जाल-विकाशिनीम् ।
मुक्ता-हार-युतां शुभ्रां, शशि-खण्ड-विमण्डिताम् ॥
विभ्रतीं दक्ष-हस्तभ्यां, व्याख्यां वर्णस्य मातिकाम् ।
अमृतेन तथा पूर्ण, घटं दिव्यं च पुस्तकम् ॥**

अर्थात् देवी ही देह-कान्ति मुक्ता की चमक के समान उज्ज्वल है, ज्योत्स्ना जैसा प्रकाश उससे निकल रहा है वे मोतियों के हार से विभूषित हैं, शुभ्र-वर्ण हैं और अर्ध-चन्द्र से शोभायमान हैं। वाणीश्वरी देवी चतुर्भुजा हैं। दाएं हाथों में से एक में व्याख्या मुद्रा और दूसरे में वर्ण - माला है। बाएं हाथों में एक में अमृत-पूर्ण कुम्भ है और दूसरे में पुस्तक है।

**ज्योतिः-पुञ्ज-निभां देवीं, परिवार-समन्विताम् ।
वराभय-युतां हस्ते, मुद्रा-पुस्तक-धारिणीम् ॥**

अर्थात् वाणीश्वरी देवी ज्योति - पुञ्ज - प्रभावकारी, परिवार-सहिता एवं वर-अभय-व्याख्या-मुद्रा और पुस्तक-धारिणी हैं।

सदगुरुदेव ने एक बार अपने प्रवचन में कहा कि - मुझे इस संसार में लोगों की गति समझ में नहीं आती है, ये दिन भर क्रिया करते हैं और साथ ही साथ धन की इच्छा भी रखते हैं कई मूर्खों को पैतृक सम्पत्ति अथवा किसी अन्य माध्यम से धन प्राप्त हो भी जाता है लेकिन वह स्थाई नहीं रह पाता क्योंकि ये व्यक्ति पशु की तरह परिश्रम कर सकते हैं। मूर्ख की से उनके जीवन का आधार श्रेष्ठ बनता है और वे बड़े होकर तरह इच्छाओं के किले बना सकते हैं। लेकिन जब तक इनको अपने-अपने कार्य क्षेत्रों में पूर्ण सफल होते हैं।



जीवन का आधार ज्ञान नहीं होगा, तब तक इन्हें अपने जीवन में किसी भी कार्य में सफलता कैसे मिल सकती है?"

वास्तव में सदगुरुदेव के ये वचन स्पष्ट करते हैं कि जीवन का आधार ज्ञान ही है और ज्ञान की अधिष्ठात्री भगवती सरस्वती है जो पुस्तक धारण किये हुए हैं, जो वीणा धारण किये हुए हैं जो आशीर्वाद मुद्रा से युक्त हैं, जो व्यक्ति में पूर्ण अभय का संचार करती है। वह कहीं भी अकेला नहीं होता, ज्ञान रूपी आभूषण से सदैव युक्त रहता है। उसे अपने मित्र और शत्रु की पहचान होती है और यहीं तो साधक की पहचान है क्योंकि ज्ञान साधना कुण्डलिनी शक्ति का आधार है।

इस वर्ष दिनांक 23 जनवरी 2007 को सरस्वती जयंती है, वसंत पंचमी है। यह एक महाकल्प है इस शुभ अवसर पर सरस्वती की साधना कर हम अपने जीवन को एक श्रेष्ठ आधार प्रदान कर सकते हैं। पत्रिका में कई बार सरस्वती साधना के बारे में लिखा गया लेकिन मुझे यह लिखते हुए खेद है कि लोगों की रुचि सरस्वती साधना में कम और लक्ष्मी साधना में ज्यादा रहती है, जबकि वास्तव में होना चाहिए यह कि वे अपने पूरे परिवार के साथ सरस्वती साधना सम्पन्न करें, जिससे परिवार में श्रेष्ठता साहस, धैर्य, एवं सतत जिज्ञासा आये और बालकों में भी सरस्वती ज्ञान प्रदान करने क्योंकि ये व्यक्ति पशु की तरह परिश्रम कर सकते हैं।



सरस्वती

साधना-सिद्धि

जीवन का अनमोल धन है

जो निरन्तर वृद्धि की ओर ही गतिशील होता है
ज्ञान ही तो गुल है, गुल ही तो ज्ञान है

सिद्धि चण्डीः सरस्वती सिद्धि साधना

सरस्वती साधना प्रत्येक व्यक्ति को अवश्य ही सम्पन्न करनी चाहिए। जीवन में पर्णशायां तो पग-पग पर चलती ही रहती हैं, हर माता पिता याकरने हैं कि उनका बालक परीक्षा में अच्छे अंक प्राप्त करें। हर व्यक्ति चाहता है कि उसकी स्मरण शक्ति तीव्र हो, इन्टरव्यू में, नौकरी में सफलता प्राप्त हो, जो बात कहे वह नृगंग पर पभाव डाले, नेतृत्व की क्षमता का विकास हो, तो गण्यवर्णी साधना अवश्य करनी चाहिए। इसके अलावा कोई दूसरा मार्ग नहीं है और जब एक बार सरस्वती सिद्धि हो जाती है तो वह अपनी कृपा जीवन भर बनाये रखती है क्योंकि मां सरस्वती लक्ष्मी की तरह चंचला नहीं है, उसका तो स्थायी निवास रहता है।

साधना-विधान

यह साधना किसी भी पुष्य नक्षत्र में प्रारंभ की जा सकती है। साधक श्वेत धोती पहन कर पूर्व दिशा की ओर मुँह कर बैठें, जनेऊ धारण करें यदि अपने बालकों को भी साधना कराना चाहते हैं तो उन्हें भी श्वेत धोती पहना कर अपने साथ बैठाएं; चन्दन का तिलक करें, सामने सरस्वती देवी का चित्र अथवा तस्वीर लगाएं, शुद्ध धी का दीपक तथा अगरबत्ती जलाएं। अपने भामने एक ताम्र पात्र में एक पुष्य रख कर उस पर मंत्र सिद्धि प्राप्त पात्रा युक्त दिव्य चेतना 'सरस्वती यंत्र' स्थापित करें। उस पर कंशर तथा चन्दन चढ़ाएं, अपने हाथ में

भगवती महासरस्वती की साधना पूर्ण रूप से एक सात्विक साधना है तथा इसमें आचार-विचार में जितनी अधिक निष्कपटता होगी साधना में सफलता भी उतनी ही अधिक संभिकट होगी। महासरस्वती की साधना किसी भी माह के शुक्ल पक्ष की पंचमी को सम्पन्न की जा सकती है तथा इन समस्त पंचमियों में से भी माघ मास की शुक्ल पक्ष की पंचमी को विरोष फलदायक माना गया है, जो इस वर्ष दिनांक 23 जनवरी 2007, मंगलवार को है।

सरस्वती बीज मंत्र 'ऐं' लिखकर तथा यंत्र के नीचे अपना नाम लिख कर सरस्वती की वन्दना करें।

विनियोग

दाएं हाथ में जल लेकर संकल्प करें -

वन्द्यां परागमविद्यां सिद्धिचण्डी संगिताम्। महा सम्पश्ती मंत्र स्वरूपां सर्वसिद्धिदाम्। उ॑ अस्य सर्व विद्यान् महाराज्ञी सम्पश्ती मंत्रः रहस्याति-रहस्यमवी पराशक्तिः। श्री मदाद्या भगवती सिद्धि,

चण्डिका सहस्राक्षरी महाविद्यां श्री मार्कंण्डेय सुमेधा
ऋषिगर्वयव्यादि नानाविधानि छन्दांसि नवकोटि शांत हो जाता है। जीवन के परीक्षाकाल में प्रतिदिन पांच बार शक्तियुक्ता श्री मदाद्या भगवती सिद्धिचण्डी देवता इस मंत्र का उच्चारण करना चाहिए। यह अपने आप में सिद्धि श्री मदाद्या भगवती सिद्धि चण्डी प्रसादादखिलेष्टार्थे विजयप्रद मंत्र है। मंत्री में जो शक्ति है, वह शक्ति साधक स्वयं साधना कर प्रत्यक्ष अनुभव कर सकता है, वास्तव में यह अनुष्ठान ही शीघ्र प्रभावकारक है।

जल को जमीन पर छोड़ दें।

न्यासः

निम्न मंत्रों का उच्चारण करते हुए विभिन्न अंगों को दाएं हाथ से स्पर्श करें।

ॐ श्रीं नमः सहस्रादि ।	ॐ एं नमः भाते ।
ॐ क्लौं नमो नेत्र-युग्मे ।	ॐ एं नमः कर्णद्वये ।
ॐ सौं नमः नासापुटद्वये ।	ॐ नमो सुख्रे ।
हौं उं नमः कंठे ।	ॐ श्रीं नमो हृदये ।
ॐ एं नमो हस्त-युग्मे ।	ॐ क्लौं नमः उदरे ।
ॐ सौं नमः कट्चां ।	ॐ एं नमो गुह्ये ।
ॐ क्लौं नमो जंघायुग्मे ।	ॐ हौं नमो जानु-द्रव्ये ।
ॐ श्रीं नमः पादादि सर्वांगे ।	

ध्यान

मां सरस्वती का ध्यान करें। फिर इस मंत्र का 21 बार जप करें -

ॐ या माया मधुकैटभ प्रमथिनी या महिषोन्मूलिनी या थूमे क्षणचण्ड-मुण्डदलनी, या रक्त बीजासनी शक्ति: शुभ्निशुभ्नदैत्य मथनी, या सिद्धलक्ष्मीपरा या देवी नवकोटि-मूर्ति सहिता मां पातु विश्वेश्वरी।

मूल मंत्र

ॐ एं हौं श्रीं हौं श्रीं हौं एं क्लौं एं सौं ॐ हौं श्रीं एं क्लां सौं एं क्लां हौं श्रीं जय जय महासरस्वती जगदाद्यै बीज सुरासुर त्रिभुवन निदानेदयांकुरे सर्वतेजोरूपिणि महा-स्वरूपिणी महामहिमे सर्वते जोरूपिणि महा-स्वरूपिणी महामहिमे सर्वते जोरूपिणि महामहामाये महामायाविरं चि करें कि भगवती सरस्वती जान रूप में, बुद्धि रूप में, चेतना महामोहिनी मधुकैटभ जिह्वासिनी नित्य वरदान सरस्वती यंत्र को लाल ढोरे में पिरोकर अपनी दाई भुजा में तत्परे। महास्वाध्यायवासिनी महामहो तेजधारिणी। बांध दें। जब भी सरस्वती साधना करें तो इस यंत्र को सरस्वती सर्वाधारे सर्वकारण करणे अचिन्त्य रूपे। इन्द्रादि चित्र के साथ अपने दोनों हाथों में रख कर ऊपर लिखे चार निखिलनिर्जरसेविते सामग्रान् गायनित्पूर्णोदय मंत्रों में से अपने कार्य के अनुसार मंत्र जप सम्पन्न करें। वास्तव रक्तांशुके सूर्यकोटि संकाशेन्द्रकोटि सुशीतले सभी साधनाओं के द्वार खोल देती है।

अग्निकोटि दहनशीले यम कोटि क्रूरे वायु कोटि वहन सुशीतले।

संकट हो अथवा कष्ट, इस मंत्र का जप करने से संकट शांत हो जाता है। जीवन के परीक्षाकाल में प्रतिदिन पांच बार शक्ति साधना कर प्रत्यक्ष अनुभव कर सकता है, वास्तव में यह अनुष्ठान ही शीघ्र प्रभावकारक है।

विशेषः

साधकों के लिए पूर्ण मंत्र का नियमित जप करना संभव नहीं होता है। निश्चय ही मंत्र बड़ा है। अतः नित्य प्रति के साधना क्रम के लिये सरस्वती के कुछ विशिष्ट मंत्र दिये जा रहे हैं। जो साधक के आत्म ज्ञान, वाक्सिद्धि, कार्य में सफलता एवं भौतिक सुखों की प्राप्ति के विशिष्ट मंत्र हैं। दैनिक जीवन में साधक इन मंत्रों का नित्य स्फटिक माला से मंत्र जप करें, तो उसे अवश्य ही लाभ प्राप्त होता है।

आत्म ज्ञान हेतु
वद वद वाज्वादिनि स्वाहा॥

वाक् सिद्धि हेतु
ॐ हौं एं हौं ॐ सरस्वत्यै नमः॥

कार्य सफलता हेतु
ॐ हौं श्रीं एं वाज्वादिनि भगवति अहन्मुख
निवासिनि सरस्वति ममास्ये प्रकाशं कुरु कुरु
स्वाहा एं नमः॥

आत्म ज्ञान हेतु
ॐ एं वाज्वदेव्यै विज्ञहे धीमहि। तद्वो देवी
प्रचोदयात्॥

सरस्वती साधना में किसी विशेष आरती इत्यादि का विधान नहीं है। साधना समाप्त होने पर अपने हाथ पुष्प लेकर भगवती सरस्वती के चित्र पर पुष्पांजलि अर्पित करें और यही प्रार्थना महामहारूपिणि महामहामाये महामायाविरं चि करें कि भगवती सरस्वती जान रूप में, बुद्धि रूप में, चेतना महामोहिनी मधुकैटभ जिह्वासिनी नित्य वरदान सरस्वती यंत्र को लाल ढोरे में पिरोकर अपनी दाई भुजा में तत्परे। महास्वाध्यायवासिनी महामहो तेजधारिणी। बांध दें। जब भी सरस्वती साधना करें तो इस यंत्र को सरस्वती सर्वाधारे सर्वकारण करणे अचिन्त्य रूपे। इन्द्रादि चित्र के साथ अपने दोनों हाथों में रख कर ऊपर लिखे चार निखिलनिर्जरसेविते सामग्रान् गायनित्पूर्णोदय मंत्रों में से अपने कार्य के अनुसार मंत्र जप सम्पन्न करें। वास्तव रक्तांशुके सूर्यकोटि संकाशेन्द्रकोटि सुशीतले सभी साधनाओं के द्वार खोल देती है।

साधना सामग्री - 300/-

☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆

अरस्वती द्विवध के द्वितीय अपनी बालकों के लिये क्या करें?



बालकों में सीखने समझने की क्षमता विशेष रूप से होती है इसलिए बालकों को सरस्वती साधना अवश्य करनी चाहिए। यह केवल उनका ही नहीं उनके माता-पिता का भी कर्तव्य है कि बालक सरस्वती वन्दना नियमित रूप से अवश्य करें। मैंने अपने जीवन में देखा है कि कई व्यक्ति अपने भीतर तो ज्ञान बहुत समेटे होते हैं लेकिन जब उन्हें बोलने को कहा जाता है, तो वाणी जैसे लड़खड़ाने लग जाती है, कहना कुछ चाहते हैं और बोलते कुछ और ही है। इसी प्रकार नौकरी के इन्टरव्यू में जो असफल रहते हैं उसका कारण अपने आप को, अपने ज्ञान को सही रूप से प्रस्तुत करने की कमी होती है और यह दोष उनके जीवन को साधारण बना देता है, ऐसे व्यक्ति सफल नहीं हो पाते।

प्रातः: काल साधक जल्दी उठ जाय और स्नान आदि से निवत्त हो कर वसन्ती वस्त्र धारण करे, या पीले वस्त्र पहने, फिर घर के किसी स्वच्छ कमरे में या पूजा स्थान में अपने परिवार के साथ बैठ जाय, यदि संभव हो तो सामने सरस्वती का चित्र स्थापित कर दें।

इसके बाद एक थाली में “सरस्वती यंत्र” का अंकन निम्न

प्रकार से करें। सरस्वती यंत्र अंकन चांदी की शलाका से करें। साधकों को चाहिए कि वह पहले से ही चांदी की एक शलाका या चांदी का एक तार बनवा कर अपने पास रख लें।

इसके बाद एक कटोरी में “अष्टगंध” धोल दें। अष्टगन्ध में आठ महत्वपूर्ण वस्तुओं का समावेश होता है जो कि अत्यन्त दिव्य होता है। कहते हैं कि भगवान् श्रीकृष्ण के शरीर से अष्टगन्ध प्रवाहित होती रहती थी। इसके बाद सामने थाली में इस अष्टगन्ध से ही निम्न प्रकार से सरस्वती यंत्र चांदी की शलाका से अंकित करें।

फिर इस यंत्र पर ‘सरस्वती यंत्र’ रखें। सरस्वती यंत्र प्रत्येक साधक या बालक अथवा बालिका के लिए अलग-अलग होता है, ये यंत्र-मंत्र सिद्ध प्राण प्रतिष्ठा युक्त चैतन्य मंत्र से सिद्ध होने चाहिए।

इसके बाद अलग पात्र में इन यंत्रों को कच्चे दूध से धो कर फिर जल से धोएं और पौछ कर जिस थाली में सरस्वती यंत्र अंकित किया गया था, उस पर इन सभी यंत्रों को रख दें, और उन पर अष्टगन्ध का तिलक करें, पुष्प चढ़ावें, सामने अगरबत्ती और दीपक लगावें और दूध का बना प्रसाद समर्पित करें, सभी यंत्रों के लिए केवल एक ही दीपक जलाना पर्याप्त है।

इसके बाद सरस्वती मंत्र की एक माला मंत्र जप घर का मुखिया करे या जितने भी बालक बालिकाएं हैं, वे सभी मात्र एक-एक माला सरस्वती मंत्र जप करें।

सरस्वती मंत्र

//ॐ एं सरस्वत्यै एं नमः //

इसके बाद सामने सरस्वती चित्र रख दें, उसकी संक्षिप्त पूजा करें और उसके सामने पुष्प चढ़ावें, यदि सम्भव हो तो स्वयं और अपने बालकों को भी पीले पुष्पों की माला पहनावें।

इसके बाद घर का मुखिया चांदी की शलाका से अष्टगन्ध के द्वारा प्रत्येक साधक या बालिका या पत्नी की जीभ पर “ऐं” (सरस्वती बीज मंत्र) लिख लें और फिर अपनी स्वयं की जीभ पर भी इस बीज मंत्र को अंकित करे, इसके बाद चांदी की शलाका को धो कर रख दें।

साधना सामग्री - 120/-



गुरु गोरखनाथ प्रणित

गोरक्ष गीता, सिद्ध सिद्धान्त पद्धति, योग विज्ञामणि

ग्रंथों से उल्लेखित

विशिष्ट लांश्चिक लाध्यानुं

जौ चुगान्तकारी है, असृत अंजीवनी चुक्त आधिनाएँ हैं

ऐसा कहा जाता है कि गुरु गोरखनाथ को समाधिस्थ पाकर माता-पार्वती ने भगवान शिव से उस योगी के प्रति जिज्ञासा व्यक्त की। भगवान शिव शंकर ने कहा कि यह मौलिक यौगिक प्रस्तुतीकरण है। नौ नाथ तथा चौरासी सिद्ध स्वयं शिव की अनुकृति हैं तथा आख्यान यह सुझाव देते हैं कि वे पूर्व निर्धारित रचनाएँ हैं। शिव गोरखनाथ सिद्ध परम्परा के जन्मदाता हैं, संस्थापक हैं। अनेक अन्य महापुरुषों के समान नाथ सम्प्रदाय में उन्हें शिव गोरक्ष के रूप में समानीय माना गया है।

गुरु गोरखनाथ जिन्हें नाथ सम्प्रदाय का प्रणेता माना जाता है, वे गुरु मत्स्यन्द्र नाथ के परम शिष्य थे। उनके बारे में, उनके जीवन के सम्बन्ध में रहस्यात्मक वर्णन आता है। इस सम्बन्ध में विभिन्न ग्रंथों में जो आख्यान आता है। वह आख्यान अद्भुत है, गुरु गोरखनाथ दैवीय शक्ति से युक्त थे।

पंडित राजमणि विगुणायित अपनी पुस्तक 'जन्म से मृत्यु तक' में गुरु गोरखनाथ के दैवीय जन्म का उल्लेख करते हैं। उन्होंने लिखा कि संत नारायण स्वयं मत्स्येन्द्र नाथ के रूप में अपने पूर्व जन्म में लौट जाते थे। मानव समुदाय के अज्ञान की गहनता तथा दुर्भाग्य की पराकाष्ठा को अनुभव करते हुए उन्होंने मानव जाति की सहायता करने का प्रण लिया। वह अपने एक प्रिय शिष्य के शरीर में प्रविष्ट हो सार्वभौम विश्व की अनुभूतियों का अंग बन गये।

गुरु गोरखनाथ ने गोरक्षा संहिता, गोरक्षा गीता, सिद्ध सिद्धान्त पद्धति, योग मार्तण्ड, योग सिद्धान्त पद्धति, योग बीज, योग चिन्तामणि इत्यादि अनेक ग्रंथों की रचना की। वे उल्लेख कृपाचार्य अथवा चिरंजीवी अश्वत्थामा (महाभारत

नाथ सम्प्रदाय के प्रणेता माने जाते हैं तथा यह कहा जाता है, कि नौ नाथ तथा चौरासी सिद्ध ये सभी मानव स्वरूप में आये जिन्होंने यौगिक क्रिया पद्धति का संदेश विश्वभर में फैलाया। उन्होंने समाधि के माध्यम से मानव कल्याण की दिशा में अपना जीवन लगाया।

अनेक सिद्ध उनके सान्निध्य में रहे। उन्हें सामान्यतः बाबाजी के रूप में ही जाना जाता था तथा वे इसी रूप में जनता को दर्शन दिया करते थे। वे इतिहास पुरुष हैराखण्डी बाबा अथवा हैराखान बाबा के सान्निध्य में रहे जिनके बारे में उन्नीसवीं तथा बीसवीं शताब्दी तक के संदर्भ तथा अनेकानेक लोगों के साथ जुड़ाव के प्रमाण उपलब्ध होते हैं। कुछ लोग इनका उल्लेख महावतार बाबाजी के रूप में करते हैं जो लाहिड़ी महाशय से 1861 के रूप में मिले थे। ऐसा उल्लेख परमहंस योगानन्द जी की पुस्तक (योगी की आत्मकथा) के माध्यम से ये बहुत लोकप्रिय हुए। कुछ अन्य महानुभाव अपनी रचनाओं में इनको

कालीन) के रूप में उल्लेख करते हैं। ये क्रिया बाबाजी के रूप में भी जाने जाते हैं।

यह जन सम्मत है कि गुरु गोरखनाथ का जीवन हजारों वर्ष तक अस्तित्व में रहा जो मानव कल्याण तथा जीवन उद्देश्य के प्रति केन्द्रित रहा। गुरु गोरखनाथ विश्व जीवन की वास्तविकता के पौराणिक आख्यान है जो सर्वथा तर्कपूर्ण है, जहां चेतना में सत्य सुदृढ़ अवलोकन होता है। मानव समुदाय में उनके में भांति-भांति की असीम व्याखाएं एवं विचार व्यक्त किये जाते हैं। जिनमें चमत्कार अविश्वास तथा विश्वास का समावेश है।

किन्तु जो प्रखर व चेतनावान व्यक्तित्व होते हैं, उनकी यही तो विशेषता होती है कि वे किसी 'आश्रय' के उत्तरापेक्षी होते ही नहीं। समस्त विरोधाभासों के उपरान्त भी गुरु गोरखनाथ का चेतना विस्तार रुका नहीं और पश्चिम में आबू पर्वतों से लेकर दक्षिण में महाराष्ट्र प्रांत के अमरावती जिले के सुविस्तृत भूभाग तक आज गुरु गोरखनाथ के नाम से कोई भी अपरिचित नहीं होगा।

साथ ही यदि उनके द्वारा प्रदत्त चेतना को ज्ञान रूपान्तर को भी गणना में लिया जाए, तो यह निःसंकोच कहा जा सकता है, कि सम्पूर्ण विश्व के आध्यात्मिक चिंतन को एक नई दिशा प्रदान करने में गुरु गोरखनाथ जी का विशिष्ट स्थान रहा है।

निश्चय ही ऐसी चेतना का विस्तार उस व्यक्तित्व ने अपनी ही क्षमताओं, अपने ही दमखम के बल पर किया होगा। गुरु गोरखनाथ का नाम केवल आध्यात्मिक चेतना के विस्तार के कारण ही नहीं वरन् इस कारण भी अविस्मरणीय है कि उन्होंने साधना के क्षेत्र में भी नूतन आयामों को स्पष्ट किया।

गुरु गोरखनाथ ने जिस आध्यात्मिक चेतना का प्रादुर्भाव किया था, कालान्तर में उसी में कबीरदास, रञ्जन, दादू जैसे श्रेष्ठ संत, कवि समाज-सुधारक हुए, जिन्होंने अपने विविध उपायों के द्वारा समाज में व्याप विविध कुरीतियों के समापन का उपाय संभव किया।

इसके अतिरिक्त गुरु गोरखनाथ ने एक अन्य महत् कार्य जो किया वह यह था कि उन्होंने अनेक पन्थों को समाहित करने की चेष्टा की, अनेक पन्थों के वैचारिक मतभेदों (जो मतभेद से भी आगे बढ़कर वैमनस्य के रूप में परिवर्तित हो गये थे) को समाप्त कर एकरुपता लाने की चेष्टा की।

यद्यपि इसका तात्पर्य यह नहीं, कि उनका अभीष्ट अपने मन का वर्चस्व स्थापित करना था। ऐसे क्षुद्र चिंतनों को लेकर

कोई भी युगपुरुष गतिशील होता ही नहीं, किन्तु जब केवल स्वार्थवश अनेक पंथों की भीड़ सी खड़ी हो जाए, तब ऐसा करना आवश्यक भी हो जाता है, जो गुरु गोरखनाथ ने किया।

कदाचित इस प्रयास में उनके द्वारा प्रदत्त चेतना का वह मूल स्वरूप न रह गया होगा, जो उनका चिन्तन, उनका लक्ष्य रहा होगा, किन्तु यह विसंगति तो प्रत्येक युग पुरुष के साथ एक अनिवार्य अंग बन कर विद्यमान रही है। इसका कारण मात्र इतना ही है, कि प्रत्येक युगपुरुष तो काल की एक निश्चित सीमा अवधि में ही जीवन के समस्त क्षेत्र में अपने पग चिन्हों को छोड़ते हुए आगे बढ़ जाते हैं।

यह तो उनके शिष्यों का चिन्तन होता है कि वे अपने गुरुदेव को किस रूप में आगे बढ़कर विस्तार देने की, उसे विवेचित व व्याख्यायित करने की चेष्टा करते हैं, और यह भी 'शिष्य' का ही चिन्तन होता है, कि वह पादपद्म बनने की युक्तियां सोचता है अथवा मण्डन मिश्र बनने का प्रयास करता है।

उपरोक्त सन्दर्भ में खेद से कहना पड़ता है कि गुरु गोरखनाथ के पश्चात् एक श्रेष्ठ परम्परा विभिन्न विसंगतियों में, श्रेष्ठ शिष्यों के अभाव में खो सी गई। गुरु का दायित्व जितना होता है, उसे वे पूर्ण कर जाते हैं, इसमें किसी संदेह के लिए स्थान ही नहीं, किन्तु शिष्यों के भी कुछ दायित्व होते हैं - अपने गुरु के प्रति, गुरु कार्यों के प्रति, इसमें भी तो संदेह के लिए कोई स्थान नहीं।

इसी विसंगति अथवा शिष्यों की न्यूनता का फिर यह परिणाम रहा, कि आज एक पढ़ा-लिखा व्यक्ति भी यह स्पष्ट रूप से नहीं समझ पाता, कि गुरु गोरखनाथ द्वारा प्रवर्तित पन्थ या नाथ मूलतः क्या है?

सम्भव है सुनने में यह बात कुछ कटु लगे, किन्तु यह एक वास्तविकता है, कि पूर्वी उत्तर प्रदेश में, जहां के गुरु गोरखनाथ थे, प्रत्येक अस्पष्ट कार्य-व्यापार को व्यंगपूर्वक गोरखधन्धा की संज्ञा दी जाती है। सामान्य व्यक्ति की दृष्टि में आज किसी संन्यासी, जोगी, भिक्षुक या जो भी अनगढ़ सा, ऊंटपटांग बोलता, नशा किए हुए हो, वह प्रायः 'नाथपन्थी' ही होता है।

यह कितने अधिक खेद की बात है, क्योंकि ऐसा चिन्तन तक गुरुगोरखनाथ जी की उच्चता पर आघात है। यह तो वास्तविकता से कोसों दूर की बात है। गुरु गोरखनाथ की तो यह एक सामाजिक चेतना थी, जिसके अन्तर्गत अपने काल में सभी पन्थों को एक धारा में लाने का चिन्तन व प्रयास किया, जिसका कालान्तर में कबीर आदि संतों ने विकास किया।

गुरु गोरखनाथ के साहित्य में यत्र-तत्र बिखरे उदाहरणों से यह बात पूर्णता से स्पष्ट भी होती है, यद्यपि वे दूसरे पन्थों की विसंगतियों पर आधात करते समय उतने कटु नहीं होते, जितने कटु कबीर हो जाते हैं। गुरु गोरखनाथ ने इस विषय पर स्वयं कहा है -

खंडित ज्यानी खर तर बोलै, सति का सबद उछेदै।
काया के बल करड़ा बोलै, भीतरि तत न भेदै॥

अर्थात् जो खंडित जानी है, वही तीखी बात बोलता है और सत्य के शब्द का उच्छेद कर बैठता है। उसके अन्तर्मन में तो सत्य का प्रवेश हो नहीं पाया होता है, इसी से वह केवल शरीर के बल पर कठोर वचन कहता है।

अस्त्रांगों के निवारण हेतु

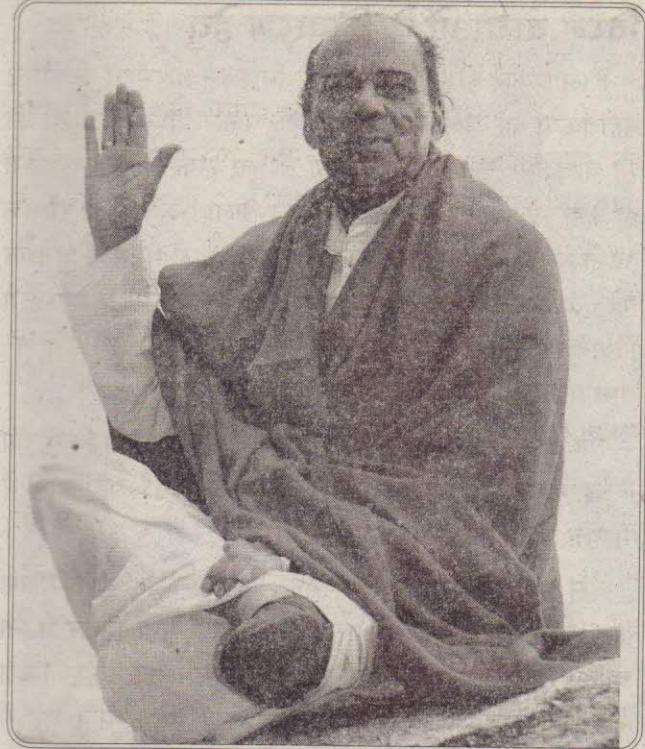
जीवन में ऐसी अनेक स्थितियां होती हैं जहां साधक किसी अस्त्रा मानसिक अथवा शारीरिक पीड़ा से ग्रस्त होता है तथा उसके समाधान के लिए किसी दैवी बल की अपेक्षा करता है। ऐसी पीड़ाओं को किसी परिभाषा में नहीं बांधा जा सकता है, क्योंकि यह तो व्यक्ति की क्षमताओं से सम्बन्धित बात है। जो स्थिति किसी एक के लिए सहज हो, वही दूसरे के लिए अस्त्रा भी हो सकती है, किन्तु यह साधना प्रत्येक दशा में साधक को कुछ ऐसा अतिरिक्त बल प्रदान करती है, जिससे वह बिना किसी गम्भीर हानि के उस समस्या का निदान प्राप्त कर ही लेता है। एक प्रकार से यदि इसे आत्मबल की साधना कहें, तो अनुचित नहीं होगा।

इस साधना को सम्पन्न करने के लिए साधक के पास 'ताबीज रूप में काली यंत्र' एवं 'काली हकीक माला' होना आवश्यक है। इन दोनों अत्यावश्यक साधना सामग्रियों का रोग-नाशक मंत्रों से सिद्ध होना आवश्यक है।

इस प्रयोग को कभी भी सम्पन्न किया जा सकता है। यदि कोई चाहे, तो संकल्प कर इसे किसी दूसरे व्यक्ति के लिए भी सम्पन्न कर सकता है। यह रात्रि में किया जाने वाला प्रयोग है तथा साधक को गहरे नीले रंग की धोती धारण कर किसी गहरे नीले रंग के आसन पर ही दक्षिण मुख होकर बैठना चाहिए। अन्य किसी विधि-विधान की विशेष आवश्यकता नहीं है। साधक तेल का दीपक लगाकर यंत्र के सम्मुख निम्न मंत्र की एक माला जप करें -

मंत्र

काली रात एक नदी वीर, सात समुद्र का जगमग तीर, कामारुद्या रानी का जोरी पिण्डा, भैरवनाथ



हरो सब यीरा, शब्द सांचा पिण्ड काचा, फुरो मंत्र ईश्वरो तेरी वाचा॥

यदि कोई गम्भीर संकट की अवस्था में हो, तो इसी प्रयोग को थोड़े से परिवर्तन के साथ करना लाभदायक रहता है। इसके लिए साधक को चाहिए कि साधना के प्रारम्भ में ही हाथ में जल, कुछ काले तिल के दाने, चावल एवं पुष्प की पंखुड़ियों को लेकर संकल्प करें -

"मैं अमुक नाम, अमुक दिन में अपने अमुक प्रकार की पीड़ा के निवारण के लिए काली सावर प्रयोग सम्पन्न कर रहा हूं, अतः शीघ्रातिशीघ्र लाभ मिले।"

ऐसा कहकर वह यह सभी सामग्री किसी ताम्रपात्र में भरे जल में डाल दें तथा प्रत्येक बार मंत्र उच्चारण के साथ ही कुछ तिल के दाने उसी पात्र में डालता रहे। साधना की समाप्ति पर उस पात्र को स्वयं के सिर पर धुमा कर घर से कुछ दूर दक्षिण दिशा में पात्र की सभी सामग्रियां फेंक आएं।

इसी प्रयोग को किसी अन्य रोगी के लिए करते समय संकल्प में रोगी का भी नाम लें तथा अंत में सामग्रियां उसके सिर पर धुमा कर फेंक दें।

साधना की समाप्ति पर यंत्र एवं माला को यथाशीघ्र घर से दूर कहीं फिकवा दें।

न्यौषावर - 270/-

☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆

विघ्न बाधाओं के निवारण हेतु

जिस प्रकार पीड़ाओं को किसी निश्चित परिभाषा से स्पष्ट नहीं किया जा सकता है, ठीक उसी प्रकार विघ्न-बाधाओं की भी कोई निश्चित परिभाषा नहीं दी जा सकती, केवल इतना ही क्यों न हो। विघ्न का निश्चित प्रवाह बने रहने से ही साधक ही कहा जा सकता है, कि जिन ज्ञात-अज्ञात कारणों से साधक अपने मानसिक, आत्मिक एवं भौतिक विकास में बाधा अनुभव करे, वे कारण ही विघ्न या बाधा होते हैं। प्रस्तुत प्रयोग इसी विशद् 'परिभाषा' के अनुकूल जीवन की उन सभी विघ्न-बाधाओं को शांत करने में समर्थ है।

यह अपने आप में शत्रु नाशक प्रयोग भी है, जिसे किसी भी सिद्ध मुहूर्त पर सम्पन्न किया जा सकता है। यह रात्रि में सम्पन्न किया जाने वाला प्रयोग है।

इस प्रयोग हेतु साधक को गहरे लाल रंग की धोती धारण कर, गहरे लाल रंग के आसन पर दक्षिण मुख होकर बैठना चाहिए तथा अपने सम्मुख एक काला वस्त्र का टुकड़ा बिछा लें। इस वस्त्र के टुकड़े पर 'आठ बुन्दे' एक गोल धेरे में स्थापित करें, जो काली मंत्रों से चैतन्य हों। इस धेरे के मध्य में अपनी जो भी समस्या हो (अथवा शत्रु के नाम को) एक कागज पर लिख कर मोड़ कर रख दें तथा ऊपर से काले तिलों की एक छोटी सी ढेरी ऐसी बना दें, कि कागज का डुकड़ा दिखाई न दें। इस ढेरी के ऊपर 'दो गोमती चक्र' रखें तथा उन पर काजल का टीका लगाकर 'मूँगे की माला' से निम्न मंत्र की एक माला मंत्र जप करें। माला केवल मूँगे की होनी आवश्यक है -

झरझर बहे कपाल फटे, नाथ का बुंदा पांव पड़े
गोरख राज सत्य कहे तिरिया का रूप वही धरे,
शब्द सांचा पिण्ड कांचा, फुरो मंत्र ईश्वरो तेरी
वाचा॥

मंत्र जप के काल में तेल का दीपक अवश्य लगा लें। अन्य किसी विधान की आवश्यकता नहीं है। यदि मंत्र जप के काल में भय की अनुभूति हो तो विचलित होने की आवश्यकता नहीं। मंत्र जप के उपरान्त समस्त आठों बुन्दे घर से बाहर जाकर आठों दिशाओं में फेंक दें तथा माला व दोनों गोमती चक्रों को घर से कुछ हट कर भूमि में गाड़ दें। शेष सामग्री अर्थात् तिल एवं कागज को जला दें। इन सभी कार्यों को यथा सम्भव शीघ्रता पूर्वक ही सम्पन्न कर लें तथा इन्हें सम्पन्न करने के बाद स्नान कर लें। अपने अनुभवों को गुम रखें।

न्यौडावर - 280/-

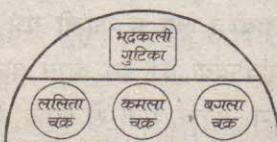
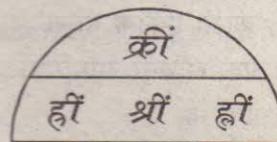
☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆

३० 'दिसम्बर' 2006 मंत्र-तंत्र-यन्त्र विज्ञान '76'

धन के निश्चित आगमन हेतु

धन की साधक के जीवन में क्या महत्ता होती है, इसको स्पष्ट करने की आवश्यकता नहीं, भले ही साधक संन्यासी भी कोई निश्चित परिभाषा नहीं दी जा सकती, केवल इतना ही क्यों न हो। धन का निश्चित प्रवाह बने रहने से ही साधक मानसिक चिन्ताओं से मुक्त होकर अपनी साधनओं को पूर्णता दे पाता है। धन के निरन्तर प्रवाह बने रहने से वह आगे बढ़कर अनेक समाजोपयोगी कार्य कर पाता है, अपने गुरु के चरणों में उपस्थित हो उनकी आज्ञाओं, उद्देश्यों को पूर्ण करने में सहायक बन पाता है तथा इस प्रकार से समाज में श्रेष्ठता और सम्मान का पात्र बन जाता है।

इन समस्त उद्देश्यों की पूर्ति हेतु ही साबर मंत्रों के क्षेत्र में एक श्रेष्ठ साधना सृजित की गई है, जो कि मूलतः भद्रकाली पर आधारित है। यह विशिष्ट साधना मात्र धन की ही साधना नहीं है वरन् त्रिगुणात्मक प्रभावों को प्रदान करने में समर्थ साधना है। इस साधना को साधक किसी भी सिद्ध पर्व पर सुबह छः बजे से सात बजे के मध्य सम्पन्न कर सकते हैं। इस साधना हेतु साधक को चाहिए, कि वह स्नान आदि कर पीले वस्त्र धारण करे तथा पीले आसन पर उत्तर दिशा की ओर मुख करके स्थान ग्रहण करे। इसके पश्चात् पीले वस्त्र के टुकड़े पर निम्न प्रकार से यंत्र उत्कीर्ण करें। यंत्र का स्वरूप चित्र संख्या 1 में प्रदर्शित किया गया है तथा अंकन के पश्चात् उस पर चित्र संख्या 2 के अनुसार क्रमशः 'ललिता चक्र', 'कमला चक्र' एवं 'बगला चक्र' स्थापित कर 'भद्रकाली गुटिका' को भी स्थापित करें -



तदुपरान्त सभी चक्रों का पूजन कुंकुम तथा अक्षत से कर भद्रकाली गुटिका का पूजन सिन्दूर से करें तथा 'श्वेताभ माला' से निम्न मंत्र की मात्र एक माला मंत्र जप सम्पन्न करें। मंत्र जप के काल में धी का दीपक अवश्य प्रज्वलित कर लें -

मंत्र

अन्हद हृद कुल नाथ कहत सुन, तीन पताका चौथी बिंदिया, सिंदूर की जाग्न पूरब की दिसिया, शब्द सांचा पिण्ड काचा फुरो मंत्र ईश्वरा तेरी वाचा॥

मंत्र जप के उपरान्त सभी साधना सामग्रियों को तथा जिस कपड़े पर यंत्र अंकित किया है, नदी में पवित्रता पूर्वक विसर्जित

कर दें। निश्चित धन प्राप्ति के प्रवाह की इस साधना में विघ्न विनाशक तत्त्वों का भी समावेश है।

न्यौषावर - 350/-

☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆

शत्रुओं के दमन हेतु

जब व्यक्ति उच्चता की ओर अग्रसर होता है, तो निश्चय ही उसके अनेक विरोधी उत्पन्न हो जाते हैं जो व्यक्तित्व पर दाग लगाने और हानि पहुंचाने का प्रयास करते रहते हैं। ऐसे व्यक्तियों के विषय में बहुत अधिक सावधान रहना पड़ता है और यदि समय रहते उनका दमन नहीं किया जाय, तो उस व्यक्ति के सामने अनेक विपरीत परिस्थितियां खड़ी हो जाती हैं। अतः उच्चति के मार्ग को निष्कण्टक बनाने के लिए यह आवश्यक है, कि जीवन में आने वाले सभी शत्रुओं से रक्षा हो तथा वे कभी भी अपना सिर न उठा सकें।

काले रंग के वस्त्र पर कुंकुम से विभुज बना कर उसके तीनों सिरों पर एक-एक 'शत्रु दमन गुटिका' स्थापित कर गुटिका का पूजन करें। फिर 'काली हृकीक माला' से निम्न मंत्र का पांच दिन तक नित्य 5 माला मंत्र जप करें -

मंत्र

हनुमान् पहलवान्, बारह बरस का जवान। मुख में बीरा, हाथ में कमान। लोहे की लाठ, वज्र का कीला। जहां बैठे, तंह हनुमान् हठीला। बल रे, बाल राख्वो। सीस रे, सीस राख्वो। उराजे जोगिनी राख्वो। पाछे नरसिंह राख्वो। जो कोई छल करे, कपट करे, तिनकी बुद्धि-मति बांधो। दोहाई हनुमान् वीर की। शब्द सांचा, पिण्ड काचा, फुरो मंत्र ईश्वरो वाचा॥

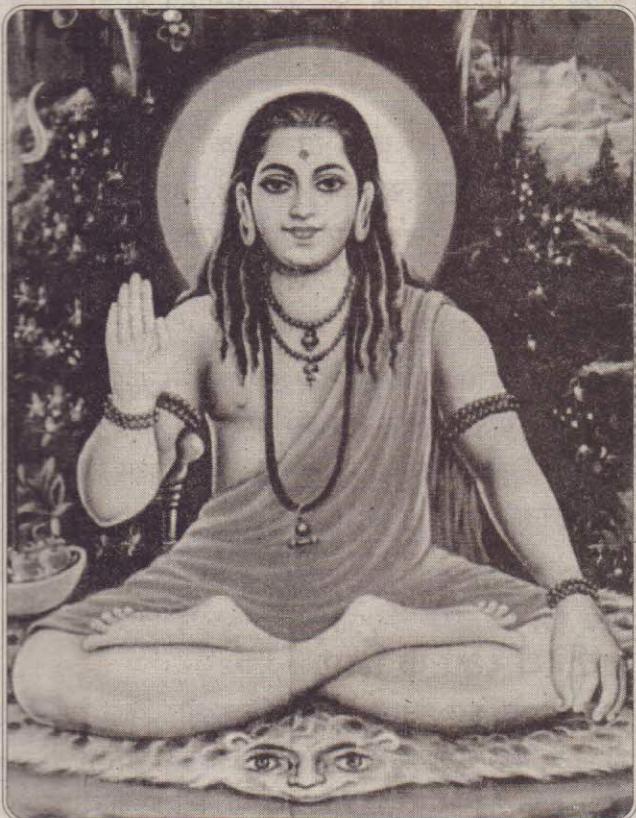
पांच दिन पश्चात् उसी वस्त्र में नमक की पांच ढली रख कर माला और गुटिका के साथ बांध दें तथा उसे नदी के किनारे गह्ना खोद कर दबा दें।

न्यौषावर - 260/-

☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆

मानसिक शान्ति हेतु

साधना के क्षेत्र में उच्चति के इच्छुक साधकों के लिए यह आवश्यक है कि वे प्रत्येक स्थिति में संतुलन बनाये रखें। शक्ति साधना के क्षेत्र में सक्रिय साधकों के लिए तो परम आवश्यक होता है, कि वे अपने क्रोध पर विजय प्राप्त कर सकें। प्रस्तुत प्रयोग इसी श्रेणी का मूलतः एक आध्यात्मिक



प्रकृति का प्रयोग है, किन्तु इसका लाभ दैनिक जीवन में भी अनुभव किया जा सकता है।

किसी विशेष कारणवश सदैव तनावग्रस्त रहने वाले साधकों के लिए यह वरदान स्वरूप ही है। इस प्रयोग के फलस्वरूप साधक को अपनी अनेक समस्याओं के हल भी प्राप्त होते देखे गए हैं। वस्तुतः जो जितनी प्रबलता और जितने सघन विश्वास के साथ साधना में संयुक्त होता है, वही साधक एक ही साधना से विविध फल भी प्राप्त कर लेता है। यही साधना का रहस्य है।

किसी चमत्कार की आशा न रखने वाले किन्तु साधना में विश्वास रखने वाले श्रेष्ठ साधकों के जीवन में यह प्रयोग नवीनता लाएगा ही, ऐसा मेरा दृढ़ विश्वास है। साधक इस प्रयोग को नवरात्रि के अतिरिक्त किसी सोमवार को भी सम्पन्न कर सकते हैं। इसके लिए साधक के पास साबर मंत्रों से सिद्ध ऐसा शिवलिंग होना आवश्यक है, जो योनि मण्डल (या सामान्य बोलचाल की भाषा में अर्ध) से युक्त हो। यदि साधक इस प्रकार के 'सिद्ध शिवलिंग' को प्राप्त कर सकें, तो अत्युत्तम माना गया है। इसके अतिरिक्त 'दो तांत्रोक्त फल' इस साधना हेतु आवश्यक सामग्री हैं। साधक श्वेत वस्त्र तथा आसन का प्रयोग करें व दिशा उत्तर हो। शिवलिंग को किसी ताम्रपात्र में स्थापित कर दोनों तांत्रोक्त फल उसके दोनों ओर स्थापित करें। इसके उपरान्त सभी का पूजन केवल कुंकुम एवं अक्षत

से करें तथा धी का दीपक जला कर निम्न मंत्र का 51 बार जप करें -

मंत्र

छतरी का बजा बजे, तिनक की भाँज चढ़े, भैरव लक्ष्य के समीप जा कर भी आप पुनः उसी स्थान पर आ जाते का बल बढ़े, गोरख की बात रहे, हल्स हल्स लहर हैं, जहां से आपने कार्य आरम्भ किया था। यह अनुभव एक लहर टिनक टिनक झिमक झिमक, चार के चार बार का नहीं है, अपितु जीवन में ऐसी अनेक परिस्थितियां गोड़ दुई के माथे पड़े, सबद सांचा पिण्ड कांचा आती हैं, जब हमें एक सामान्य से कार्य को भी सम्पन्न करना फुरों मंत्र ईश्वरो तेरी वाचा॥

प्रयोग समाप्ति पर शिवलिंग व तांत्रोक्त फल नदी में विसर्जित कर दें। साधक यदि एक बार इस प्रयोग को सम्पन्न कर लेता है, तो भविष्य में अनेक तनावों से बचता हुआ परमशान्ति प्राप्त करता है।

न्यौषावर - 280/-

☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆
स्वर्विध रक्षा के लिए

समय का कुछ पता नहीं होता, कब और किस क्षण क्या हो जाय, कुछ कहा नहीं जा सकता। आज के समाज में, जब चारों तरफ लूटमार मची हुई है, चोरियां, हत्याएं और दुर्घटनाएं बढ़ गई हैं, प्रत्येक व्यक्ति अपनी सामाजिक और आर्थिक सुरक्षा के नाम पर अनिश्चय की स्थिति में है। ऐसी विषम स्थिति में भी अब आप निश्चिन्त हो सकते हैं इस प्रयोग को शब्दों पूर्वक सम्पन्न करके -

स्नान कर पूर्व की ओर मुंह करके खड़े हो जायें तथा अपने बायें हाथ में 'साबर रक्षा गुटिका' तथा दाहिने हाथ में आठे का दीपक ले लें। फिर गुटिका को देखते हुए निम्न मंत्र का 75 बार जप करें -

मंत्र

हनुमन्ता-गुणवन्ता, कुड़ती कपाट से कमान। बैठे आलगट पागलट बांध। कवरी का धाट। जल बांध, थल बांध, फिरती कैकण्ड बांध, आज्या बीर बांध। बावन कुट्या बांध, बावन मेस्सका बांध। कौन बांधी, हनुमान बीर बांधी। न बांधी, तो युरु उस्ताद हनुमन्ता की आन। युरु की शक्ति, मेरी भक्ति। चलते मंत्र ईश्वरो वाचा॥

प्रयोग समाप्ति के बाद गुटिका और दीपक को नदी में प्रवाहित कर दें।

न्यौषावर - 120/-

☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆

स्वर्विध द्विद्वि हेतु

हो सकता है, कि आपके अनेक प्रयत्न करने पर भी आपको किसी कार्य में सफलता नहीं मिल रही हो और प्रत्येक बार कार्य के समीप जा कर भी आप पुनः उसी स्थान पर आ जाते हैं, जहां से आपने कार्य आरम्भ किया था। यह अनुभव एक लहर टिनक टिनक झिमक झिमक, चार के चार बार का नहीं है, अपितु जीवन में ऐसी अनेक परिस्थितियां गोड़ दुई के माथे पड़े, सबद सांचा पिण्ड कांचा आती हैं, जब हमें एक सामान्य से कार्य को भी सम्पन्न करना अति दुष्कर प्रतीत होता है, अनेक प्रतिकूल स्थितियों का सामना करना पड़ता है। ऐसी विषम परिस्थितियों में भी अपने कार्यों को सम्पन्न कीजिए इस साबर प्रयोग से।

सफेद वस्त्र पर काजल से एक मानवाकृति बना कर उसके मध्य में 'स्वर्व कार्य सिद्धि गुटिका' तथा उसके सिर पर, दोनों हाथों पर व दोनों पैरों पर एक-एक 'हमजाद' स्थापित करें। गुटिका तथा प्रत्येक हमजाद का पूजन कर धूप लगायें तथा निम्न मंत्र का 25 बार उच्चारण करें -

मंत्र

ॐ नमो आदेश युरु कूं, सात समुद्र विच किल्ला, सत्तेमान ऐग्म्बर बैठा तरुत, सुलेमान ऐग्म्बर को चारि मुवक्किल - तारिया, सारिया, जारिया, जमारिया। एक मुवक्किल पूरब जया, लाया देव-दानव को बांध। दूसरा मुवक्किल पश्चिम जया, लाया भूत-प्रेत बांध। तीसरा मुवक्किल उत्तर को जया, उत्तरित को बांधि लाया। चौथा मुवक्किल दस्तिक को जया, डाकिनी-शाकिनी को बाध लाया। चार मुवक्किल चहुं दिशि ध्यावै, छल-छिद्र कछु रहे न पावे। सब्द सांचा, पिण्ड काचा, फुरो मंत्र ईश्वरो वाचा॥

यह प्रयोग तीन दिन तक करें। प्रयोग होने पर सभी सामग्रियों को श्मशान में फेंक दें तथा घर आकर स्नान कर कार्य आरम्भ कर दें।

न्यौषावर - 280/-

पूज्यपाद नुरुदेव की कृपा से स्पष्ट ही सके एक दुस ज्ञान के पुनर्जीवन हेतु असभी आनन्द की अनुभूति ही रही है। वस्तुतः ज्ञान का प्रकाश, ज्ञान का पुनर्जीवन आदि कियाएं होती तो उसी एक वैतन्य सत्ता से हैं, केवल युम के लाथ-लाथ वही सत्ता नये-नये स्वरूपों में आती रहती है।

बल, बुद्धि, शौर्य, निडरता प्राप्ति हेतु
भूतप्रेत, निर्बलता, भय अनिष्ट निवारण हेतु

हनुमान सिद्धि यंत्र



यह सत्य है, कि जीवन सीधा-सादा नहीं है, जीवन में तो सैकड़ों परेशानियाँ हैं, संकट हैं, सैकड़ों अड़चने हैं पग-पग पर शत्रु हम पर वार करने के लिए तैयार हैं; वे जो हमें ऊंचा उठाता देखकर पीठ पीछे से सैकड़ों प्रकार के घड़यंत्र तैयार कर लेते हैं और हमारा सारा जीवन विषाद, तनाव, बाधाओं, अड़चनों और परेशानियों से जूझते हुए व्यतीत होने लगता है... और हम जीवन में जो कुछ करना चाहते हैं, वह नहीं कर पाते, और वह यदि नहीं कर पाते तो जीवन एक साधारण जीवन बन करके रह जाता है।

फिर किस प्रकार इस जीवन में तेजस्विता, उत्साह, प्रफुल्लता और जोश आये? कौन सा ऐसा माध्यम है, जिसके माध्यम से हम दिखा सकें कि एक सामान्य परिवार में उत्पन्न होकर भी बहुत कुछ कर सकते हैं - यह बहुत कुछ कर देने की क्षमता 'हनुमान सिद्धि' के माध्यम से संभव है।

साधक मंगलवार को लाल रंग के आसन पर 'हनुमान सिद्धि यंत्र' स्थापित करें एवं स्वयं भी लाल रंग के वस्त्र धारण कर लाल रंग के ही आसन पर दक्षिण की ओर मुंह करके बैठें। सामने तेल का दीपक जलायें एवं गुड़ का भोग (धी में सान कर) लगायें तथा मूँगे की सिद्ध माला से निम्न मंत्र का 11 माला जप करें।

// ॐ नमो हनुमन्ताय आवेशय आवेशय स्वाहा //

इस प्रकार नित्य प्रति रात्रि में ही (दस बजे के बाद) 11 दिन तक करें। प्रतिदिन जो भोग लगाएं रात में मूर्ति के सामने ही रहने दें एवं दूसरे प्रातः यह भोग हनुमान के भक्तों में वितरित कर दें तथा स्वयं भी ग्रहण करें। यह अनुष्ठान 11 दिनों का है। बारहवें दिन यंत्र को किसी हनुमान मंदिर में दक्षिणा सहित अर्पित कर दें। साधना काल में साधक पूर्ण ब्रह्मचर्य धर्म का पालन करें।

जीवन का सर्वश्रेष्ठ दान- 'ज्ञानदान'

ज्ञान दान को जीवन का सर्वश्रेष्ठ दान बताया गया है। 20 पूर्व प्रकाशित पत्रिकाएं प्राप्त कर मंदिरों में, अस्पतालों में, समारोहों में, मंगल कार्यों में, अपने मित्रों को, धार्मिक परिवारों को दान कर सकते हैं और इस प्रकार उनके जीवन को भी इस श्रेष्ठ ज्ञान के प्रकाश से आलोकित कर सकते हैं, जो अभी तक इससे वंचित हैं। इस क्रिया के माध्यम से अनेक मनुष्यों को साधनात्मक ज्ञान की शीतलता प्राप्त होगी और उनका जीवन एक श्रेष्ठ पथ पर अग्रसर हो सकेगा।

आप क्या करें?

आप केवल एक पत्र (संलग्न पोस्टकार्ड क्रमांक 3) भेज दें कि 'मैं यह अद्वितीय उपहार प्राप्त करना चाहता हूं एवं 20 पूर्व की पत्रिकाएं मंगाना चाहता हूं। आप निःशुल्क मंत्र सिद्ध प्राण प्रतिष्ठित 'हनुमान सिद्धि यंत्र' 390/- (20 पूर्व प्रकाशित पत्रिकाओं का शुल्क 300/- + डाक व्यय 90/-) की वी. पी. पी. से भिजवा दें। वी. पी. पी. आने पर मैं पोस्टमैन को धन राशि देकर छुड़ा लूँगा। वी. पी. पी. छूटने के बाद मुझे 20 पत्रिकाएं रजिस्टर्ड डाक द्वारा भेज दें, आपका पत्र आने पर हम 300/- + डाक व्यय 90/- = 390/- की वी. पी. पी. से मंत्र सिद्ध प्राण प्रतिष्ठित 'हनुमान सिद्धि यंत्र' भिजवा देंगे, जिससे कि आपको यह दुर्लभ उपहार सुरक्षित रूप से प्राप्त हो सके।

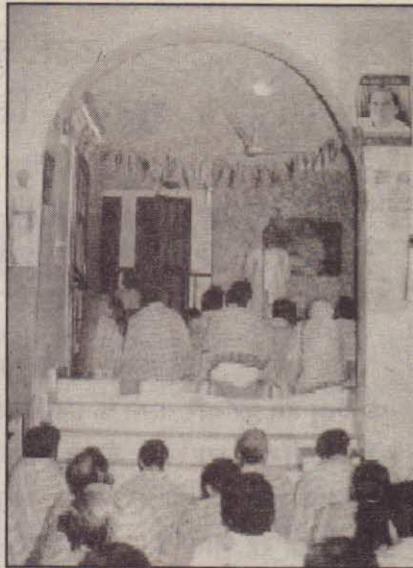
सम्पर्क - अपना पत्र जोधपुर के पते पर भेजे।

मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान, डॉ. श्रीमाली मार्ग, हाईकोर्ट कॉलोनी, जोधपुर - 342001, (राजस्थान)

फोन - 0291 - 2432209, 2433623 टेलीफैक्स - 0291 - 2432010

गुरुद्वारा दिल्ली

जिस भूमि पर ऐकड़े प्रयोग और असंख्य दीक्षाएं
समझ हो चुकी हैं, उस लिंग द्वैतव्य द्विष्ट भूमि
पर ये दिव्य साधनात्मक प्रयोग



शुक्रवार, 05-01-07

समस्त साधकों एवं शिष्यों के लिए यह योजना प्रारंभ हुई है। इसके अन्तर्गत विशेष दिवसों पर दिल्ली 'सिद्धार्थ' में पूज्य गुरुदेव के निर्देशन में ये साधनाएं पूर्ण विधि-विधान के साथ सम्पन्न कराई जाती हैं, जो कि उस दिन शाम 6 से 8 बजे के बीच सम्पन्न होती हैं। यदि श्रद्धा व विश्वास हो, तो उसी दिन से साधनाओं में सिद्धि का अनुभव भी होने लगता है।

इस प्रयोग को सम्पन्न करने के बाद उसके व्यक्तित्व में भौतिक एवं आध्यात्मिक दोनों तरह का परिवर्तन परिलक्षित होता है। वह धन धान्य, सुख-सौभाग्य से परिपूर्ण होकर श्रीवान और ऐवर्श्यवान बन जाता है। उसके जीवन का क्रम अपने-आप में अद्वितीय और परिमार्जित हो जाता है। इसके साथ ही साथ उसके शत्रु पक्ष का स्वतः ही शमन हो जाता है। आध्यात्मिक क्षेत्र में उसको दिव्य अनुभूतियां होने लगती हैं, तथा अनन्त सिद्धियां स्वतः ही उसके पास आ जाती हैं। साधक का तुतीय नेत्र खुल जाता है, वह 'त्रिकालदर्शी' बन जाता है, और तब वह किसी के भी भूत और भविष्य को देखकर उसके बारे में जान सकता है और यह उसके जीवन का सौभाग्यशाली क्षण होता है। यह ऐसा अद्वितीय एवं श्रेष्ठ प्रयोग है, जिसे गुरु के निर्देशन में अवश्य ही सम्पन्न करना चाहिए।

शनिवार, 06-01-07

पारद गणपति प्रयोग

धन की आकांक्षा, इच्छा किसे नहीं होती, चाहे वह गृहस्थ हो अथवा योगी यति हो, देवता हो अथवा दानव हो, सब महालक्ष्मी की साधना में तत्पर हो जाते हैं। लेकिन यह तथ्य जानना आवश्यक है कि महालक्ष्मी तभी सिद्ध होती है जब घर में गणपति की पूजा सम्पन्न की जाती है एवं स्मरण किया जाता है। लक्ष्मी का स्वरूप ऋद्धि-सिद्धि तो गणपति की भार्याएं हैं और शुभ-लाभ उनके पुत्र हैं, और विशेष बात यह है कि माहेश्वरी, गौरी, पार्वती उनकी माँ हैं तथा देवाधिदेव महादेव उनके पिता हैं। इन सब की आराधना-साधना गणपति पूजा से ही प्रलम्ब होती है तथा सिद्ध भी होती है। गुरु साधना में सकृतता भी गणपति पूजा से ही प्रारम्भ होती है।

रविवार, 07-01-07

कामाख्या तंत्र प्रयोग

कामाख्या तंत्र तो जीवन को पूर्णता देने का तंत्र है। जिस प्रकार कामाख्या देवी ही जीवन का सृजन करने वाली है और जीवन की प्रत्येक स्थिति में उनका ही वर्चस्व है, उसी प्रकार कामाख्या तंत्र भी जीवन की प्रत्येक स्थिति से सम्बन्ध रखता है। यह साधना वास्तव में तंत्र की एक सशक्त और प्रभावशाली साधना है जिसके द्वारा साधक को एक के बाद एक धन के स्रोत मिलने आरम्भ हो जाते हैं। यदि वह नौकरी पेशा है तो कोई सहयोगी मार्ग प्रकट हो जाता है या पैदृक धन आदि के द्वारा धन प्राप्ति का नया मार्ग खुलता है। व्यापारी है तो व्यापार में लाभ की स्थिति या नये व्यापार में लाभ की स्थिति बनती है या शेयर मार्केट में एकदम इतने अधिक मार्म या तो खुल जाते हैं या सूझने लगते हैं कि साधक हतप्रभ रह जाता है।

इन तीनों दिवसों पर साधना में भाग लेने वाले साधकों के लिए निम्न नियम मान्य होंगे

१. आप अपने किन्हीं दो मित्रों अथवा स्वजनों को (जो पत्रिका के सदस्य नहीं हैं) मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान पत्रिका का वार्षिक सदस्य बनाकर दिल्ली गुरुधाम में सम्पन्न होने वाले किसी एक प्रयोग में भाग ले सकते हैं। पत्रिका की सदस्यता का एक वर्षीय शुल्क रुपये 240/- है, परन्तु आपको मात्र रुपये 460/- ही जमा करना है। प्रयोग से सम्बन्धित विशेष मंत्र सिद्ध, प्राण प्रतिष्ठित सामग्री (यंत्र गुटिका, आदि) आपको नि:शुल्क प्रदान की जाएगी।

२. यदि आप पत्रिका सदस्य नहीं हैं, तो आप स्वयं तथा अपने किसी एक मित्र के लिए पत्रिका की वार्षिक सदस्यता प्राप्त कर उपरोक्त किसी साधना में भाग ले सकते हैं।

३. पत्रिका सदस्य बनाकर आप किसी एक परिवार को कृषि परम्परा की इस पावन साधनात्मक ज्ञान धारा से जोड़कर एक पुनीत एवं पुण्यदायी कार्य करते हैं। यदि आपके प्रयास से एक परिवार में अथवा कुछ प्राणियों में ईश्वरीय चिन्तन, साधनात्मक चिंतन आ पाता है, तो यह आपके जीवन की सफलता का ही प्रतीक है। उपरोक्त प्रयोग तो नि:शुल्क हैं और गुरु कृपा द्वारा ही वरदान स्वरूप साधक को प्राप्त होते हैं। प्रयोगों की न्यौछावर राशि को अर्थ के तराजू में नहीं तोल सकते।

गुरुधाम में दीक्षा व साधना का महत्व

शास्त्रों में वर्णन आता है, कि मंदिर में मंत्र जप किया जाए तो अति उत्तम होता है, उससे भी अधिक पुण्यदायी होता है यदि नदी के किनारे करें, उससे भी अधिक समुद्र तट, और उससे भी अधिक पर्वत में करें, तो और पर्वत में भी यदि हिमालय में किया जाए, तो और भी कई गुना श्रेष्ठ होता है। इन सबसे भी श्रेष्ठ होता है यदि साधक गुरु चरणों में बैठकर साधना सम्पन्न करे और यदि गुरुदेव अपने आश्रम अर्थात् गुरुधाम में ही यह साधना प्रदान करें, तो इससे बड़ा सौभाग्य और कुछ होता ही नहीं।

कुछ ऐसे स्थान होते हैं, जहां दिव्य शक्तियों का वास संदैव रहता ही है। जो सदगुरु होते हैं, वे सूक्ष्म रूप से अथवा सशरीर प्रतिपल अपने धाम में अवस्थित रहते हुए प्रत्येक गतिविधि का सूक्ष्म रूप से संचालन करते ही रहते हैं। इसलिए यदि शिष्य गुरुधाम में पहुंच कर गुरु से साधना, मंत्र एवं दीक्षा प्राप्त करता है और गुरु चरणों का स्पर्श कर उनकी आज्ञा से साधना प्रारम्भ करता है, तो उसके सौभाग्य से देवगण भी ईर्ष्या करते हैं।

तीर्थ स्थल पुण्यप्रद हैं पर शिष्य अथवा साधक के लिए सभी तीर्थों से भी पावन तीर्थ गुरुधाम होता है। जिस धाम में सदगुरुदेव का निवास स्थान रहा हो, ऐसे दिव्य स्थान पर गुरु चरणों में उपस्थित होकर गुरु मुख से मंत्र प्राप्त करने की इच्छा ही साधक में तब उत्पन्न होती है, जब उसके सत्कर्म जाग्रत होते हैं। इसी तथ्य को ध्यान में रखते हुए साधकों के लाभार्थ गुरुदेव की व्यस्तता के बावजूद भी दिल्ली गुरुधाम में तीन दिवसों में तीन साधनात्मक प्रयोगों की श्रृंखला निर्धारित की गई है।

योजना केवल इन 3 दिनों के लिये 05-06-07 जनवरी

किन्हीं पांच व्यक्तियों को वार्षिक सदस्य बनाकर उनका सदस्यता शुल्क $240 \times 5 = \text{Rs. } 1200/-$ जमाकरा के या उपरोक्त राशि का बैंक डाफ्ट मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान के नाम से बनाकर सदस्यों के डाक पते लिखवाकर उपहार स्वरूप ये दीक्षा आप निःशुल्क प्राप्त कर सकते हैं।

यदि दीक्षा फोटो द्वारा प्राप्त करना चाहें तो निर्धारित तिथियों के पूर्व ही अपना फोटो एवं पांच सदस्यों के सदस्यता शुल्क की राशि का ड्राफ्ट मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान के नाम से बनाकर दिल्ली कार्यालय के पते पर भेजें। आपका फोटो पांच सदस्यों के नाम पते एवं ड्राफ्ट हमें उपरोक्त तिथि से पूर्व ही प्राप्त हो जानी चाहिए। पत्र विलम्ब से मिलने पर दीक्षा संभव न हो सकेगी। यदि राशि मनीऑर्डर से भेजना चाहें तो फोटो एवं मनीऑर्डर जाथपुर कार्यालय भेजें।

शक्तिपात्र युक्त दीक्षा

त्रिपुर सुन्दरी दीक्षा

त्रिपुर सुन्दरी दीक्षा प्राप्त होने से आद्याराक्ति त्रिपुरा राक्ति रातीर की तीन प्रमुख नाड़ियां इड़ा, सुषुम्ना और

पिंगला जो मन बुद्धि और चित्त को नियंत्रित करती है, वह राक्ति जाग्रत होती है। भू भुवः स्वः: यह तीनों इसी महाराक्ति से उद्भूत हुए हैं, इसलिए इसे त्रिपुर सुन्दरी कहा जाता है। इस दीक्षा के माध्यम से जीवन में चारों पुरुषार्थों की प्राप्ति तो होती ही है, साथ ही साथ आद्यात्मिक जीवन में भी सम्पूर्णता प्राप्त होती है, कोई भी साधना हो, चाहे अप्सरा साधना हो, देवी साधना हो, रौव साधना हो, वैष्णव साधना हो, यदि उसमें सफलता नहीं मिल रही हो, तो उसको पूर्णता के साथ सिद्ध कराने में यह महाविद्या समर्थ है। यदि इस दीक्षा को पहले प्राप्त कर लिया जाये तो साधना में रीढ़ि सफलता मिलती है।

सम्पर्क: सिद्धाश्रम, 306, कोहाट एन्कलेव, पीतमपुरा, नई दिल्ली-34, फोन: 011-27352248, टेली फैक्स: 011-27356700.

Paarad Laxmi Sadhana

Rinn-rog-aadi Daaridrayam Paapam Cha Apmrityavah
Bhaya Shokamanastaapaa Nashyantu Mam Sarvadaa

O Goddess Mahalaxmi! Supreme Deity of wealth and prosperity! Bless me, so that I could lead a joyous, peaceful and comfortable life, free of paucity, poverty, problems, diseases and sins. Very few Yogis have been as dynamic and determined as sage Vishwamitra, and when Laxmi refused to manifest even after he had propitiated Her through the best of the traditional rituals he took a vow to force her to his presence.

"No more of praying!" he declared furiously and set about to create the most powerful Tantra-based ritual and its Mantra. And finally when he was ready he put it into practice and such was the vehemence packed into the incantation that Laxmi was compelled to appear! What more he made Her grant all his wishes and commanded Her to remain in his attendance lifelong.

The Goddess of riches has been worshipped in various ways and in ancient times the Yogis contemplated no less than 108 forms of Laxmi and performed their Sadhanas in order to achieve the highest level of affluence. And not just sages even divine personalities like Lord Ram and Krishna sought the divine grace of the goddess. Besides hundreds of other kings strengthened their kingdoms by seeking the divine help of the goddess through Sadhanas.

Importance of wealth is no less today. Rather it has become the most emphasised commodity what with the material desires becoming virtually unlimited. In ancient times prosperity might well have meant having enough to eat, a large house to live in and a good source of income, but in modern times the meaning of comfort and prosperity is much more diverse and it depends on how much one can spend. If you have enough then there is no end to what all luxuries you can buy.

Being rich is not a taboo but it does matter how you earn money. Illegal or immoral means, however discreet, may well fill your coffers but such stained money shall prey on your conscience, mental peace, social respect and standing. No doubt a human is easily lured towards such avenues for they seem to promise a lot without much efforts; however only a person who has such wealth can tell you what sort of hell he has to go through, for every moment there seems to be a fear of exposure lurking around.

So such means are out! Yet there are also hard working, sincere and honest people who are never able to make it big in spite of their best of efforts. After years of labour in a job or perseverance in trade, financial success looks like a distant dream. The frustration and sense of hopelessness that then

sets in tends to make one an easy prey to the lure of corruption.

If you find yourself in such a situation, if mounting debts are giving you sleepless nights, if your business is in doldrums, if money is the cause of your anxiety then this is the respite you have been waiting for. The following Paarad Laxmi Sadhana is the most explosive, quick acting ritual for windfall gains. A sage writes in an ancient text If an idol of Laxmi made of consecrated, solidified mercury alloyed with gold is established in the SE direction i.e. facing N. West and worshipped daily wealth starts to make inroads into one's life from various sources.

This form of the deity is called Paaradeshwari and she is the most benevolent among all 108 forms of the Goddess when it comes to showering wealth upon a Sadhak. In fact like Kalpvriksha (wish tree) she fulfils all the material wishes of a Sadhak.

Following boons sure accrue -

1. Financial crisis is overcome and sudden gains are made.
2. All problems in business or job are cleared. Promotion/ pay raise in job and unexpected profits in trade can be expected.
3. New sources of earning spring up.
4. Power, respect and fame in life.
5. A happy married life with all comforts.
6. Spiritual success.

For the ritual get up early in the morning on a Wednesday or Friday, take a bath and wear fresh clothes,

Sit facing East on a white mat. Light incense and a lamp. The idol of the Goddess (पारद लक्ष्मी) must be established as prescribed earlier. Next pick up a **Sfafik rosary** (स्फटिक माला) and chant five rounds of the following Mantra.

Om Ayeim Varad Paaradeshwari Mahaalakshmyei Namah

ॐ ए वरद पारदेश्वरी महालक्ष्मयै नमः

Do this regularly for 11 days. The ritual is free of any complex steps, for the Mantra and the deity are powerful enough to bring about the desired results. A text in fact states that just having a **Paaradeshwari Laxmi** and a Paarad Shivaling in one's home means lifelong prosperity and affluence. If possible continue chanting the Mantra just five times daily. After Sadhana permanently establish the idol in a sacred place at home or at your business centre.

Sadhana Articles : Paaraad Laxmi and Sfatik rosary :490/-
(Paarad Shivaling can be had separately for - Rs 300/-)

Indra Veibhav Prayog

It was poverty and abject impoverishment that greeted me as I entered into this world. With beautiful childish dreams floating before my eyes I would hope in my early years that it was just a temporary guest or intruder, but over the years this false hope slowly faded away as I reluctantly realised that impecuniousness was there to stay in our house.

Early morning each day my father would leave to toil day long and return with flour in the evening just enough to temporarily douse the roaring fire in our — my mother and three kids — guts. Mother too washed dishes for other households for titbits that would comprise our second meal.

As my perception towards life matured with age I often wondered if this was living. Attempts to seek some job would land me with nothing more than mean chores like car-washing or sweeping with no assurance of a payment. Most times blows and curses were all I got.

Then one day I realised I couldn't take any more of such life and one night in spite of the emotional bond of kinship tugging at my heart I stole away from home. At the station I boarded a train without bothering where it was bound for. As I sat in a compartment words drifting from the next cabin caught my attention. A hearty conversation was on between two passengers from which I realised that the train was bound for Jodhpur. The talk centred on a spiritual Guru, who as appeared from their words could solve any problem in a person's life.

For me this piece of information was like sun bursting out of dark clouds and I literally rushed to them to know more. The next morning when I landed at Jodhpur I made straight for the Guru's home. Once face to face with Gurudev Dr. Shrimali I found him to be a simple looking man robed in a spotless white Dhōti Kurta. It was my first meeting yet deep down I felt as if I knew him for ages.

Without hesitation I related my tale of woes to him. Having heard my part he kept silent for several moments and then said, "Stay here and work in the Ashram." I was delighted at the offer and within a few months I found myself settling down to the Ashram routine. However whenever I was alone I could not help worrying about my family.

Months flew by and one day I was summoned to Gurudev's presence. "Tell me about your family," he said. "Don't you remember them?" Before I knew it I was sobbing inconsolably. When I had regained my composure he said "I never believe in mincing words. To tell you the truth, son the future holds no promise of a better life for your family."

"But Gurudev all I ask for is two square meals for them," I

managed to blurt out, afraid I would burst into tears again. "You can do something, can't you?"

"Even luck can change," he said, "and the selfless way in which you have worked in the Ashram won't go waste. For your efforts I am now revealing an important Sadhana to you. At the Ashram itself I accomplished the Sadhana and no sooner was it over than Gurudev bid me adieu. I was not certain where to go and headed for the station. There I ran into a family which too was returning home after a visit to Gurudev's place. Their luggage was bulky and I offered to help. "Why did you leave the Ashram," asked the head of the family when we had settled down in a compartment.

"Gurudev now wants me to work outside. I don't know what to do ?"

"Would you like to accompany me?" he said taking me unawares. "I have a large business and could do with an honest hand."

It was all happening due to Gurudev's grace. Their's was a real rich family. I joined their business and devoted my free time to educating myself. Much pleased with my honesty and dedication the rich man later helped me start a garment shop of my own and within a few years I had all one could dream of. Then came the day when I invited my family from back home to come and live with me. They had given me up for dead and their joy knew no bounds on seeing me not just alive but rich and prospering.

More than my honesty or dedication I know it is due to Gurudev's blessings and power of the Indra Veibhav Sadhana that I live in such affluence today.

One needs **Indra Veibhav Yantra** (इन्द्र वैभव यंत्र) and **21 Indrabhs** (२१ इन्द्राभ) for the ritual. It can be done on **13th day of any fortnight of the lunar month**. Early morning at 6 am have a bath and sit on a yellow mat facing South. Cover a wooden seat with a pink cloth. On it draw a pot/tumbler with vermillion. On this place the Yantra and offer on it rice grains, vermillion, flowers, incense and ghee lamp. Next without keeping a count chant thus for 60 minutes.

Om Shriyam Shreem Vibhootyam Shreem Vei Namah

ॐ श्रीयं श्री विभूत्यं श्री वै नमः

Next offer five red roses on the Yantra each time chanting the Mantra. Repeat this Sadhana after a fortnight. On the second fortnight light a holy fire and make oblations of 21 Indrabhs each time chanting the Mantra. After the ashes have cooled down tie them and the Yantra in the pink cloth and throw the bundle in a river.

Sadhana Articles : 330/-

16-17 दिसम्बर 2006

शिव शति साधना शिविर, उल्लासनगर

शिविर स्थल: मिड टाउन, रोटरी पार्क, गोल मैदान,
उल्लास नगर - 2 (ठाणे), महाराष्ट्र

आयोजक: शीतल महाराज - 0251-2583115 ○ डॉ. नरेन्द्र आर.
 पाठक - 094233-69984 ○ पोपट राव चौहान - 094220-78089
 ○ एस.के.मालवीय - 094230-87589 ○ राजा चैनानी - 0251-
 2585813 ○ विनोद निहालानी - 093260-31296 ○ आश्विन
 वासवानी - 098224-42345 ○ कृष्ण मुरारी राय ○ देव सरन
 सिंह - 0251-2702735 ○ बसंत ठोसर - 093247-93403
 ○ सदाशिव गोपाल टैबे - 0251-2536158 ○ बुद्धिराम पांडेय -
 098190-00414 ○

24-25 दिसेंबर 2006

दय महालिंगा आश्वासि तिर

त्रीवल्लाम्

शिविर स्थलः डी.ए.वी कॉलेज ग्राउण्ड,
तीतलागढ़, उड़ीसा

आयोजक: सदानंद पाढा - 094371-58514 ○ मनोज पात्रा -
094371-66775 ○ पी.के.पट्टनायक ○ डॉ. सत्यवादी भंजदेव -
094373-58366 ○ प्रमोद कुमार दास - 094373-12225 ○ रामपाल
सेनापति - 094370-60796 ○ सुभरांषुदास - 094371-46388
○ शिवनारायण अग्रवाल - 094373-66634 ○ अचियोता घोषी -
094374-20052 ○ विजय कुमार दास - 064373-12226 ○ गंगाधर
महापात्रा - 094370-47584 ○ भीमसेन बेहरा - 094374-
87391 ○ वासुदेव - 094377-08021 ○ सुजान दास - 099374-
86086 ○ अरविन्द - 094370-51506 ○ अरुण मिश्रा - 099371-
03692 ○ भूपेन्द्र कुमार दास - 094370-51400 ○ प्रकाश कुमार
नायक - 094371-59014 ○ प्रह्लाद दर्जी - 098610-94673
○ मुकेश अग्रवाल - 094371-54776 ○ पी.के.सामन्तराय -
094371-84122 ○ विश्वनाथ राय - 094373-06740 ○ राजेश कुमार
राउत - 094370-97577 ○ धरणीधर दास - 094372-61997 ○ रवि
पट्टनायक - 094372-40599 ○ नरेश बेहरा - 06655-221061 ○ डॉ.
विजय - 099377-10490 ○ विकास - 094372-24003 ○ प्रदीप -
094371-54956 ○ मनोज महानंते - 099375-47055 ○ हलाधर साहू
- 099375-68763 ○ आभास कुड़ो - 06655-220584 ○ भजन लाल
जैन - 094373-29396 ○ श्रीमति विजय माला - 06655-220473
○ मोहनलाल - 094370-83282 ○ जदुमनी दास - 099373-30248
○ ललित परमार - 094371-21270 ○ इन्द्रजीत सिंह - 094371-

26545 ○ नरेश कुमार मिश्रा - 093373-11175 ○ अभिजीत
 मजूमदार - 099374-77497 ○ भिनकेतन दास - 06645-274187
○ श्रवण स्वेन - 06682-239055 ○ हनुमान ○ आर. के. महापात्रे
○ ललित प्रधान - 099371-67177 ○ निरंजन - 098611-16000
○ सपन ○ दौलतराम ○ गिरधारी लाल - 094371-30084 ○
 सनन्दा - 094371-45983 ○ के. के. तिवारी - 098279-55731 ○
 ☆☆ ☆☆ ☆ ☆☆☆ ☆☆☆ ☆☆ ☆☆☆

नववर्ष 6-7 जनवरी 2007

नवसिंहि आत्मजागरण महाभिषेक

दीक्षा एवं साधना शिविर, दिल्ली

શેવિર સ્થળ : આરોગ્યધામ, ગુજરાત અપાર્ટમેન્ટ કે

जाने 4/5, पातमपुरा, नई दिल्ली

A decorative horizontal line consisting of a series of diamond shapes of varying sizes, centered horizontally across the page.

महाराजा अंकोली शिल्पी

शिविर स्थलः रैल्टे फटबाल ग्रामपाल शब्दबाल

आयोजक: धनबाद: राजेन्द्र सिंह - 094314-53725 ○ यू.पी.सिंह
 - 094313-14337 ○ पी.आर.ता. - 094317-30663 ○ पी.एन.सिंह
 ○ दुर्गेश प्रसाद - 099341-97474 ○ बी.के.श्रीवास्तव - 094313-
 76015 ○ के.एन.शुक्ला - 094317-90651 ○ आर.ए.प्रसाद -
 094314-49561 ○ एस.बी.पांडे ○ डॉ.एस.पी.रौय ○ गोविन्द
 प्रसाद खरवार ○ बबलू सिंह - 94311-22079 ○ प्रणय कुमार
 सिंह - 094311-25825 ○ सोमनाथ बनर्जी - 094313-75534
 ○ अंजनी चौधरी ○ गोविन्द पाठक ○ अरुण कुमार सिंह -
 094317-31522 ○

A decorative horizontal border consisting of a repeating pattern of diamond-shaped symbols, likely representing a file or folder icon.

20-21 जनवरी 2007

शिव शति महालक्ष्मी साधना

दस महाविद्या शिविर, बैंगलोर

शिविर स्थल : बी. ई. एम. एल कला मन्दिर, न्यू
तिपस्सन्दरा, बैंगलोर - 37

आयोजक: बैंगलोर: चन्द्र दामोदरण - 098450-41395 ○ विक्रम
कोरडे - 094488-42126 ○ जनार्दन रेडी - 093426-59091
○ सरवाणा कुमार - 080-23589662 ○ संतोष कुमार - 098860-
21610 ○ विकास छिवेदी - 099802-28388 ○ पंकज मिश्रा -
098866-87633 ○ एस.एस.राय - 080-65960157 ○ पंकज मिश्रा
- 098866-87633 ○ त्रिमलेश सबद्धमण्यम○ देवजानी

महाजी ○ बेल्लारी: योगेश शंकरमठ - 98457-62547 ○ राधवेन्द्र सन्थील - 094483-68267 ○ शरथ कुमार - 098863-21517
○ नवीन चंद्रा - 098456-80609 ○ देवाजानी माजी - 098801-9109 ○ मुकुंद रेण्ही - 093438-27572 ○ मंजुला रेण्ही - 093430-37310 ○ रागवेन्द्र - 099866-21889 ○ सुधाकर राव - 098808-79722 ○ मल्लिकार्जुन - 083922-58626 ○ शिमोगा: सत्य नारायणा - 098448-14288 ○ लता विजय कुमार - 098448-14287 ○ पट्टना : डॉ. बी. के. आर्या - 092348-88896 ○ चेन्नई: गणेश मंतीवानन - 098455-48869 ○ बालाजी श्रीनिवासन - 099001-57204 ○ बालविश्वनाथ - 098407-97723 ○ बालाजी रंगनाथन - 099401-49090 ○ श्रीराम - 098408-91099 ○ संतोष जयरामन - 099454-88011 ○

◆◆ ◆◆ ◆ ◆◆ ◆◆ ◆ ◆◆ ◆◆ ◆◆

27-28 जनवरी 2007

गुरु हृदयरथ धारण

साधना शिविर, विदर्भ

शिविर स्थल : बालाजी सौजायटी ग्राउंड, मंगुष्ठा मंगल कार्यालय के सामने, यवतमाल (विदर्भ)
आयोजक: श्रीकांत चौधरी - 098227-28916 ○ विनायक निवल - 092264-87229 ○ राजेश मैदमवार - 094231-32621 ○ संतीष राऊत - 094228-92651 ○ बाबूभाई अटारा - 098222-31445
○ शिवनारायण राऊत - 094229-21521 ○ सेनापती मोने - 07232-251257 ○ गिरीश जतकर - 098223-63140 ○ महेन्द्र महाजन - 07232-246981 ○ गजू. सोनकुसरे - 093726-10720
○ अजय गवंडे - 098225-93958 ○ किशोर पाठक ○ वंजारी ओलिलित इन्ड्रे - 094221-04647 ○ हरिश भाई विष्णुलाली ○ विजू गंडेचा ○ मनोहर वारापात्रे ○ सुशिल नरोले ○ बसंत फुंडे ○ डॉ. अविनाश जोशी ○ नितीन गिरी ○ राजाभाऊ पांढारकर ○ गोविन्द उजवणे ○ प्रवीण गायकवाड ○ नरेंश उके ○ नंदकिशोर भागवत ○ रमाकांत सुलभेवार ○ जयेंत खेरडे ○ राजेन्द्र कोंबे ○ विनायक चव्हाण ○ अरुण चव्हाण ○ अरुण हांडे ○ शाम भाविक ○ सुबोध राय ○ आनंदराव तोंडरे ○ अरुण मानेकर ○ मुन्ना तिवारी ○ विजय अवधुतकर ○ सुशिल ठाकरे ○ माधवराव डुमरे ○ बालासाहेब रोहणकर ○ प्रमोद मुळे ○ सुभाष अजमिरे ○ मनोहर गुलहाणे ○ रमेश टाटाजी ○ विनोद कोथळे ○ संजय बुराडे ○ संजय खडसन ○ आशीष पाचपोरे ○ नारायण देमनगुंडे ○ अजाबराव सलामे ○ अर्जुन जिवलाणी ○ बाबूसेठ चुघाणी ○ विनोद राऊत ○ पुरुषोत्तम गुलवाड ○ गजानन जाधव ○ सुभाष कंचलवार ○ निशांत गौरकार ○ प्रभाकरराव मालोकर ○ शंकरराव पजगाडे

○ बालासाहेब शिंदे ○ शशिकांत चौधरी ○ शिरीष सरताबे ○ दिपक येंडे ○ बापूराव जी पजगाडे ○ एल. बी. यादव ○ सुधाकर पजगाडे ○ विवेक वाईकर ○ रविन्द्र वरमे ○ विलास मेश्राम ○ रमेशराव गावंडे ○ हरिष राठोड ○ कैलाश राठोड ○ राजाभाऊ राऊत ○ हेमन्त पाठक ○ अँड बैसानी ○ महेश जोशी ○ राजू गहलोत ○ शिरभाते सर ○ राजकुमार राठी ○ संजय माळकर ○ गजानन गोल्हर ○ विनोद कापसे ○ बालासाहेब जोलहे ○ चांदोरे बंधु ○ दारब्हा: अँड, रविन्द्र जाधव ○ अँड संजय काळे ○ सोमेश्वरभाऊ ○ संजय काळे ○ उमेश बागल ○ संजय गायकवाड ○ किशोर पजगाडे ○ रविन्द्र ठाकरे ○ मुलचंदजी गुसा ○ अमरावती: सतीश भिवागडे ○ साहेबराव बांते ○ अँड मेहरे ○ व्ही. एन. ठाकरे ○ परतवाडा: गोपाल पवार ○ दिलीप जोगळेकर ○ नागपुर: किशोर सिंह बैस ○ निवृत्ति निनावे ○ भंडारा: कमलाकर साठवणे ○ प्रशांत परसोळकर ○ कन्हान: भाऊरावजी ठाकरे ○ ब्रह्मपुरी: सुधीर सेलोकार - 094221-53499 ○ गडचिरोली: नरु सोरपे ○ अशोक लडके ○ अरविंद कोडापे ○ प्रदीप चौधरी ○ हर्षवर्धन ○ दिपक रामने ○ आरमोरी: कुंभारे गुरुजी ○ आनंद हेमके ○ शेंडे साहेब ○ संजय बिडवाईक ○ गोदिया: रविन्द्र भोंगाडे ○ वर्धा: जगानन ठाकरे ○ संजय उमाडे ○ सेलू: जितेश देवतारे ○ पुलगांव: शिवा गव्हाणे ○ घुण्घुस: वासुदेव ठाकरे ○

◆◆ ◆◆ ◆ ◆◆ ◆◆ ◆ ◆◆ ◆◆ ◆◆

04 फरवरी 2007

भीमां काली साधना शिविर, मण्डी

शिविर स्थल: भीमां काली मन्दिर,

भयूली मण्डी, (हि.प्र.)

आयोजक: मण्डी: शैली - 093188-07770/98170-25025 ○ महेन्द्र ठाकर - 094180-43420 ○ जीवन - 094183-00217 ○ लतेश महेन्द्रसु - 098166-82697 ○ रोशन लाल - 01905-237849 ○ अशोक बन्टा ○ सुन्दरनगर: बंशी राम ठाकर - 01907-242544 ○ रविन्द्र नाथ - 098161-54123 ○ खुबराम् गुसा - 098161-50014 ○ बल्ह: श्याम लाल - 098170-42859 ○ सकराधाट: रोशन लाल - 01905-250877 ○ करसोग: महिन्द्र कुमार - 098184-99160 ○ जोगिन्द्र नगर: सुदेश कुमार - 01908-266213 ○ शिमला: सुबेग सिंह - 0177-2831025 ○ अशोक शर्मा - 094181-20691 ○ टी.आर. कौण्डल - 0177-2623318 ○ चम्बा: अमरीक सिंह - 094182-21352 ○ पंकज - 098166-42842 ○ मनीश शर्मा - 094181-01341 ○ ऊना: हैप्पी - 094183-50285 ○ नितिन - 094183-71363 ○ प्रदीप राणा - 094174-09582

○कांगड़ा: संजीव - 098161-17888 ○धर्मशाला: आर.एस.
 वथवार - 094180-88358 ○ललित - 094180-86082 ○पालमपुर:
 आर.एस. मिन्हास - 094181-61585 ○नगरोटा सुरियां: ओम
 प्रकाश - 094182-50674 ○कुशल सिंह - 098160-02184, ○नूरपुर
 पीताम्बर - 01893-250312 ○ज्वाली चमन लाल - 094180-
 40507 ○सोलन: गौरव मेहता - 098163-45239 ○दिवान चन्द
 - 01792-240061 ○प्रदीप सिंह - 01792-273145 ○कुल्लू: बुद्धि
 प्रकाश - 01902-222646 P.P. ○हमीरपुर: राजेन्द्र शर्मा - 094181-
 03439 ○गगन प्रांसर - 094184-25421 ○बिलासपुर: जीवन
 लता - 094180-46965 ○रत्न लाल - 01978-224816 ○चैन
 लाल - 01978-243244 ○घुमारवी: ज्ञान चन्द्र रत्न - 094180-
 90783 ○जगर नाथ नड़ा - 094182-55835 ○के.डी. शर्मा -
 094180-65655 ○राजेश - 093187-85988 ○हेमलता - 094181-
 63194 ○शिव कुमार - 094181-14916 ○संतोषी - 098171-
 69978 ○सिरी राम - 098164-91011 ○रविन्द्र - 098160-60145
 ○बरठी: प्रकाशो - 094180-84207○
 ♦♦ ♦♦ ♦ ♦♦ ♦♦ ♦ ♦♦ ♦♦

10-11 फरवरी 2007

त्रि-शति जगदम्बा साधना शिविर,

कटरा

शिविर स्थल : राजकीय हायर सैकेण्डरी उच्च
विद्यालय, कटरा (जम्मू)

आयोजक: कृष्ण लाल शर्मा ○वंदना कुमारी कौल - 094192-
 41849 ○मनीष शर्मा - 094191-14976 ○पी.एस.चौधरी -
 094191-64188 ○विमल गुसा/सुरेश कुमार - 094198-50002
 ○नीरज वर्मा - 094197-00940 ○सुशील कुमार नगयाल -
 094191-38030 ○विनोद जुरशी - 094191-32861 ○सपानन्द -
 094192-08607 ○सत्यपाल कठुआ ○ज्ञान चन्द्र शर्मा ○राजेश
 चन्द्र - 094193-17500 ○श्रीमती नीलम जन्वाल ○ब्रिज मोहन
 शर्मा ○ओम प्रकाश वर्मा ○मंजुल राजयादा - 094192-13141
 ○राजेश कुमार - 094191-89596 ○डॉ. रवि कुमार गुसा ○विनय
 कुमार दत ○राकेश वर्मा ○पं.विजय कुमार शर्मा - 094192-
 79783 ○सुरेन्द्र कुमार शर्मा ○सुरेश बनाज ○अजय कुमार
 ○
 ♦♦ ♦♦ ♦ ♦♦ ♦♦ ♦♦ ♦♦

14-15-16 फरवरी 2007

महाशिवरात्रि साधना शिविर,

अमरकंटक

शिविर स्थल : हेलीपेड ब्राउण्ड, अमरकंटक

● "दिल्ली" 2006 मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान '86' ●

अनूपपुर, मह्या प्रदेश
 आयोजक: रायपुर: आर.सी.सिंह - 094153-43066 ○दिनेश
 सैनी - 0771-2241314/094252-11588 ○के.के.तिवारी - 098279-
 55731 ○गंगाराम साहू - 07701-260190 ○बिलासपुर: लोकेश
 राठौड़ - 093003-21783 ○राजनगर: के.के.चन्द्रा - 093931-
 27059 ○देवेन्द्र यादव - 093295-16810 ○अवध नारायण यादव
 - 07658-267217 ○रामकुमार देवांगन - 267836 ○बल्लभदास
 बहेती - 093294-75521 ○रामनगर: अनुज पाण्डेय - 267273
○रामजी लाला कुंभकार - 093298-83058 ○नकुल तिवारी -
 093012-8736 ○खेंगापारी: मंगलू धीवर - 07771-268659
○रामसेवक कुशवाहा ○रामजतन शर्मा ○रामप्रसाद नारंग
○तेजबहादुर ○अनंतराम नामदेव ○जोगिन्दर प्रसाद -
 098278-92881 ○बिजूरी: बी.के.गोस्वामी - 07658-2648422
○दिलबहार सिंह ○राजभान सिंह - 264921 ○रमेश अग्रवाल
 - 093294-15573 ○सी.पी.श्रीवास्तव - 264098 ○राजभान यादव
○गोपाल सिंह - 264852 ○रामनरेश गौतम - 093294-10840
○सुन्दर सिंह ○जे.एन.सिंह ○अशोक वर्मा - 093031-36183
○के.एल.पाटिल - 093297-39495 ○कटनी: एस.पी.सिंह -
 098273-36670 ○जगदीश गुसा - 07622-240413 ○बद्री
 जायसवाल - 227380 ○सुशील विश्वकर्मा ○विष्णु प्रसाद
 विश्वकर्मा ○डॉ. छत्रपाल सिंह ○गोविन्द गुसा ○दुलारे सिंह
○विष्णु कुशवाहा ○चन्द्रपुर: ए.पी.गर्ग - 093296-83001
○मनेन्द्रगढ़: सुरेश अग्रवाल - 094252-55043 ○प्रदीप अग्रवाल
 - 093294-03738 ○गंगा यादव - 07771-241397 ○कोतमा/
 जमुना: अवधेश खरे - 093016-75145 ○रमेश राठौर - 099346-
 61195 ○संजीव गौतम - 099933-12213 ○हनुमान प्रसाद गर्ग
 - 07658-233783 ○पत्रा: सुनील खरे ○अनूपपुर: कौशिक
 श्रीवास्तव - 07652-240897 ○विजय पटेल - 098939-58847
○अमलाई: तीरथ प्रसाद तिवारी (भोले) - 07652-286350
○चचाई: संजय कुमार द्विवेदी - 099932-10634 ○राजू गुसा -
 093002-40039 ○पेण्ड्रा: एस.डी.नामदेव - 07751-250276
○बुढार: डॉ. चितरंजन डेकाटे ○शहडोल: महेन्द्र वर्मा
○उमाकांत वर्मा - 093298-43290 ○उमरिया: कन्हैया लाल
 रजक ○विनोद कुमार वर्मा - 094251-83737 ○रसमोहनी:
 डॉ.सूरज सोनी ○कमलेश बडेरिया ○याली: अशोक तिवारी
 - 094258-39743 ○राजेश सेठ - 093295-01500 ○डिंडोरी: राजेन्द्र
 उपाध्याय - 234675 ○लक्ष्मण प्रसाद - 07644-269407
○मंडला: सी.एस. सिंह ○जबलपुर: सूर्यकान्त मिश्रा ○रीवा:
 राजबहादुर सिंह - 094250-44522 ○
 ♦♦ ♦♦ ♦ ♦♦ ♦♦ ♦♦ ♦♦

ॐ अद्योरेभ्योरथ द्योरेभ्यो द्योरद्योरतरेभ्यः। सर्वेभ्यः सर्वशर्वेभ्यो नमस्तेऽस्तु लद्रस्तेभ्यः॥

किसी भी प्रकार का दोष हो, इस अघोर मंत्र का ज्यारह बार उच्चारण करने से दूर हो जाता है। अब आत्मशक्ति हेतु भगवान शिव का स्मरण करते हुए पांच बार तत्पुरुष मंत्र का उच्चारण करें और माला पर कुंकुम चढ़ायें -

ॐ तत्पुरुषाद्य विदमहे महादेवाद्य थीमहि तद्वरे लद्रः प्रचोदयात्॥

अब सिद्धि माला के सर्वाधिक महत्वपूर्ण ईशान मंत्र का जप 108 बार करना चाहिए -

ॐ ईशानः सर्वविद्यानामीश्वरः सर्वभूतानां ब्रह्मादिपतिर्ब्रह्मणोऽधिपतिर्ब्रह्मा शिवो मे अस्तु सदाशिवोऽम्॥

अपने इष्ट देव का ध्यान करते हुए माला का पूजन कर इष्ट मंत्र का जप करें और प्रार्थना करें -

माले माले महामाले सर्वतत्त्व स्वरूपिणि। चतुर्वर्गस्त्वयि न्यस्तस्तस्मान्मे सिद्धिदा भव॥

माला में सम्पूर्ण रूप से शक्ति तत्त्व विद्यमान है और इसे जाग्रत करने हेतु लाल रंग के पुष्ठों से पूजा करते हुए 108 बार विजयप्रद आकर्षक मंत्र का जप करें -

॥३५ ऐं श्रीं अक्षमालार्यै नमः॥

इस प्रकार पूजा सम्पन्न कर माला को उठा कर अपने मस्तक से तथा नेत्रों से लगायें तथा प्रार्थना करें कि -

ॐ त्वं माले सर्वदेवानां सर्वसिद्धिप्रदा मत्ता। तेन सत्येन मे सिद्धिं देहि मरतर्नतोऽस्तुते॥

जब भी कोई विशेष कार्य हेतु जाना हो, तो ऊपर लिखी प्रार्थना बोल कर माला धारण कर लें, कार्य निश्चय ही सिद्ध होता है, इस विशेष माला को हमेशा धारण न करें, यह हाथ से गिरनी नहीं चाहिए, यदि इसका सूत पुराना हो जाय तो माला मंत्र का जप करते हुए पुनः गंथ दें।

मणिमाला के लाभः

- * इस विजय माला का महत्व इतना अधिक है कि शक्ति का कोई भी अनुष्ठान इस माला से मंत्र जप करते हुए किया जाय, तो वह साधना अवश्य ही पूर्ण होती है।
- * शरीर में कोई व्याधि हो, तो इसे धारण करने से वह पीड़ा जड़-मूल से ही समाप्त हो जाती है।
- * यदि विद्यार्थी इस माला को धारण करें और इस माला से “सरस्वती मंत्र” का जप करें, तो विद्या में पूर्ण सफलता प्राप्त होती है।
- * वशीकरण हेतु, किसी को अपने आकर्षण में बांधने हेतु इस माला का प्रभाव सर्व सिद्ध है, गले में यह माला धारण कर अनजान व्यक्ति के सामने चले जायें, तो वह आपके अनुकूल हो जाता है।
- * यदि कोई कन्या इस माला से “शिव गौरी मंत्र” का जप करती है तो छः महीने के भीतर-भीतर विवाह का योग बन जाता है और इच्छित वर की प्राप्ति होती है।
- * यह माला “अनंग साधना”, अनंग शक्ति का सम्पूर्ण स्वरूप है, इसे धारण करने से बल, वीर्य, तेज की वृद्धि होती है।

यह मणिमाला केवल पत्रिका पाठकों को ही प्रदान की जाएगी। इस हेतु आप पत्रिका में प्रकाशित पोस्टकार्ड नं. 2 स्पष्ट अक्षरों में भरकर हमारे पास भेज दें। यथा शीघ्र आपको वी.पी.पी. से मणिमाला भेज दी जाएगी।

मणिमाला - 300/- (डाक व्यय सहित)

आप साधक है शिष्य है और किसी व्यक्ति विशेष को जोड़ना चाहते हैं अथवा उसे विशिष्ट उपहार प्रदान करना चाहते हैं तो यह मणिमाला उपहार स्वरूप दें, उसके व्यक्तित्व का रुझान साधनात्मक हो जायेगा।



मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान, डॉ. श्रीमाली मार्ग, छाईकोट, कॉलोनी, जोधपुर (राज.)

फोन : 0291-2432209, फैक्स : 0291-2432010



COLLECTION OF VARIOUS

- HINDUISM SCRIPTURES
- HINDU COMICS
- AYURVEDA
- MAGZINES

FIND ALL AT [HTTPS://DSC.GG/DHARMA](https://dsc.gg/dharma)

Made with



By

Avinash/Shashi

[creator of
hinduism
server]

रजिस्ट्रेशन नं- 35305/81

A.H.I.V

With Registrar Newspapers of India
Posting Date 06-07 every Month

Postal No. RJ/WR/19/65/2006-08
Licence to post Without pre payment
Licence No. RJ/WR/PP04/2006-08

माह : जनवरी में दीक्षा के लिए निर्धारित विषेष दिवस

पूज्य गुरुदेव निम्न दिवसों पर
साधकों से मिलेंगे व दीक्षा प्रदान करेंगे।
इच्छुक साधक निर्धारित दिवसों पर पहुंच कर
दीक्षा प्राप्त कर सकते हैं। निर्धारित दिवसों पर
यह दीक्षाएं प्रातः 10 से 1 बजे के मध्य तथा
सायं 5 बजे से 7.30 बजे के मध्य प्रदान की जाएंगी।

स्थान
गुरुधाम (जोधपुर)

दिनांक
23-24-25 जनवरी

स्थान
सिद्धाश्रम (दिल्ली)

दिनांक
05-06-07 जनवरी

वर्ष - 26

अंक - 12

मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान डॉ. श्रीमालीमार्ग हाइकोर्ट कॉलोनी, जोधपुर-342001 राज. फोन : 0291-2432209, 2433623, टेलीफैक्स-0291-2432010
सिद्धाश्रम 306, कोहाट एन्कलेव पीतमपुरा, नई दिल्ली-34, फोन : 011-27352248, टेली फैक्स 11-27356700